तेज पाक्षिक, अंक : ७ वर्ष : १९ १-१५ अप्रैल १९८३
दीवाना
मूर्ख अंक
फिल्म पैरोडी
यह तो दीवाना हो गया
2.50
अन्दर पढ़िये :–
*फैशन है जरूरी *सिलबिल पिलपिल
* राजवंश का नया उपन्यास - घर
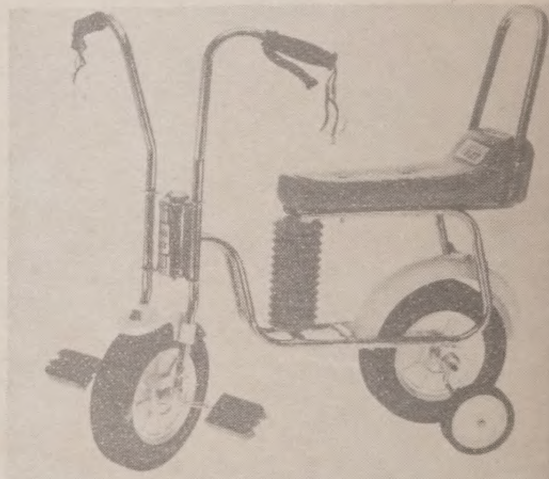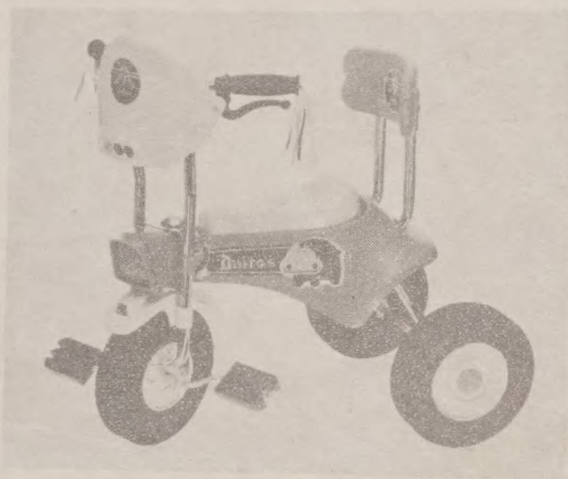
83

के विचित्र इंसान!

क : ए. एच. हाशमी

मूल्य : 10/-
डाकखर्च :3/-

के 108 पृष्ठ

की झलक :

ड़े हुए स्यामी भाई चांग और
र कहां पैदा हुए?
ी हुई बहनें कलाकार कैसे बनीं?
स्म की दो जुड़वां लड़कियां
क मूल्यवान क्यों थीं?
ला अजूबा बच्चा कैसा था?
धक परन्तु दो से कम?
ीब होते हैं दैत्याकार इंसान?
कहां पैदा हुए और कैसा होता है
र?
और बाजुओं के लोग कहां पैदा
ातिभा इन्हें विरासत में मिली
लता ने इनके चरण चूमे?
ाला व्यक्ति कैसे चलता था?
यक्ति आधे टन का था?
ौरत सेलेस्टा गेयर का शरीर
 था?
ेत इंसानी ककांल?
ल का लड़का कहां पैदा हुआ?
शेर की शक्ल का आदमी था?
ौर बाल ही बाल वाली औरतें
ा मेढक बच्चा है?
ी शक्ल की औरत कहां हुई?
दसूरत औरत की कहानी?
ी न पुरुष हैं और न ही औरत?
सूरज से क्यों डरते हैं?

**ा अन्यान्य विचित्र इन्सानों
ोरंजक जानकारी जैसे—वे
, कैसे रहते थे, क्या खाते
करते थे, जीवन में सफलता
ही, समाज का इनके प्रति
ो कब मरे आदि ढेरों बातें!
की जीवनी चित्रों सहित**

हम जीव-जन्तुओं की कहानी हमारी जबानी

- हम किस जात बिरादरी के हैं?
- हमारी दिनचर्या क्या है?
- हम क्या खाते-पीते हैं?
- हमारी उम्र क्या है?
- हम कहां और कैसे रहते हैं?
- मनुष्य हमारा दुश्मन है या दोस्त?
- हमारे सुख-दुःख क्या-क्या हैं?
- हमारा चलना, उठना, दौड़ना, बैठना, उड़ना कैसा है?

....तथा हमारे बारे में अन्यान्य ढेरों जानकारियों के लिये प्रस्तुत है—हमारी आत्मकथा— हम जीव-जन्तु

जीव-जन्तुओं के विशाल संसार के 50 सदस्यों की आत्मकथा

पेशकर्ता-रवि लायट् **भूमिका**-रमेश बेदी

मूल्य 12/-

बड़े साइज़ के 116 पृष्ठ

हम कुछेक के बारे में कुछेक जानकारी

'मेरी आँखों से आँखें न मिलाना, क्योंकि इन आँखों का कोई जवाब नहीं। मेरी दोनों आँखें एक दूसरे से अलग बिल्कुल स्वतंत्र कार्य करती हैं। पानी में तैरते हुए एक अगर सतह के ऊपर देख रही है तो दूसरी नीचे।' —समुद्री घोड़ा

'भूखा रहने में मैं अपनी मिसाल आप हूँ। दुनिया का कोई भी जीवधारी इस क्षेत्र में मेरी बराबरी नहीं कर सकता। किसमें दम है जो चार महीने तक बिना कुछ खाये रह जाये।' —पेन्गुइन

'मेरी कर्मठता का अन्दाजा तुम इसी से लगा लो कि 450 ग्राम शहद एकत्र करने में मुझे छत्ते से फूलों तक 40,000 से 80,000 फेरी लगानी पड़ती हैं जबकि प्रति फेरी एक या डेढ़ मील की पड़ती है।' —मधुमक्खी

'शिकार अधिकतर मेरी मादा ही करती है पर ये शिकार सबसे पहले रखा जाता है मेरे सामने ही। मेरे बाद खाती है वह स्वयं और अंत में बच्चे। इसे कहते हैं अनुशासन, जो हमेशा घर से शुरू होता है और तब चल पाता है शासन।' —बब्बर शेर

'लकड़ी खा लेना जितना आसान है उसके सेल्यूलोज को पचा पाना उतना ही मुश्किल और इस मुश्किल को दूर करने में सहायता करने हैं मेरी ही आँतों में रहने बसने वाले बहुत सूक्ष्म एक कोशीय जीव 'प्रोटोजोआन्स' जिनके बिना मेरा जीवन ही संभव नहीं होता।' —दीमक

101 मैजिक ट्रिक्स

लेखक—आइवर यूशिएल

मूल्य : 15/-
डाकखर्च :3/-

बड़े साइज़ के 120 पृष्ठ

मनोरंजक ट्रिक्स में से कुछ :

□ चुम्बकीय हाथ □ स्वयं उछलने वाला हैट □ टूटी माला फिर तैयार □ छोटे से बटुवे में बड़ी-सी छड़ी □ जादुई कैंची □ 'एक्स-रे'—कागज में लिपटी पेंसिल का □ अंगुलियां देखती भी हैं □ निशान—शुगर-क्यूब से हथेली पर □ आज्ञाकारी गेंद □ गिलास पानी भरा— गया कहां? □ गिलास पानी भरा—यहां धरा, वहां मिला □ उल्टा गिलास—पानी भरा □ दूध का दूध, पानी का पानी □ अण्डा चांदी का! □ पानी में घुलने वाला सिक्का □ 'फायर-प्रूफ' रुमाल □ तीली पिये पानी, बोतल खाये सिक्का □ तीन डिबियां, तीनों खाली, फिर भी एक बोले □ हुक्म की गुलाम तीलियां □ गणित—झूठी! □ टिकट—स्वर्ग-नर्क के □ तुम बनो आधुनिक फेंटम □ रस्सियों के बंधन से छुटकारा □ पंक्ति पढ़ना—बिना देखे ही □ योग—अनदेखी संख्याओं का □ लिखित प्रश्न लो—बिना पढ़े उत्तर दो

एक ऐसी सचित्र पुस्तक जिसमें जादू की 101 शानदार व जानदार ट्रिक्स, जिनको समझना जितना सरल है, उनका प्रदर्शन उससे भी आसान है, दी गयी हैं। बस! जरूरत है तो थोड़े से अभ्यास के साथ चन्द ऐसी चीजों की जो तुम्हारे आसपास ही आसानी से उपलब्ध हो जायेंगी, जैसे—कैंची, ताश, रुमाल, गिलास, सिक्के, पेपर-स्ट्रॉ आदि।

ALSO AVAILABLE IN ENGLISH

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर मांग करें अन्यथा वी० पी० पी० द्वारा मंगाने का पता

पुस्तक महल खारी बावली, दिल्ली-110006

10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002

Vandana/PM/H-46

GET THEM RIGHT AWAY FIGHTING-T-SHIRTS FROM SUN

They're here now, a great new line in T-Shirts from SUN, the magazine that has always given you action. This is our Martial Arts T-Shirts series and each design is a breath-taking, super-charged affair.
You can order these mind-stopping T-Shirts by post or collect them personally from the SUN office in New Delhi. Each T-Shirt is Rs. 25/- only and those who would like them by mail should add Rs. 5/- for postage (i.e. send us Rs. 30/-).
We have following combinations to offer in 34" and 36" size, round neck

Design	Description	Code
1 DRAGON	Black on Red	D/BR
	Black on Yellow	D/BY
2 KUNG FU	Red on Yellow	KFU/RY
	Black on Yellow	KFU/BY
	Black on Blue	KFU/BB
	Black on Red	KFU/BR
3 TIGER CLAWS	Red on Yellow	TC/RY
	Black on Red	TC/BR
	Black on Blue	TC/BB
	Black on Yellow	TC/BY
4 SIDE KICK	Black on Red	KAR/BR
	Black on Yellow	KAR/BY
5 KARATE	White on Dark Blue	K/WB

5 KARATE

Write with your remittance to:

SUN MAIL ORDER DEPARTMENT
8-B BAHADURSHAH ZAFAR MARG NEW DELHI 110002.

NO VPP PLEASE!

Postal Orders/Demand Drafts to be drawn in favour of SUN PUBLICATIONS, and mailed to above address. Please indicate code number of the T-Shirt and the size you want when you order.

मुख पृष्ठ पर

कमाल हुआ जब फिल्म में
मस्त हुई तब चाल
पूनम ढिल्लन मर मिटी
देख के गोरे गाल।
देख के गोरे गाल
अजब तमाशा हो गया
हंसते हंसते कमाल भी
... दीवाना हो गया॥

अंक : 7 वर्ष : 19 1—15 अप्रैल 1983

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	५० रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	२६ रुपये
एक प्रति	:	२.५० रुपये

आपका भविष्य

पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं. हंसराज शर्मा

मेष : जो श्रम एवं दौड़धूप आपने गत दिनों में की है उसके सुपरिणाम प्राप्त होने का वक्त आ गया है, लाभ अच्छा होने लगेगा।

वृष : सफलता की राह में कुछ बाधायें उत्पन्न होंगी, परिश्रम का फल भी देर से नसीब होगा, कोई अप्रिय घटना हो सकती है।

मिथुन : अति अधिक खर्च और कठिनाईयां भी आपकी उन्नति को रोक न सकेंगी, परिश्रम तो काफी करना पड़ेगा।

कर्क : कठिनाईयां काफी पेश आयेंगी और संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा, सप्ताह कुछ संघर्षमय है।

सिंह : तनाव पूर्ण परिस्थितियों का सामना होगा, असफलताओं का बार-बार सामना करना पड़ेगा, कार्यशक्ति भी बढ़ेगी, आय यथार्थ, व्यय अधिक।

कन्या : स्वभाव में तेजी या गुस्सा रहेगा जिससे कुछ उलझनें भी बढ़ सकती हैं, लेकिन प्रयत्न करने पर सफलता मिल जाएगी।

तुला : सप्ताह आपके लिए तकरीबन अच्छा कहा जा सकता है, कामकाज में विशेष उन्नति एवं सुधार कर सकेंगे, यात्रा भी संभावित है।

वृश्चिक : सप्ताह पहले से अच्छा है, संघर्ष तो जरूर आयेंगे लेकिन लाभ और सफलता मिलती रहने से मन में उत्साह।
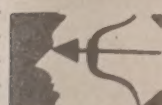
धनु : कारोबार एवं घरेलू वातावरण में सुधार के लक्षण दिखाई देंगे, किए कामों के शुभफल प्राप्त होने लगेंगे।

मकर : लाभ की आशा बढ़ेगी, लेकिन व्यर्थ की योजनाओं पर धन का अपव्यय होता रहेगा, कोई नई समस्या आ खड़ी होगी।

कुम्भ : सप्ताह पहले से अच्छा रहेगा, कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होते दिखाई देंगे, लाभ भी पहले से बढ़ेगा, कारोबार की हालत में सुधार।
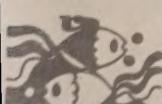
मीन : कोई ऐसी समस्या जो पिछले काफी अर्से से आपको परेशान किए हुए है अब खत्म हो जाएगी, व्यापार भी सुधरेगा

आपके पत्र

समुचित मनोरंजन प्रदान करने वाली पत्रिका दीवाना का इन्तजार हम सब हमेशा तीव्र बेचैनी से करते हैं, बाकी तो सभी ठीक है पर एक कमी हमें हमेशा अखरती रहती है—वो है 'काका के कारतूस' हम सब का आपसे निवेदन है कृपया इस स्तम्भ को पुनः प्रकाशित किया जाए —'काका के कारतूस' सहित दीवाना के इन्तजार में...

राजा, रीना, टिंकू, राजू, जुगनू, जिमी,—दमोह

काका के कारतूस पाठकों की बेहद मांग पर पुनः शुरू कर दिये गए हैं। अब आपको शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। --सं०

दीवाना का मार्च अंक पढ़ने को मिला, बस हो गए हम बुक स्टाल से चालू और पढ़ कर ही छोड़ा क्योंकि जिसका नाम ही दीवाना है तो हम क्यों ना हों उसके दीवाने। अटलजी को प्रेमपत्र पढ़ा, अच्छा लगा, काका के कारतूस ने दीवाना पर एक चांद और लगा दिया। कार्टून मोटू-पतलू भूलन देवी अच्छा लगा। हास्य व्यंग दिमाग चाटने वाले मन को कुछ मोह सा गया। यदि आप कोई और दीवाना पहेली शुरू कर दें तो कुछ और रुचि बढ़ जायेगी। उम्मीद है हमारी आशा पूर्ण होगी।

अशोक खुराना स्वीटी—कलानौर

शीघ्र ही दीवाना में नई-नई प्रकार की पहेली आपको हल करने को मिलेंगी। —सं०

दीवाना अंक(5)1-15 मार्च देखते ही दिल के फ्यूज बल्ब जल उठे। मुख पृष्ठ तो हर बार की तरह काबिल-ए-तारीफ था। इस बार तो आपने हमारी खुशी का बांध ही तोड़ डाला काका हाथरसी देकर। चिल्ली का 'प्रेम पत्र' बहुत ही बढ़िया तथा रोचक लगा। उर्दू हास्य व्यंग 'दिमाग चाटने वाले' की तारीफ के तो मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। आपने जो दिलखुश समाचार दिया कि अंक 7 से दीवाना रंगीन आया करेगी। इसके लिए हम मित्रों की तरफ से बधाई। स्थाई स्तम्भ सभी अच्छे थे। क्यों और कैसे में दी गई जानकारी ज्ञानवर्धक थी। इस अंक की बधाई स्वीकार करें।

गुरमीत सिंह मीता—नई दिल्ली

पाठकों की इच्छानुसार दीवाना को अति सुन्दर व रुचिकर बनाने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। —सं.

दीवाना का अंक 5 मिला। मुख पृष्ठ देखते ही हंसी आ गई। लल्लू, राजाजी, बन्द करो बकवास और मदहोश बहुत अच्छे लगे। इस बार सबसे ज्यादा मोटू-पतलू ने प्रभावित किया।

सिलबिल पिलपिल का नया कारनामा पढ़कर हंसी के मारे पेट में बल पड़ गए। मुझे दीवाने के प्रत्येक अंक का इन्तजार उसी प्रकार रहता है जैसे प्रेमी को प्रेमिका के पत्रों का।

नवनीत तलवार—जयपुर

दीवाना अंक 5 कुछ देर से प्राप्त हुआ। इस बार कोई विशेष आनन्द नहीं आया। मोटू-पतलू ने तो बातों-बातों में ही भूलन देवी को पकड़वा दिया। राजा जी ने तो बिलकुल बोर किया। हां, मदहोश और लल्लू के साथ सिलबिल-पिलपिल ने जरूर हंसाया। काका के कारतूस नए ताजे थे। उर्दू हास्य व्यंग भी मजेदार लगा। गरीब चन्द जी तो वास्तव में बहुत मजेदार आदमी (जानवर) हैं। कृपया फ्रेंडस क्लब का कूपन बड़ा दिया करें।

दिनेश कुमार चिटकारा—फरीदाबाद

दिल्ली लीला

चना कुरमुरा

साथियों

होली के मौके पर रंग मलना, गुब्बारे मारना, भांग खिला देना इत्यादि शरारतें आपने भी की होंगी और आपके साथ घटित भी हुई होंगी ।

खेल के मैदान में देश का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों के बचपन में भी ऐसी कई शरारतें हुई होती हैं । आइए इनमें से कुछेक की झांकी आपको दिखा दें ।

सबसे पहले मिलिए दिल्ली के धाकड़ टैस्ट-खिलाड़ी कीर्ति आजाद से । कीर्ति स्वयं मानते हैं कि बचपन में वह बड़े शरारती थे। अजनबी हो या, मास्टर जी अथवा 'जीजाजी' सबको होली के रंग में रंग देते थे ।

गणित के मास्टर जी

कीर्ति की एक घटना मास्टर जी के साथ घटित हुई ! हुआ यूं कि किसी ने उसे चेलेंज कर दिया कि गणित के मास्टर जी की चांद का निशाना बनाओ तो तुम्हें 'बालर' मान जायें । गणित में वैसे ही कमजोर था और मास्टर जी के साथ उसके वही संबंध थे जो पाक अम्पायरों के साथ भारतीय खिलाड़ियों के होते हैं ।

एक समय जब मास्टर जी बोर्ड पर प्रश्न समझा रहे थे, कीर्ति को अपने चैलेंज की याद आ गयी ! उसने गुब्बारा निकालकर फिर फुल-टास फेंकी और सारी क्लास के सामने मास्टर जी की चांद गीली हो गई ।

मास्टर जी आग बबूला हो गए । उन्हें किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं थी । अपने अनुभव के आधार पर उन्होंने समझ लिया कि ऐसी शरारत करने की जुर्रत करने वाली 'ब्लैक शीप' कौन सी है ।

कीर्ति के पिताजी को फोन करके सारी बात बतायी गयी और उन्हें स्कूल बुलवाया ! कीर्ति को भनक मिल गई कि पिताजी स्कूल आ रहे हैं । सारे स्कूल के सामने उसे उसकी शरारत की सजा मिलेगी ।

मौका पाते ही कीर्ति स्कूल से खिसक गया और घर के पिछवाड़े एक आम के पेड़ पर चढ़ कर बैठ गया ।

पिताजी स्कूल पहुंचे तो कीर्ति गायब । घर आए तो कीर्ति गायब । इधर-उधर दोस्तों के यहां पूछ-ताछ की पर कीर्ति कहीं नहीं मिला तो उनका गुस्सा चिंता में बदलने लगा ।

जैसे ही अंधेरा घना होने लगा, उनकी चिंता बढ़ने लगी । लड़का कहां चला गया ? कहीं···तरह-तरह के विचार उठने लगे । इससे पूर्व कि वह पुलिस की मदद मांगते, एक नौकर ने बता दिया कि साहब जादे उस आम के पेड़ पर चढ़े बैठे हैं ।

सारा परिवार उस पेड़ की तरफ दौड़ा ! कीर्ति को नीचे उतारा गया । उसे छाती से लगाकर पिता की चिंता दूर हुई । सजा तो दूर, उसे दूध और जलेबी दी गई ।

जीजा पर गोबर :

कीर्ति की एक मुंहबोली बहन के पति अपने आप को बड़ा तीसमार खां

शेष पृष्ठ ५० पर

प्यारे ज़नरल साहब

आपका नाम जिया-उल-हक है। यानी आप खुदा का प्रकाश हैं। शायद इस लिये ही आपका दावा है कि खुदा ने आपको पाकिस्तान को इस्लामी ढांचे में ढालने के लिए भेजा है।

यह भी अच्छा है कि आप अपनी जनता के प्रतिनिधि तो न बन सके पर आप अल्हा ताला के प्रतिनिधि बन गये हैं।

मैं अगर आपके व्यक्तित्व के बारे में कुछ समझा हूँ तो यह कि खुदा के प्रतिनिधि आप जैसे नहीं होते।

आपने अपनी जनता से २० बार चुनाव का वादा किया लेकिन मुकर गये। मेरी मुश्किल यह है कि मैं अल्हा ताला से आपके दावे की पुष्टि नहीं करा सकता।

जनरल साहब अपनी अक्ल से आपने साबित कर दिया है कि आप सत्ता की शराब के नशे में मदहोश हैं।

सत्ता का नशा भी बोतल के नशे की तरह होता है।

''छुटती नहीं हैं मुंह से यह काफिर लगी हुई''

आप पक्के मुसलमान हैं, अल्हा के प्रतिनिधि हैं मगर आप इस काफिर के हत्थे चढ़ गये हैं।

आप जानें और पाकिस्तान लेकिन जहां तक मेरा ताल्लुक है तो मैं यह कह सकता हूँ, कि आप अपनी जनता को ज्यादा देर इस्लाम की अफीम से सुला नहीं सकेंगे। उनका नशा अब खुमार में बदल रहा है और खुमार भी बहुत जल्द टूटने वाला है।

आप बार-बार हिन्दुस्तान की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे हैं। हम आपके कृतज्ञ हैं लेकिन यह जरूर सोचते हैं कि जब आपने अपनी जनता से किये हुए वादे पूरे नहीं किये तो हमारे साथ किये हुए वादे क्या पूरे करेंगे ?

आप हिन्दुस्तान से मित्रता की बातें करते हैं तो हमारी जवान पर गालिब का यह शेर आ जाता है।

''मुझ तक कल उनकी बज़्म में आया था दौ़रे जाम
साकी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में।

मुझे तो आपकी दोस्ती मिलावटी नजर आती है।

आपका
चिल्ली

पी. पल्लिकार्जुन राय प्रस्तुत करते हैं
बोरती इन्टरनैशनल का
यह तो दीवाना हो गया
कलाकार—कमल हुस्न, पूनम ढिल्ली, रिन जीत, श्राम शिव पुरी, स्वर्गीय सत्येन गप्पू, विजय रास्ते का रोड़ा, खाज मेरा, दैना पाठक, हान्ना मचल, रीठी का सीन।
संबाद—डा० राही मासूम सजा। संगीत—हार. डी. भरमन, गीत—श्रानन्द हीन बख्शी, निदेशन—टी० रामा रोय।
कमल हासन की प्रारम्भिक फिल्मों की सफलता के बाद कमल हसन एक ब्लैंक चैक बन गया है जिसे हर निर्माता भुनाना चाहता है। भुनाने की जल्दी में उन्हें फिल्म की कहानी तक खोजने का टाइम नहीं मिल रहा था।

सेठ जी क्या बतायें धंधों का हाल बड़ा मन्दा है। कल मैं दिन भर चौपाटी पर भेल पूरी की रेहड़ी लगाए बैठा रहा, बस सिर्फ दो पत्तल की बिक्री हुई। तीन रुपए खटे। दो रुपए तो माल की लागत ही बैठी। नफो सिर्फ एक रुपए का होयो।
सब तरफ यही हाल है सेठ—कहते हैं कि धंधे में इंटरनेशनल रिसेसन श्राया है। बड़ी-बड़ी कम्पनियां रो रही हैं। इब मेरी मूंगफली की रेहड़ो है श्राज सिर्फ पचास ग्राम की बिक्री हुई।
श्रगर यही हाल रहा तो धंधो चौपट समझो—एक रुपए दिन भर के नफे में मर्सीडीज कार का खर्च कैसे निकलेगा? ऊपर से सरकार वैल्थ टैक्स श्रौर इन्कम टैक्स लगा कर हमारा खून चूस रही है।

चोर रौटन सेठ का बटुश्रा मार कर भागता है श्रौर सीधा थियेटर की तरफ भागकर उसमें घुस जाता है। हिन्दी फिल्मों के हीरो की यह पुरानी श्रादत है।
श्रौर स्टेज पर भागते हीरो को हीरोइन के साथ डांस करने का चांस दिया जाता है। हीरोइन मेकश्रप करके तैयार बैठी रहती है...

तुम डांस करना जानते हो!
श्रापने शायद 'एक दूजे के लिए' फिल्म नहीं देखी है। श्रभी हाल में 'सनम तेरी कसम' में मेरे डांस के इलावा श्रौर था ही क्या?

श्रब तक की फिल्म की कहानी श्रौर श्रागे की स्टोरी पढ़ोगे तो पता लगेगा कि इस फिल्म में भी श्रौर कुछ भी नहीं है। सब कुछ इन डांसों पर निर्भर करता है। जैसे दम तोड़ते मरीज को श्राक्सीजन की जरूरत पड़ती है।

श्रोह—रौटन चोर के कंधे काफी मजबूत हैं। मेरा सारा भार उठा लिया है। जबकि श्राज मैं चार श्रालू गोभी के परांठे खाकर श्रायी थी। इसका मतलब यह हुश्रा कि इसमें गृहस्थी का बोझा संभालने की क्षमता है। मुझे इससे प्यार होने लगा है।

मां, मामा जी मेरी शादी प्रिया के साथ कभी नहीं करेंगे क्योंकि प्रिया के पिताजो इनको प्रिया का गार्जियन बना कर मरे हैं। यह तो उसकी शादी उसी से करेंगे जो इनकी ब्रैंड की हो सिगरेट पीता हो ताकि उसकी सिगरेटें पी सकें।
एक बात कान खोल कर सुन लो दुर्गा, मैं छन्दू को प्रिया के लायक नहीं समझता। प्रिया नाश्ते में आलू गोभी के परांठे खाती है। और यह नालायक आमलेट और बटरटोस्ट खाता है। इन दोनों की कभी निभ नहीं सकती।
यह बात नहीं है, इनको अपनी इमेज खराब होने का डर है क्योंकि अगले चुनाव में इनको इलैक्शन लड़ना है आमलेट और बटरटोस्ट तो बस बहाना है
बेटा अजय इनसे मिलो, यह प्रिया है। इनके नाम करोड़ों रुपए की जायदाद है। इनसे जो शादी करेगा उसकी उम्र का तीन-चौथाई भाग इनकमटैक्स के दफ्तर में बीतेगा।
यह तो वही है जिसने स्टेज पर उस दिन मेरे साथ डांस किया था। लेकिन इसके चश्मे कैसे चढ़ गए, क्या मुझे देख आंखें खराब हो गईं ?
ओ मॉम, डैडी ने यह क्या बाजार लगा रखा है ? मैं आपको सब बता देता हूं। मैंने इग्लैंड में शादी कर ली थी। मेरे साथ मेरी बीवी कैथरीन भी आई है वह धर्म-शाला में ठहरी है क्योंकि धर्मशाला में खटमल बहुत होते हैं और वह खटमलों पर रिसर्च कर रही है।
खटमल तो यहां भी हैं।
उधर चोर रौटन जेबें काटने उसी धर्मशाला में पहुंचता है जहां कैथरीन ठहरी है। रौटन और अजय की शक्लें हूबहू मिलती हैं।
ओह--अजय आ गया। लेकिन जाते समय वह सूट पहन कर गया था वापस जैकट पहन कर आया है''वट इज दि मैटर।
डालिंग तुम जाते वक्त सूट पहन कर गया था''जैकट पहन कर वापस आ रहा है सूट कहां है ?
मैं गलत नम्बर का चश्मा पहन कर गया था—पानी में गिर गया और कोट सिकुड़ कर जैकट बन गया—हमने कपड़ा सैन्फोराइज्ड का लेबल देख कर लिया था न ?
यह क्या है तुम्हारे हाथ में ?
अंगूठी, तुम्हारे लिए ही लाया था''
यह अंगूठी तो मामा जी की लगती है।
मामा जी की नहीं है। यह तो रोल्ड-गोल्ड की है।
याद रखना प्रिया शादी कर लेगी तो तुमको ठेंगा दिखा देगी और हम सबको लखनपुर का टिकट कटवा देगी।
क्या बेचारी हमारे लिए इतना कुछ करेगी ? तुम तो जानती हो आजकल रेलों में रिजर्वेशन कितनी मुश्किल से होती है। पैसे खिलाने पड़ते हैं। घंटों लाइन में खड़ा रहना पड़ता है बेचारी को कितनी तकलीफ होगी ?
टांगें पतली हो जायेंगी।

बेटी तुम हिन्दुस्तानी समाज को नहीं जानतीं—तुमने गलती से अजय से शादी कर ली है। तुम्हें पता नहीं है कि अजय बचपन में मक्की की रोटी और सरसों का साग बहुत खाया करता था। अभी जवानी में उसके परिणाम का पता नहीं लगेगा—उसके पेट में गैस जमा हो गई है। किसी दिन वह गैस का गोला फटेगा तो अपने साथ-साथ वह तुम्हारे भी चिथड़े बना कर उड़ा देगा। वह तो चलता-फिरता साग टाइम बम है।
मुझे अजय ने इसके बारे में कुछ नहीं बताया—मैंने खुद कई बार महसूस किया कि उसके पेट से बादलों के गरजने की सी आवाज क्यों आती है। थैंक यू फादर...यू वार्नड मी इन टायम।

बेटा रौटन अब मौका है। तुम्हारा हम शक्ल अजय बाप से लड़कर घर छोड़ गया है...तुम उसकी जगह जाकर बैठ जाओ और वकील सक्सेना की जायदाद को अपने बाप का माल समझकर उड़ाना शुरू कर दो।
यह कुछ चक्कर है। चोरी कोई करता है पकड़े तुम जाते हो—पूरियां कचौड़ियां कोई खाता है और पेचिस अजय को हो जाती है। तुम पोर्क हैम बेकन खाते हो और परांठे खाने वाली प्रिया से तुम्हारी सगाई की घोषणा होती है जरूर कोई तुम्हारा हमशक्ल यह सारे गुल खिला रहा है।
मेरा तो इसमें फायदा ही था। अब वह सारा मजा किरकिरा कर देंगे—दो-दो प्यार करने वाले मिले थे।
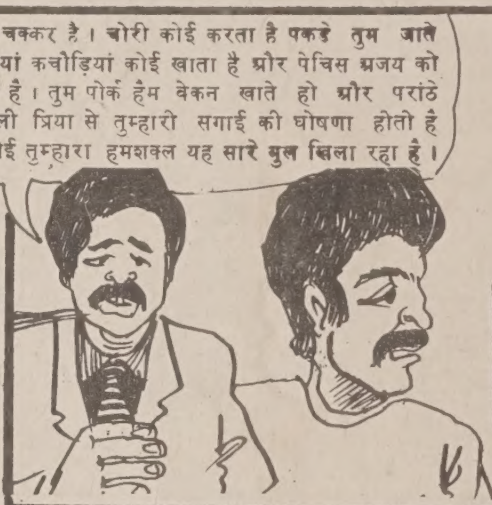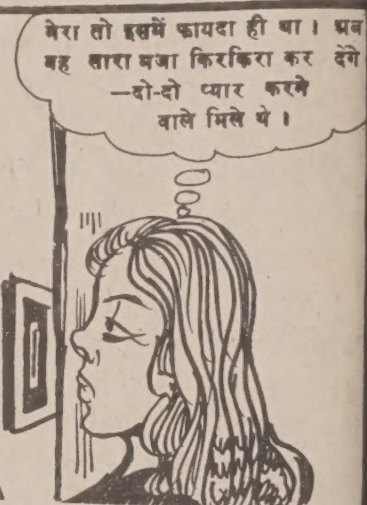
तो क्या हम दो जुड़वां भाई हैं।
जब हिन्दी फिल्मों के कांट्रेक्ट मिलने लगे थे तो मैंने बगैर स्टोरी पढ़े धड़ाधड़ कांट्रेक्ट साइन करने शुरू कर दिये थे। जुड़वां भाइयों की कहानी वाली घिसी-पिटी फार्मूला फिल्म साइन कर रहा हूं यह पता ही नहीं था।
अब क्या हो सकता है १६ रीलें तो बन भी गयीं।
यू ब्लैक मेलर, तुम फोटो को दिखा कर मुझे ब्लैक मेल करना चाहते हो? मैं तुम्हें पुलिस के हवाले कर दूंगा।
सोच लो सक्सेना, मैं यह फोटो अखबारों में छपवा दूंगा। बगैर शेव किये फोटो खिचवाना कितना बड़ा अपराध है तुम जानते ही हो। आंसुका के अंतर्गत तुम अन्दर किये जा सकते हो। तुमने फोटो खिचते समय स्मायल भी नहीं किया है।
यू चीट।
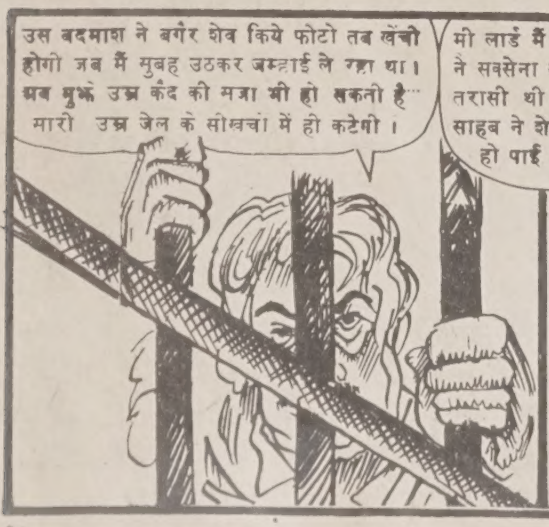
उस बदमाश ने बगैर शेव किये फोटो तब खेंची होगी जब मैं सुबह उठकर जम्हाई ले रहा था। अब मुझे उम्र कैद की सजा भी हो सकती है...मारी उम्र जेल के सीखचों में ही कटेगी।
मी लार्ड मैं यह साबित कर सकता हूं कि छन्दू ने सक्सेना साहब के ब्लेड से अपनी पेन्सिल तरासी थी। बाद में उसी ब्लेड से सक्सेना साहब ने शेव करने की कोशिश की—शेव नहीं हो पाई इसमें सारा कसूर छन्दू का है।
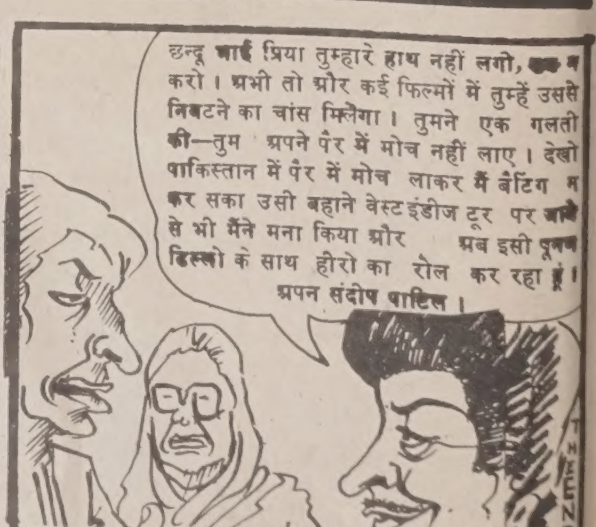
छन्दू भाई प्रिया तुम्हारे हाथ नहीं लगी, करो। अभी तो और कई फिल्मों में तुम्हें उससे निबटने का चांस मिलेगा। तुमने एक गलती की—तुम अपने पैर में मोच नहीं लाए। देखो पाकिस्तान में पैर में मोच लाकर मैं बैटिंग न कर सका उसी बहाने वेस्टइंडीज टूर पर से भी मैंने मना किया और अब इसी फिल्मो के साथ हीरो का रोल कर रहा हूं। अपन संदीप पाटिल।
THE END

सफल विज्ञापन

मूल : इब्ने इंशा

हम बहुत दिन से अखबार में एक विज्ञापन देख रहे थे जिस में फिल्म दर्शकों के दिलों की मालिक मिस हुस्नबानो एक साबुन की टिकिया दिखाकर कह रही है कि मेरे हुस्न का राज तोता मार्का साबुन है। आखिर एक दिन हमने अपने नौकर को आवाज देकर हिदायत की—''मियां गुंचे! कल से हमारे गुसलखाने में यही साबुन होना चाहिए! समझे! हम भी कहें, यह हमारी शक्ल को क्या हो गया है कि अखबार वाले तस्वीर छापते हुए डरते हैं ।''

गुंचे बोला—'जी! आप यही साबुन तो इस्तेमाल करते है।''

'कब से?'' हमने पूछा।

'जी दस बारह साल से, बल्कि मैं स्वयं यही इस्तेमाल करता हूं।''

हमने कहा—अच्छा! आईना लाओ।''

आईना आया और हमने देखा या तो हमें उस साबुन के सही उपयोग का ढंग पता नहीं या कोई अन्य बात है।'' एक क्षीण-सी संभावना इस बात की भी है कि मिस हुस्नबानो पहले ही से खूबसूरत हो। उनका चौड़ा कद, सुतवां नाक, कटोरा सी आखें, फूल सा मुख और कबूतरी सी चाल में तोता मार्का साबुन का दखल होगा तो सही, लेकिन इतना नहीं, जितना दावा किया जाता है। असल में किसी चीज के विज्ञापन के साथ किसी प्रसिद्ध हस्ती का प्रमाणपत्र उसे अन्य गुणों से बेपरवाह कर देता है। यह तो खैर सुन्दरता की बात है। हमने उन साबुनों के विज्ञापनों के साथ इस प्रकार के प्रमाण पत्र देखे हैं कि हमारा साबुन इस्तेमाल कीजिए, कभी कब्ज की शिकायत न होगी। हमारे साबुन से बुद्धि तेज हो जाती है। जबान में सफाई और ख्यालात में पवित्रता आती है। हमारा साबुन आंखों की तमाम बीमारियों के लिए लाभदायक है। नजर को तेज करता है। हमारे साबुन से महीना भर जम कर नहाइए। कालीखांसी और पुराने दमे को उखाड़ फेंकता है। हमारा साबुन नियमितता से उपयोग करने वाले को छः महीने में मैट्रिक पास कराने की गारंटी देता है।

कल की बात है कि एक महाशय किसी की सिफारिश के साथ हमारे पास आये कि मैंने एक तेल तैयार किया है,आप मशहूर आदमी हैं। उसके लिए सर्टिफिकेट दे दीजिए।

हमने वाजबी सी हिचकिचाहट के बाद कहा—''किस प्रकार का तेल है यह ! सरसों का है? मूंगफली का है? या बावन कूटी का है...''

बात काटकर बोले—'जी नहीं! मोटर आयल है मोटर में डालने का।''

हमने कहा—''हमारे पास तो कार नहीं है। कभी नहीं थी!

फरमाया—''स्कूटर होगा। मोटर साइकिल होगा।''

'वह भी नहीं।''

'साइकिल तो जरूर होगा।''

'वह भी नहीं है आजकल?'' हमने आपत्ति की।

'तो फिर पैदल चलते होंगे।''

हम ने स्वीकार किया तो बोले—''इसे जूते पर चुपड़ लिया जाये तो चमड़े की आब ताब में कभी फर्क नहीं आता।''

हम कलम निकाल कर यह सार्टिफिकेट लिखने को थे कि उन्हेंने रोका—'इससे काम नहीं बनेगा जी। आप बस में बैठते हैं?''

'हां! हां! बैठते भी हैं। खड़े भी होते हैं और . . .

फरमाया—'तो बस यह लिख दीजिए कि मैं सदा उसी बस में बैठता हूं या उसी को धक्का लगाता हूं जिसमें चांद मार्का मोटर आयल इस्तेमाल किया जाता है।''

हमारे इस सार्टिफिकेट की धूम सुन कर एक बहुत बड़ी विज्ञापन कम्पनी ने हमसे संबंध स्थापित किया और करबद्ध निवेदन किया कि हम उनके 'क्लाइटंस' ग्राहकों के कलम उठाकर कुछ विज्ञापन लिख दें, मगर वह उन्हें पढ़ कर ऐसे भागे की अब तक वापसी का नाम नहीं लिया। उनके भागने का कारण समझ नहीं आता, हालांकि हमने अपनी ओर से विज्ञापन लिखने में काफी मेहनत की थी।

बेलचा मार्का लट्ठा

कफन के लिए बेलचा मार्का लट्ठा सर्वोत्तम है। कयामत तक चलेगा। हकीम शेख अब्दुल नकीर मालिक दवाखाना सूरासराफीलिया फरमाते हैं, 'मैं हमेशा अपने मरीजों से इसी लट्ठे की सिफारिश करता हूं। परखा हुआ है। जिसने एक बार इस्तेमाल किया। दोबारा इसी की फरमाइश की।''

जो लोग इलाज और कफन दोनों का हमसे एक साथ तय करें, उनको बिल पर बीस प्रतिशत की रिआयत भी मिलेगी। आप भी अपने और अपने रिश्तेदारों के लिए यही लट्ठा इस्तेमाल करें।

पहलवानी मंजन

पहलवानी मंजन दांतों के लिए अद्वितीय तोहफा है। म्यूनिसिपल मेम्बर सैयद गामे शाम फरमाते हैं कि मुझे पहलवानी मंजन की बरकत से कभी दांतों के डाक्टर के पास आने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मेरे सभी दांत एक एक करके बिना तकलीफ खुद ही झड़ गये। आप भी दांतों से बिना दर्द छुटकारा पाने के लिए पहलवानी मंजन का इस्तेमाल कीजिए।

चैम्पियन ताले

घरों, कारखानों, बैंकों के लिए चैम्पियन से बेहतर कोई ताला नहीं। सेन्ट्रल जेल हैदराबाद से काले खां कैदी नम्बर २१२ फरमाते हैं कि मेरे तजुर्बे में इससे बेहतर ताला आज तक नहीं आया। आप भी चैम्पियन ताला इस्तेमाल कीजिए। महज हाथ लगाने से खुल जाता है।

नाइन-ओ-क्लाक ब्लेड

नई धार निराली नाइन ओ क्लाक ब्लेड बेहतरीन ब्लेड है। यह ब्लेड दाढ़ी बनाने के साथ-साथ आलू छीलने, नाखून काटने और पेंसिल तराशने के लिए भी इस्तेमाल किये जा सकते हैं।

निराश मरीजों के लिये खुशखबरी

मीर मजाहद अली विशेषज्ञ पूर्वी-पश्चिमी चिकित्सा जो सदरी नुस्खों और फकीरी टोटकों की पोट है, आजकल इधर तशरीफ लाये हुए हैं। उनका दवाखाना मायूस मरीजों की आरामगाह है। सूफी इकबाल हुसैन चिश्ती मरहूम ने अपनी आखिरी लिखित में फरमाया है कि खुदा से शर्तिया मिलाप के लिए मजाहद अली से बेहतर हकीम कोई नहीं।

ऊंट मार्का पेन्सिल

पेन्सिलों में पेन्सिल 'ऊंट मार्का पेन्सिल' रकस्तेजमां हजरत भोलू पहलवान फरमाते हैं कि मैं अपना हिसाब-किताब लिखने के लिए हमेशा ऊंट मार्का पेन्सिल उपयोग करता हूं। आप भी ऊंट मार्का पेन्सिल उपयोग कीजिए और अपनी सेहत को तरक्की दीजिए।

सूरजमार्का लालटेन

सूरज मार्का लालटेन देखने में खूबसूरत चलने में पाएदार, मिट्टी का तेल इसमें कम खर्च होता है। मिस्टर ए-टू. जेड खां फरमाते हैं कि मैं अपने घर में हमेशा सूरज मार्का लालटेन ही इस्तेमाल करता हूं। यह कभी फ्यूज नहीं होती!

सूरज मार्का मक्खन

चिराग डेरी का सूरज मार्का मक्खन लीजिए। खालिस और खूशबूदार खूबियों में लासानी, ज्यादा तारीफ करना सूरज को चिराग दिखाना है। अफसरों और माशूकों के लिए एक समान लाभदायक।

मशहूर आशिक हजरते कैसे आमरी, सहाराए-नजद से लिखते हैं कि मैं अपने दिल की मुराद पाने के लिए सभी नुस्खे और तावीज इस्तेमाल करके तंग आ गया था। लैला बी ने कभी पलट कर भी न देखा था। आखिर किसी ने सूरज मार्का मक्खन का पता दिया और कहा कि उसे सुबह शाम इस्तेमाल करो और खुदा की कुदरत का तमाशा देखो। आज खुदा के फजल से मेरा घर और दिल शाद है। लैला 'बी से इस दास के फिलहाल एक लड़का और एक लड़की है।

म्यूनिस्पल कमेटी के सुपरिटेण्डेन्ट मियां तालब हुसैन लिखते हैं कि मेरा एक अफसर सख्तदिली में अपनी मिसाल आप था। ऊपरी आमदनी से इन्कार। सिफारिश का दुश्मन। मेरी तरक्की उस जालिम ने रोक रखी थी। आखिर मैं ने निरन्तर चिराग डेरी का मक्खन इस्तेमाल किया। आश्चर्यजनक फायदा हुआ। एक ही महीने में मौजूदा पद पर तरक्की हो गई। अब मैं आस्टिटेंट मैनेजर के पद के लिए प्रयत्न कर रहा हूं। कृपया पांच डिब्बे वी. पी. पी से भेज दीजिए।

ऐनकें और चश्मे

कुदरती नजर पर एतबार मत कीजिए। ऐनक लगाइए। एक-एक के दो-दो नजर आएंगे।

चश्मा-ए-फौज आपटीकल की ऐनकें सस्ते और पाएदार होते हैं। नजर की ऐनकें, धूप की ऐनकें, तअस्सुब की ऐनकें।
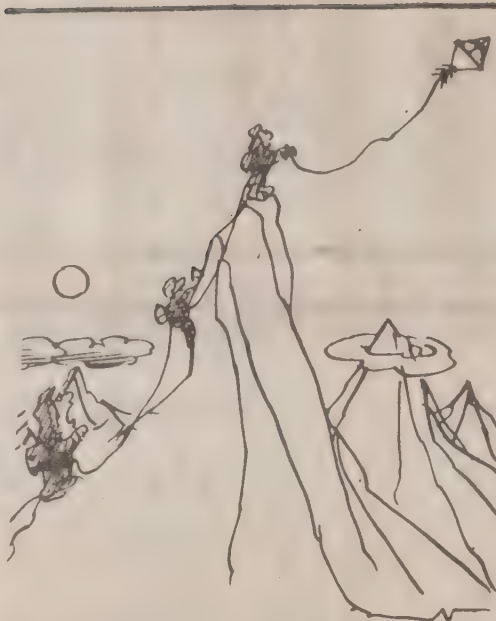
नजर की ऐनक खरीदिए। हर तरफ हरा ही हरा नजर आएगा धूप की ऐनकें ऐसी कि बारिश की कैसी ही झड़ी लगी हो, ऐनक लगाते ही फौरन धूप निकल आएगी। रात को भी इस्तेमाल की ज़ा सकती है।

तअस्सुब की ऐनक लगाइए। यह आप लोगों के रिश्तेदारों और हमसूबा लोगों के हितों की जमानत है। याद रखिए, खैरात सदा घर से शुरू होती है। बहुत से सरकारी विभागों में यह ऐनकें हमारे ही यहां से जाती हैं।

अनु.: तरनजीत

एक लघु कथा

उद्घाटन

—आजाद रामपुरी

मंत्री महोदय जब धूल उड़ाती हुई कार से गांव पहुंचे तो ग्रामीण जनता ने अपनी श्रद्धा के फूलों से पलक-पांवड़े बिछाते हुये उनका गर्म जोशी से स्वागत किया। जनता ने जब डाकुओं के अत्याचारों की लोमहर्षक गाथा सुनाई तो मंत्री जी का हृदय दया से द्रवित हो गया और वे सशर्त घोषणा करते हुये बोले—

"यदि आप अपनी प्राइमरी शाला की इमारत पुलिस चौकी के लिये दे दें तो यहां पुलिस चौकी स्थापित कर दी जायेगी—रहा शाला के लिये इमारत का सवाल सो पुलिस स्थापित होते ही मैं शासन से अनुदान दिला दूंगा।"

ग्रामीणों के श्रमदान से बनी इमारत को दिये जाने की ग्राम के सरपंच ने तत्काल सहमति प्रदान कर दी। कुछ दिन बाद शाला की इमारत पर पुलिस का ताला जड़ दिया गया।

दुर्भाग्य से प्रान्त में मिनिस्टरी बदल गई। मंत्री महोदय सड़क पर आ गये। गांव वाले अब प्राइमरी शाला की इमारत के अनुदान के लिये राजधानी के चक्कर लगा रहे हैं। और उधर पहले से इमारत पर अब भी पुलिस विभाग का ताला लटका हुआ है।

काका के कारतूस

अटपटे प्रश्न दीवानों के
चटपटे उत्तर काका हाथरसी के—
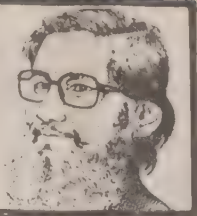
राकेश मालपानी, एडवोकेट, ग्वालियर
प्र० : टेलीफोन करते समय, हैलो या हल्लो क्यूं कहते हैं?
उ० : घनन-घनन घंटी बजे, दिल-दिमाग खुल जात,
हल्लो का यह अर्थ है, 'सुनलो' मेरी बात।

सुदर्शन पांडुरंग तमल, भिवंडी
प्र० : आजकल के बाप, बेटे से अधिक बेटी की बात का विश्वास क्यों करते हैं?
उ० : बेटे, हेटे हो गए, डरें बिचारे बाप,
बेटी सीधी-सरल हैं, बेटा दादाछाप।

रामकिशोर उपाध्याय, गौहाटी (असम)
प्र० : असम में पुलिस-फौज की छाया में चुनाव क्यों कराए?
उ० : पुलिस-फौज से सुरक्षित रहते तख्तो-ताज,
प्रत्याशी मरजायं तो कौन करेगा राज?

सुरेश खुराना 'पप्पी' जींद (हरियाणा)
प्र० : आशिक का जनाज़ा निकलता है तो महबूबा क्या सोचती है?
उ० : क्यों बेचारी प्रेमिका, दुःखी होय बेकार,
यार पुराना मरगया, नया मिले भरतार।

राजेशकुमार, जींद (हरियाणा)
प्र० : काकाजी, आप कविता कहां बैठ कर बनाते हैं?
उ० : पूछताछ में क्या रखा, करके देखो टैस्ट,
कविता लिखने के लिए, बाथरूम है बैस्ट।

सी. आर. गिरि राजा, दुलियाजान (असम)
प्र० : दिल पर संकट आता है तो आंख क्यों रोती है?
उ० : दिल ने आंखों के लिए तुरंत कर दिया फोन,
आंखों से आंसू बहें, दिल रहता है मौन।

राजेन्द्र कुमार बालाराम, बांगड़, मन्दसौर
प्र० : प्रेमिका क्रोध में भरी हो तब क्या करना चाहिए?
उ० : गाल लाल हों क्रोध में, बढ़ जाएगा नूर,
चूम लीजिए बेधड़क, क्रोध होय काफूर।

जग्गी दुआ, माडल टाउन, करनाल
प्र० : चमचागिरी और दादागिरी में कौन सी गिरी गिरी हुई है, कौन उठी हुई है?
उ० : चमचा चोर समान हैं, दादा डाकू मान,
ऊंची है नेतागिरी, मिले मान सम्मान।

शरनजीत कौर, फैजाबाद (उ. प्र.)
प्र० : बांध टूटता है तो बाढ़ आती है, दिल टूटता है, तब?
उ० : फूट जाय जब बांध तो बहते गांव-मकान,
हूट करे जब प्रेमिका, टूट जाय इंसान।

सुनील कुमार रेणु, कडरू (रांची)
प्र० : काकाजी, मैं हीरो बनना चाहता हूं, है कोई तरकीब?
उ० : किसी गर्ल्स कालेज के चक्कर रोज लगाउ,
जिस दिन पिटजाओ उसी दिन हीरो बनजाउ।

दिनकर पाण्डे, हलद्वानी (नैनीताल)
प्र० : कोई लड़का परीक्षा में फेल होता है तो वह रोता है, प्रेमी इश्क के इम्तहान में फेल हो जाय तो?
उ० : प्रेमपूर्वक लीजिए, प्रेम डगर की रिस्क,
फेल हुए तो और भी दौड़ लगाए इश्क।

विपिन कनौजिया, लुधियाना
प्र० : मंदिर में भगवान की पूजा, तो घर में?
उ० : मंदिर के भगवान ने, ठेंगा दिया दिखाय,
पत्नी की पूजा करो, घर में लक्ष्मी आय।

आनंद कुमार मोदी, झारसुगुड़ा (सम्बलपुर)
प्र० : आत्मा और परमात्मा में क्या अंतर है?
उ० : परम आत्मा इंदिरा, आत्मा नेता लोग,
वैसा उसका मिल रहा, जैसा जिसका भोग।

धर्मवीर भाम्बू, रायसिंह नगर (राज०)
प्र० : मोर कितना सुंदर पक्षी है लेकिन उसके पैर असुंदर क्यों?-
उ० : अति का भला न बोलना, अतिका भला न मौन,
जो अति सुन्दर चीज़ हो, उसको छोड़े कौन?

माधवराज 'बेसुध', अम्बौर (बाराबंकी)
प्र० : जीवन के बारे में ज्योतिषी कहते हैं, यह होगा वह होगा/यह नहीं बताते कि मरने के बाद क्या होगा?
उ० : बतला भी दे ज्योतिषी, आगे के हालात,
कौन देखने आयगा, मरने के पश्चात?

एम-के-नागपाल, पानीपत
प्र० : दोस्त नाराज, हो जाय तो क्या करना चाहिए?
उ० : याद कीजिए मित्र के कैसे चलन-चरित्र,
अगर मनाने योग्य हो, मना लीजिए मित्र।

मोहम्मद इरफान, अंसारी, चिल्ला (इलाहाबाद)
प्र० : शादी के लिए गांव की गोरी अच्छी रहती है या शहर की छोरी?
उ० : बिना परखे कहना कठिन, कौन बैड या बैस्ट,
शादी से पहिले उसे, करके देखो टैस्ट।

दीनमोहम्मद असलम, नौगांव (असम)
प्र० : मारधाड़ और खून खराबी के बीच इंदिराजी दो बार असम आई, उन्हें डर क्यों नहीं लगा?
उ० : जो होता है साहसी, मदद करें जगदीश,
तिरिया हट के सामने, मर्द नवाएं शीश।

काका के कारतूस
दीवाना पाक्षिक, ८ बी, बहादुरशाह जफ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.

आपका वजन

हमारा दीवानापन

आपने वजन की मशीन पर अपना वजन कभी-न-कभी लिया ही होगा। वजन बताने वाले कार्ड पर नीचे संदेश छपा होता है जैसे 'आप बहुत अच्छे इंसान हैं'—'आपका दिल साफ है,' वगैरह। इन वजन कार्डों पर सच्ची और कड़वी बातें नहीं छपी होतीं। चापलूसी के इस युग में सच और कड़वे बोलों की सख्त जरूरत है। झूठी दिलासाओं का जमाना नहीं है। हमारे सुझावों के अनुसार वजन कार्डों पर कुछ ऐसे वाक्य छपे होने चाहियें जैसे···

तुम्हारा दिल साफ है
लेकिन आदतें बहुत गंदी है।

तुम्हारे इस वजन में
तुम्हारे दिमाग में पड़े पत्थरों
का वजन भी शामिल है।

तुम लोकप्रिय नहीं हो
सब तुम्हारे टुच्चेपन को
जान गए हैं।

तुम एक नम्बर के खुद
गर्ज हो !
अपने सिवा किसी और का
भला नहीं चाहते।

तुम चोर हो
बिल्कुल अपने बाप पर गए हो !

तुम्हारी पोल खुलने वाली है
बकरे की मां कब तक
खैर मनाएगी।

आपका चरित्र अच्छा है,
स्वर्गीय बिल्ला व रंगा
की तुलना में।

बगैर टिकट सफर करते हो
किसी दिन पकड़े जाओगे।

तुम्हारी नजर हमेशा दूसरों की बहू बेटियों पर रहती है।
तुम्हारी प्रेमिका तुम्हें बेवकूफ बना रही है।
तुम काम चोर हो हराम की कमाई खाते हो।
तुम्हारी नाक नींद में बजती है, इससे तुम्हारी बीवी बहुत परेशान है।
तुम्हारे पाप का घड़ा भर गया है किसी भी दिन चौराहे पर फट सकता है।
बेवकूफ ! तुम्हारी बीवी का पड़ोसी से चक्कर चल रहा है।
तुम्हारा वजन दूसरे के पैसे खा-खाकर बढ़ रहा है।
तुम्हारा प्रेमी अपने दोस्तों के सामने तुम्हारा मजाक उड़ाता रहता है।
अपने गंदे हाथ इस कार्ड को लगाकर तुमने कार्ड मैला कर दिया है।
तुम बेईमान हो तुम्हारा कभी पूरा नहीं पड़ेगा।
तुम्हारे दिल में खोट है इसका फल जरूर भुगतोगे।
तुम अक्ल के दुश्मन हो, तुम्हारा काम बनेगा भी तो कैसे ?
तुमने बी. ए. नकल करके पास किया था।
तुम्हारे पेट में कीड़े हैं अपने वजन में से उनका वजन घटाओ।

हरीश की बेचैन नजरें बार-बार सड़क पर दूर-दूर जातीं और लौट आतीं . . .जाने क्यों उसे यह विश्वास था कि आज सुनीता जरूर उससे मिलने आएगी . . .मगर फिर भी उसके दिल में एक विचित्र-सी खुदबुद थी . . .अगर वह न आई तो ? . . .नहीं-नहीं, वह आएगी और जरूर आएगी . . .हरीश अपने मस्तिष्क को झटककर सोचता और फिर उस सुन्दर लाकिट को बार बार जेब से निकालकर देखता था जो वह सुनीता के लिए अपने प्यार के पहले उपहार के रूप में लिया था।

यह लाकिट देखने में शुद्ध सोने का दिखाई देता था . . .बिना कसौटी पर परखवाए कोई नहीं जांच सकता था कि लाकिट सोने का नहीं बल्कि लिल्ली ज्यूलरी का है . . .लिल्ली ज्यूलरी वालों ने भी कमाल कर दिया था . . .अगर किसी जेवर को दस बरस तक परखा न जाए तो पता ही न चले कि वह सोने का है या नहीं।

हरीश सोचता और लिल्ली ज्यूलरी वालों की प्रशंसा करता जिनके कारण उनकी प्रेयसी की दृष्टि में उसका महत्व इतना बढ़ जाता था वर्ना हरीश के बस का रोग कहां था कि वह किसी को चांदी का भी कोई उपहार खरीदकर दे सकता—हरीश, जिसके माता पिता उसको अल्प आयु ही में छोड़ कर परलोक सिधार गए थे।

हरीश को उसके सौतेले चाचा और चाची ने पालापोसा था . . .शुरू-शुरू में तो उसकी इतनी पिटाई होती थी कि कई-कई दिन तक उसकी हड्डियां दुखा करती थीं . . .मगर धीरे-धीरे वह इस पिटाई का इतना अभ्यस्त हो गया था कि प्रायः ऐसा होता कि चाची उसको खमचियों से मार रही है, चाचा गन्दी गन्दी गालियां बक रहा है मगर हरीश बड़े आराम से बैठा खाना खाए जा रहा है। बचपन ही से उसकी खुराक इसलिए अधिक थी कि उसके चाचा और चाची उससे स्कूल से आने के बाद,तीन नौकरों के बराबर काम करा लेते थे। घर में नल नहीं था . . .पहले पानी भरने वाला लगा हुआ था मगर जब हरीश बड़ा हो गया तो पानी भरने वाले के खर्चे की बचत होने लगी और यह काम हरीश को सौंप दिया गया। पहले चाचा दफ्तर जाने से पहले घर का सौदा दे जाते थे मगर बाद में यह ड्यूटी भी हरीश को करनी पड़ती थी . . .फिर चाचा चाची के पांव दबाना, सिर में तेल डालना और बदन दबाना भी हरीश ही के दैनिक कार्य में जोड़ दिया गया . . .यह सारे काम हरीश एक मशीन के समान पूरे नियम से करता था।

हरीश बचपन ही से बड़ा सजग और तीव्र बुद्धि का बच्चा था . . .उसकी चाची, चाचा से आयु में काफी छोटी थी इसलिए चाचा उसके खूब नखरे उठाते थे . . .स्वयं को चाची के सामने अधिक शक्तिशाली सिद्ध करने के लिए प्रायः मूर्खों की सी हरकतें करते थे . . .एक बार आटे की बोरी उठा ली थी तो कमर में चिक आ गई थी . . .उस पर चाची ने उनकी बड़ी खिल्ली उड़ाई थी।

चाचा प्रायः चुपके-चुपके हरीश से नाना प्रकार की दवाइयां मंगवाते थे जो वह न स्वयं किसी के सामने खरीद सकते थे और न चाची को बताना चाहते थे। एक दिन एक कैमिस्ट ने हरीश को कहा था—

''अबे . . .तेरी अभी उम्र ही क्या है . . .यह गोलियां तू किसके लिए ले जाता है ?''

''चाचा के लिए।''

''क्या तेरा चाचा बुड्ढा और चाची जवान है ?'' कैमिस्ट ने हंसकर पूछा था।

हरीश उस समय कुछ न समझा था—उसने आश्चर्य से पूछा था—

'इसका क्या मतलब हुआ ?'

'इसका मतलब जानना है तो रात को चाचा के कमरे में झांक कर देखियो।''

फिर उस रात हरीश की समझ में मतलब भी आ गया था . . .उसकी समझ में यह बात भी आ गई थी कि चाचा अपने सफेद बालों में खिजाब क्यों लगाते थे . . .नए फैशन के बढ़िया कपड़े क्यों सिलवाते थे और उन्हें पहनकर बड़े गर्व से शीशे के सामने खड़े हो कर चाची से पूछते थे—

'कैसा लग रहा हूं मैं ?''

'क्यों बुढ़ापे में सठिया गए हो ?'' चाची मजाक उड़ाने के ढंग से कहती।

और चाचा का चेहरा उतर जाता . . .सारा उत्साह हवा हो जाता . . .फिर किसी ने चाचा को नुस्खा बताया कि रोज बिल्कुल ताजा मछली खाया करो, सौ बरस तक बुड्ढे नहीं होओगे। चाचा ने पहले कुछ दिन बाजार से मछली मंगवाई लेकिन बाद में मछली पकड़ने का कांटा और डोरी चुपके से हरीश के कमरे में रखवा दिए जो हरीश अपने स्कूल के बैग में डाल कर ले जाता था और छुट्टी होने के बाद वह पास की नहर से चाचा के लिए ताजा मछली पकड़ कर लाता था . . .इस काम के लिए चाचा ने हरीश पर एक मेहरबानी भी की थी, वह यह कि उन्होंने चाची से छिपा कर हरीश को सैकंड हैंड साइकिल दिलवा दी थी—यह साइकिल हरीश अपने दोस्त कमल के घर में रखा करता था ताकि चाची को पता न चले।

कमल, हरीश का बचपन का बहुत गहरा दोस्त था . . .दोनों में भाईयों जैसा प्यार था . . .दोनों में अन्तर था तो केवल इतना कि कमल पढ़ाई का कीड़ा था . . .वह हर समय पढ़ाई में डूबा रहता था . . . उसके पिता किसी दफ्तर में हैड क्लर्क थे . . .मां और बहन थीं और कमल का कहना था कि वह एक दिन पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बनेगा . . .तब उसके पिता को क्लर्की नहीं करनी पड़ेगी और वह अपनी बहन की शादी भी बड़ी धूमधाम से किसी बड़े घराने में करेगा . . .कमल हरीश के खेलने कूदने में बहुत कम साथ देता था . . .अधिक समय पढ़ाई में गुजारता था। यह था वह वातावरण जिसमें हरीश पला, बढ़ा . . .बड़ा होते होते वह पढ़ाई में भी ऐसे ही तेज हो गया जैसा साधारण जावन में था . . .लेकिन हाई स्कूल तक पढ़ने के बाद ही उसके चाचा ने उसे स्कूल से उठा कर एक कारखाने में 'टर्नर' के काम पर लगा दिया था। हरीश इसमें भी मगन था क्योंकि उसे स्वयं भी पढ़ाई से अधिक लगाव नहीं था . . .वह तो चाचा के छुपकर दिए हुए पैसे भी जोड़कर अपने लिए बढ़िया से बढ़िया कपड़े बनवाता था और अपने कपड़ों पर सैंट भी लगाता था कि कोई लड़की शायद उसकी ओर आकृष्ट हो जाए।

हरीश कुछ ऐसे वातावरण में पला-बढ़ा था कि उसकी कल्पना में हर समय लड़की रहती थी—टर्नर का काम करने में तो अपने हाथों की आमदनी थी और कोई पूछने वाला था नहीं . . .दस रुपये का काम किया . . .पांच रुपये बचाए और पांच रुपये चाची को दे दिए।

एक दिन जाने क्या हुआ . . .चाचा रात को

अच्छे-खासे टहलने गए, वापस आकर उन्होंने दूध पिया और दूध के साथ जाने किस तरह की रूपहली गोलियां खाईं . . .सुबह जब उन्हें जगाने का प्रयत्न किया गया तो वह सोते ही रह गए—बाद में हरीश ने सुना कि किसी हकीम से कुश्ता बनवा कर खा लिया था।

चाचा के मरने के कुछ दिन बाद ही चाची ने न केवल हरीश कोघर से निकाल दिया बल्कि स्वयं अपने से कम आयु के एक नौजवान से शादी भी कर ली . . .बिल्कुल ऐसे ही जैसे वह चाचा के मरने की प्रतीक्षा में हो।

हरीश को क्या चिन्ता थी . . .उसे तो चैन मिल गया व्यर्थ के प्रतिबन्धों से मुक्ति मिल गई थी . . .एक दिन स्टेशन के वेटिंग रूम में सोया, दूसरे दिन कमल अपने घर ले गया लेकिन तीसरे दिन ही उसने एक कमरा अपने लिए किराये पर ले लिया क्योंकि कमल के घर रहकर भी उस पर रुकावटें तो थीं ही . . .अब धीरे-धीरे हरीश ने खासे पंख निकाल लिये थे।

मन मौजी, मस्त आदमी था . . .कोई जिम्मेदारी नहीं थी, कोई प्रतिबन्ध नहीं था . . .काम में परिश्रम करता गया और फिर देखते ही देखते फर्स्ट क्लास का मिस्त्री बन गया . . .कारखाने का मालिक हर समय आगे पीछे रहता कि कहीं कारीगर हाथ से न निकल जाये . . .हजार, दो हजार, पांच हजार जितना चाहो एडवांस ले लो। कोई मनाही नहीं—लेकिन हरीश में एक विशेष गुण यह था कि उसने रुपये पैसे के मामले में कभी अपनी नीयत खराब नहीं की थी। कभी कपड़ों के लिए एडवांस ले लिया तो दो चार महीनों में कटवा दिया—एक बार सैकंड हैंड जावा मोटर साइकिल खरीदी . . .उसके लिए एडवांस लिया लेकिन ओवर टाइम काम करके चार महीने में ही हिसाब चुकता कर दिया . . .हरीश का मालिक इस बात से और भी अधिक खुश था वर्ना आजकल के कारीगर तो एडवांस को भी अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझकर पी जाते हैं।

अब तक हरीश के जीवन में काफी लड़कियां आ चुकी थीं जिनसे चार छः महीने या अधिक से अधिक एक बरस तक उसका इश्क चला और फिर वह, उनसे इस प्रकार पीछा छुड़ा लेता जैसे एक ही भोजन खाते खाते आदमी उकता जाये और स्वाद के डिश बदल ले।

लेकिन यह सुनीता . . .!! हरीश को नम्बर तो मालूम नहीं था, कौन से नम्बर की लड़की थी, हां यह लड़की उसे पसंद बहुत आई थी। सुनीता के पिता किसी सरकारी विभाग में नौकर थे . . .तबदील होकर यहां आए थे और जिस कमरे में हरीश रहता था बिलकुल उसके सामने वाला घर उन्होंने किराये पर लिया था।

हरीश ने पहले ही दिन सुनीता को देखा था तो उसकी आंखों में बिजली सी कौंध गई थी—सचमुच बिजली के कौंधे से कम नहीं थी। सुनीता के घराने का रहन सहन और रख रखाव उस मुहल्ले के रहने वालों की अपेक्षा ऊंचा था। सुनीता ने आते ही कालिज में दाखिला ले लिया था . . .वह रोजाना सुबह तंग मुहरी का पाजामा कुर्ता और दुपट्टा या शलवार कमीज और दुपट्टा या कभी कभी सादे से रंग की साड़ी बांधे घर से निकलती—नौकर उसकी लाल रंग की चमकदार लेडीज़ साइकिल निकालता और जब वह साइकिल पर सवार होकर निकलती तो हरीश को लगता जैसे वह उसके दिल पर से गुजर गई हो और उसकी साइकिल के पहिये रबड़ के न हों बल्कि उनमें तेज धार वाली छुरियां लगी हों।

शुरू शुरू में तो हरीश ने अपने बढ़िया से बढ़िया कपड़े पहनकर, बालों को विशेष स्टाइल से संवार कर सुनीता को रिझाने का प्रयत्न किया था—लेकिन सुनीता तो जैसे पत्थर की बनी हुई थी . . .उसकी ओर नजर उठाकर देखना तो एक ओर उसके होठों पर मुस्कराहट नाम तक की कोई चीज न आती थी और सुनीता की इस उपेक्षा ने हरीश के दिल में एक 'हठ' सी उत्पन्न कर दी थी कि वह किसी प्रकार भी सुनीता को अपना ले . . .उससे घनिष्ट हो सके . . .सामीप्य प्राप्त कर ले।

इस बारे में हरीश ने सब से पहले यही सोचा था कि सुनीता के घराने से सम्बन्ध स्थापित किए जायें . . .लेकिन सुनीता के पिता का रोब भरा चेहरा देखकर उसका उत्साह ठंडा पड़ जाता था . . .उसकी मां तो कभी नजर ही न आई थी . . .घर में सिवा नौकर के और कोई था भी तो नहीं . . .सुनीता का कोई भाई भी तो नहीं था जिससे वह दोस्ती गांठने का प्रयत्न ही करता।

फिर उसे एक युक्ति सूझी . . .उसने सुनीता के नौकर पर डोरे डालने आरम्भ किए . . .एक दो बार जब नौकर बाजार जा रहा था उसने नौकर को मोटर साइकिल पर लिफ्ट दी . . .फिर एक दिन एक अच्छे स्टैंडर्ड के रैस्टोरैंट में ले जाकर कॉफी पिलवाई . . .और नौकर मोम के समान पिघल गया।

फिर एक दिन जब हरीश अपने मतलब की बात पर आ ही गया तो नौकर कांपकर खड़ा हो गया।

'नहीं . . .नहीं . . .साहब . . .यह बात अपने बस की नहीं . . .बड़े साहब को पता चल गया तो वह मुझे जेल में सड़वा देंगे— और सुनीता मेम साहब उन्हें बताए बिना मानेंगी नहीं।''

'देखो कल्लू'' हरीश ने गम्भीरता से कहा, 'पहली बात तो यह कि तुमसे कितनी बार कहा, मुझे साहब मत कहा करो . . .मैं ऊंच-नीच,नौकर-मालिक-किसी भी बात को नहीं मानता . . . दूसरी बात यह कि तुम्हारी छोटी मेम साहब के बारे में मेरे मन में कोई पाप नहीं—प्यार तो देवी देवताओं ने भीकियाहै—मैं इस दुनिया में अकेला हूं, हजारों की आमदनी है मगर कोई देखभाल करने वाला नहीं . . .लोग मेरे रुपये और रहन-सहन को देखकर अपनी ऐसी-ऐसी लड़कियां मेरे सिर मंढ़ना चाहते हैं जिन्हें कोई मुंह लगाना भी पसन्द न करे। मैं चाहता तो अब तक दस बार शादी कर चुका

मदहोश

होता . . .लेकिन मुझे एक ऐसी ही सुशील और घरेलू लड़की की जरूरत थी जैसी सुनीता है . . .बस, मैं ने उसे मन में बसा लिया है—और याद रखो, अगर सुनीता मुझे नहीं मिली तो . . .मैं उसके नाम चिट्ठी छोड़कर फांसी का फंदा लगाकर मर जाऊंगा।''

आखिरी शब्द बोलते-बोलते उसकी आंखें भी भीग गई थीं, आवाज भी भर्रा गई थी। कल्लू हरीश की एक्टिंग से प्रभावित हुए बिना न रह सका था। उसने सहानुभूति से हरीश की ओर देखकर कहा—

''साहब, अगर आप सचमुच छोटी मेम साहब से इतना ही प्यार करते हैं तो मालिक से बात क्यों नहीं करते? हर पिता को अपनी बेटी की शादी की चिन्ता होती है—अच्छे लड़कों की आजकल वैसे ही कमी है . . .आपके पास तो सब कुछ है। रुपया पैसा है, शक्ल सूरत है . . .रहन सहन है . . .।''

'नहीं कल्लू'' हरीश ने दिलीप कुमार के स्वर की नकल करते हुए कहा, 'मैं जब तक सुनीता का दिल न जीत लूं बात को आगे नहीं बढ़ाऊंगा . . . पति पत्नी कोई मशीन तो होते नहीं कि शादी की और व्यावहारिक जीवन आरम्भ हो गया—मैं तो पहले यह जानना चाहूंगा कि सुनीता भी मुझे पसन्द करती है या नहीं . . .।''

'लेकिन साहब . . .मैं . . .कल्लू हिचकिचाया।

'भई तुमने मेरी बात तो सुनी ही नहीं . . .मैंने यह एक पत्र लिखा है।'' उसने जेब में से सुन्दर लिफाफे में रखा सैंट की धीमी महक देता एक पत्र निकाला, 'इस पर मैंने अपना नाम तक नहीं लिखा . . .केवल अपने भावों को व्यक्त किया है . . .तुम यह पत्र इस तरह सुनीता की किसी पुस्तक में रख देना कि उसे तुम्हारे ऊपर सन्देह तक न हो . . .और अनजान बने रहो . . .आखिर वह कालिज में भी पढ़ती है, उसका कोई क्लासफैलो भी यह हरकत कर सकता है—जरूरी नहीं कि वह तुम पर ही सन्देह करे . . .।''

'बहरहाल कल्लू बड़ी मुश्किल से सहमत हुआ था। पहला पत्र सुनीता की पुस्तक में रखवाने पर उसने कल्लू को दस रुपये दिए थे जो कल्लू की आशा से बहुत अधिक थे . . .मगर पहले पत्र का सुनीता पर कोई प्रभाव नहीं हुआ था। कल्लू ने बताया था कि सुनीता ने वह पत्र देखा था और इस प्रकार फाड़ दिया था जैसे उसके लिए यह कोई साधारण सी बात हो।

फिर दूसरा पत्र, फिर तीसरा, चौथा, पांचवां . . .इसी तरह अब तक हरीश ने तीस पत्र सुनीता की पुस्तकों और कापियों में रखवाए थे। कल्लू ने बताया था कि अब सुनीता पत्र पढ़कर कुछ सोचती है . . .फिर बताया कि अब पत्र पढ़कर फाड़ती नहीं, मुस्करा देती है . . .फिर एक दिन उसने बताया कि आज सुनीता ने उसका प्रेम पत्रअपने गरेबान में रख लिया है . . .और उस दिन हरीश को लगा कि अब मछली आखिर जाल में फंस ही गई।

आखिरी पत्र उसने बड़े भावुक ढंग से लिखा था . . .उसने लिखा था, ''अब मेरे धैर्य की सीमा समाप्त हो चुकी है—मैं तुम्हें केवल पास से देखना चाहता हूं . . .आज्ञा हो तो दो बातें करना चाहता हूं . . .पसन्द हो तो तुम्हारे साथ घर बसाना चाहता हूं . . .हां सुनीता; आखिर हर लड़की और हर लड़के को कभी न कभी तो घर बसाना ही है—मैं तुम्हारे स्तर से किसी प्रकार भी नीचा सिद्ध नहीं हूंगा . . .तुम मुझे अपनी आशाओं के प्रतिकूल नहीं पाओगी। सुनीता! अगर कल शाम को कालिज से वापसी पर तुम मुझे पार्क में न मिलीं तो उस कामदेव की सौगन्ध खा कर कहता हूं जिसने अपने पहले ही तीर से मेरा हृदय छीन लिया है, मेरी लाश परसों सुबह तुम्हारे घर के दरवाजे पर पड़ी मिलेगी . . .और मेरे सीने पर चिट्ठी लिखी होगी जिसमें केवल तुम्हारी तस्वीर होगी और तुम होगी . . .(मैंने किसी प्रकार एक दिन बिना तुम्हें खबर पहुंचाए हुए अचानक कहीं से छुपकर कैमरे में तुम्हारी छवि चुराने की उदंडता की थी जिसकी क्षमा भी मांगता हूं)—हां सुनीता जवाहर पार्क में शाम को ठीक पांच बजे . . फव्वारे के पास . . .मैं प्रतीक्षा करूंगा।''

पत्र कल्लू ने पहुंचा दिया था . . .सुबह की प्रतिक्रिया कल्लू ने बताई थी कि सुनीता बहुत बेचैन नजर आ रही थी . . .उसने बार-बार पत्र को पढ़ा था और फिर बाद में जब सुनीता कालिज गई थी तो हरीश ने स्वयं अपनी आंखों से देखा था। उस दिन सुनीता ने सबसे अच्छा लिबास पहन रखा था। हरीश खुशी से उछल पड़ा था . . .उसे विश्वास था कि आज सुनीता उससे मिलने जरूर आएगी।

आज वह भी अपना सबसे बढ़िया लिबास पहनकर ठीक चार बजे कमरे से निकला था और मोटर साइकिल को जैसे हवा में उड़ाता हुआ वह जवाहर पार्क तक लाया था . . .बाहर मोटर साइकिल को छोड़कर वह ठीक चार बजकर बीस मिनट पर फव्वारे पर पहुंच गया था।

उसने सोचा था शायद सुनीता भी चन्द मिनट पहले ही पहुंच जाए मगर अब पांच बजकर पच्चीस मिनट हो रहे थे, हरीश की आस टूटने लगी थी . . .वह अपनी जगह जमा रहा—और फिर ठीक साढ़े पांच बजे हरीश का दिल जैसे उछलकर कंठ में आ गया और आंखें खुशी से चमक उठीं—हां, वह सुनीता ही थी जो बड़ी मस्ती से चलती हुई फव्वारे की ओर आ रही थी—हाथों में पुस्तकें दबी हुई थीं . . .बदन पर कुर्ता, चुस्त पजामा और दुपट्टा . . .उसकी चाल इतनी मधुर और आकर्षक थी कि हरीश के दिल की धड़कनें रुकने ही लगी थीं—और फिर . . .आज उसके चेहरे पर वह पहले की-सी कठोरता भी नहीं थी . . . बड़ी सुन्दर,कोमल और प्यार-भरी मुस्कान थी।

हरीश संभलकर खड़ा हो गया . . .अब उसके हाथ में वह लाकिट ही था और होंठों के कोने फड़फड़ा रहे

शेष पृष्ठ ४८ पर
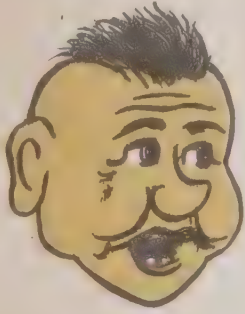
माचू पीचू

मूँछ का बाल

कहानी एवं चित्रांकन : रघुबीर सिहँ

जादूगर, शैतान महाराज को खुश करने के लिये पाँच आदमियों को बलि के लिये लाता है। और शैतान महाराज की पूजा करके कहता है -

शैतान महाराज की जय हो, कल मैं आपको खुश करने के लिये उन पाँच आदमियों की बलि दूँगा जो कि भारत देश के मशहूर आदमी हैं।
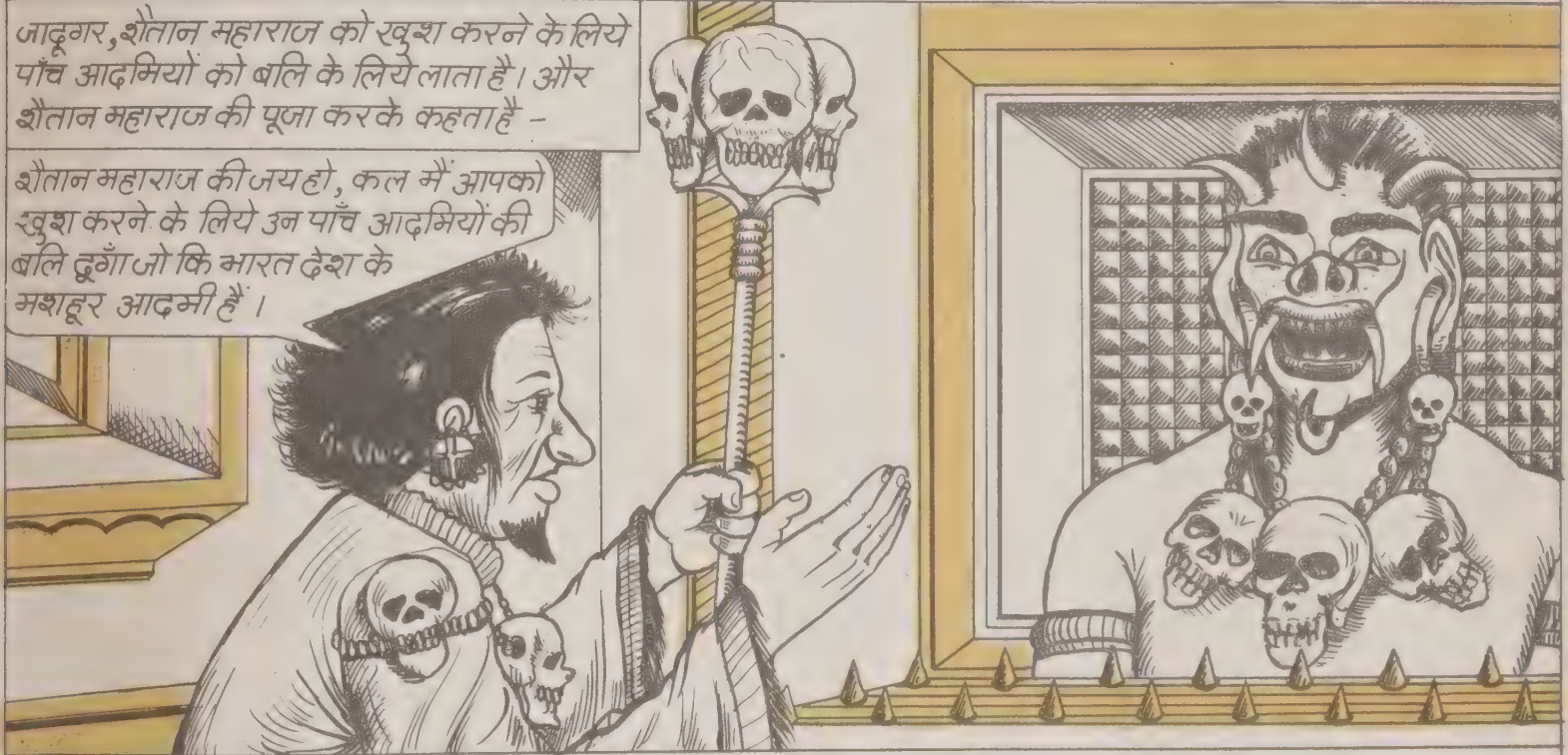
तभी शैतान महाराज की मूर्ति से आवाज आती है -

मेरी शक्ति से वो अपने नाम भूल जायेंगे। मैं उनके चेहरे भी बदल दूंगा ताकि कोई उनका कुछ ना बिगाड़ सके।
महाराज, यदि मैं उनको छोड़ भी दूँ तो वो पुलिस से कैसे बचेंगे?

तो क्या वो सब कुछ भूल जायेंगे?
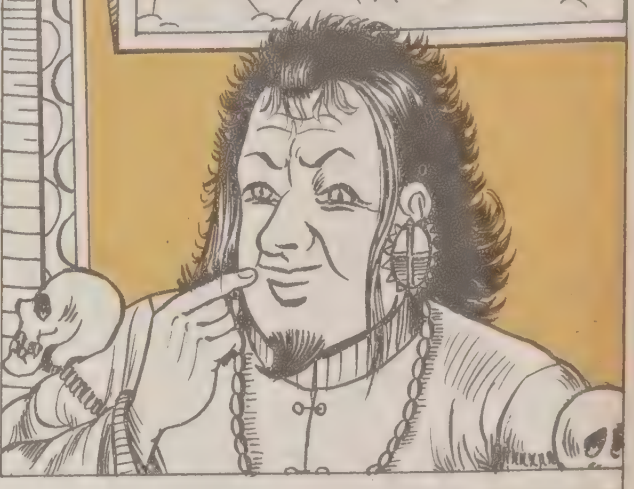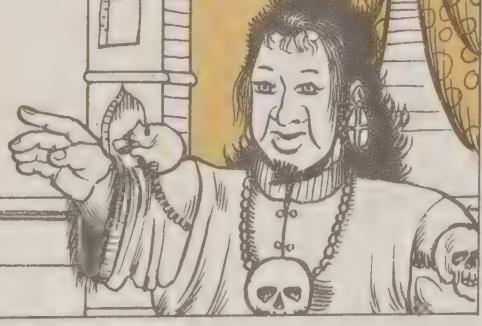
सिर्फ वो अपने पुराने नाम भूल जायेंगे और सब कुछ याद रहेगा। कारनामे आगे से भी ज्यादा खतरनाक और जूते खाने वाले करेंगे। यही तो मेरे प्रिय भक्तों की निशानी है। सुबह जब तुम उनको मिलोगे तो उनकी शक्लें और नाम बदल चुके होंगे और तुम उनके साथ मेरी प्रिय (शैतान की चेली) मिस कटर को भी पाओगे। तुम उनको वापिस छोड़ आना। यह मेरा आदेश है।
जो आज्ञा महाराज।
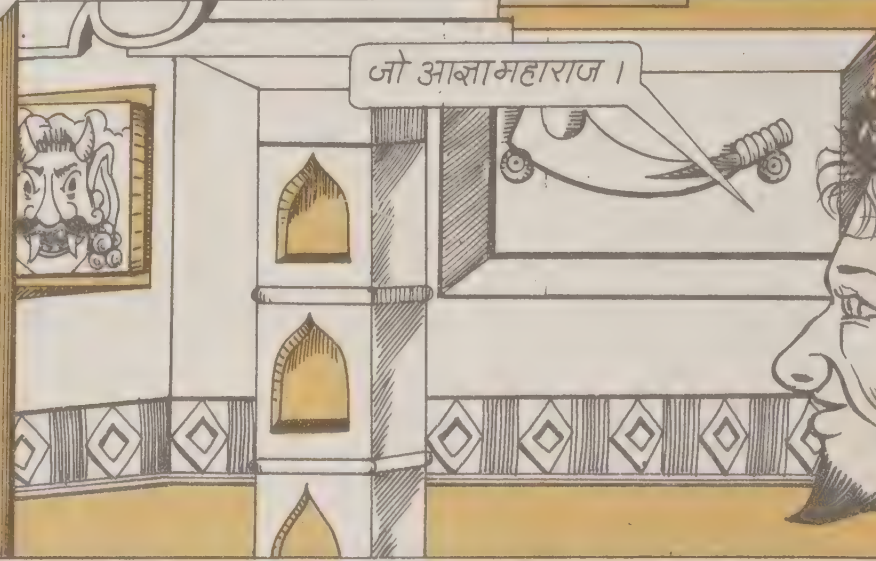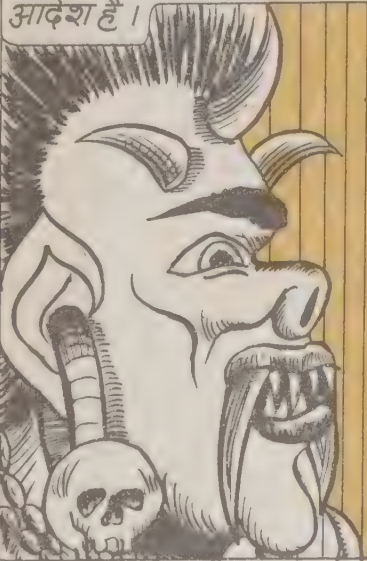
दूसरे दिन जादूगर यह देखकर हैरान हो जाता है कि जो व्यक्ति वह लाया था हैं तो वही, पर नये अंदाज में हैं और एक लड़की भी उनके साथ है। यह चमत्कार देखकर जादूगर कहता है -
महाराज आप हमारे मेहमान हैं।
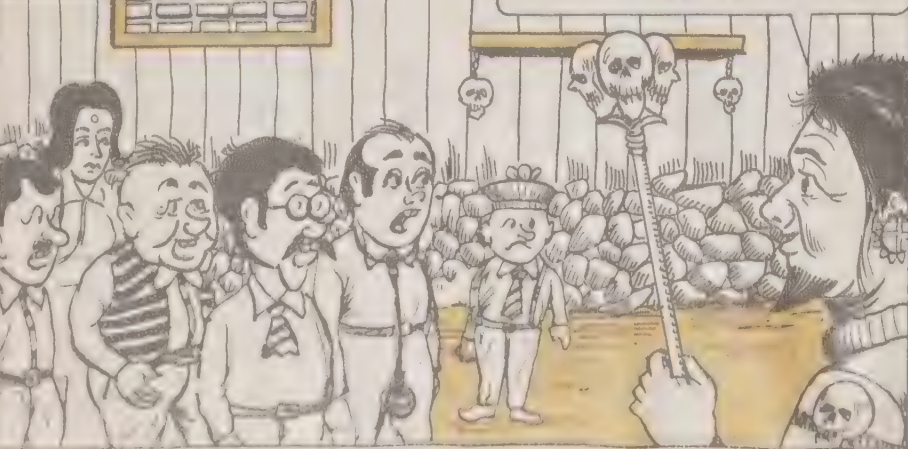
तभी माचू कहता है -
अबे कब्रिस्तान के कुत्ते, उल्टी खोपड़ी तमीज से बात करो।

जादूगर को गुस्सा तो आता है पर शैतान महाराज के आदेश की वजह से चुप रहता है।

जी मे आता है इन पाँचों को ब्राजील के कुत्तों के आगे डाल दूँ ताकि इन्हें पता चले कुत्ता किसे कहते हैं।

तभी पीचू बोल पड़ता है
अबे ओ टिन्डे नारियल जानता नहीं यह मि० माचू और मैं मि० पीचू और यह मेरे दोस्त डा० राम हैं। हम इन्हें प्यार से बोलोराम कहते हैं क्यूँ कि ये जिसका भी इलाज करते हैं उसका बोलोराम हो जाता है।
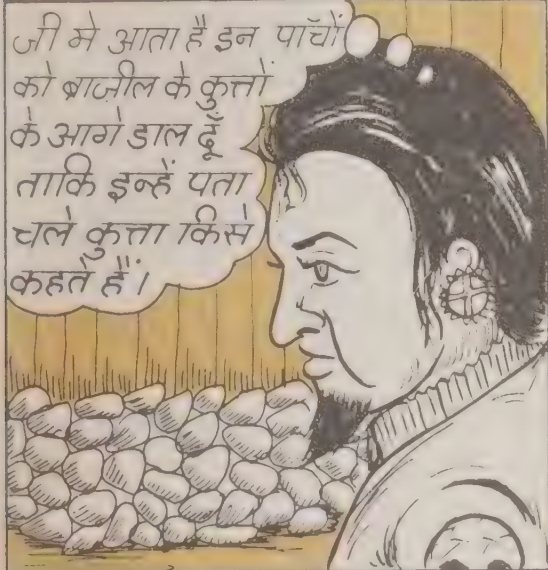
ये हैं मि० नासपीटा जिसका चाहे नास पीट देते हैं, कहें तो ये आपके खानदान का नासपीट दें

और यह हैं हमारे बाबा रघुबीर जी झिलमिल वालों का चेला विष्णु भक्त, मगर हम इन्हें प्यार से रगड़ू कहते हैं यह जिसको रगड़ा दें वह इसके रगड़े से बच नहीं सकता। कहो तो तुम्हें भी रगड़ दें।
मैं सब समझ गया और यह लड़की मिस कटर आज से आपकी सेक्रेटरी रहेगी।

इसी बीच में नासपीटा बोल पड़ता है
अबे उल्लू के चर्खे, कमीने, नीच, शकरकंद की औलाद अपने गले में तो खोपड़ी डाली है पर हमारे गले में यह हड्डी क्यूँ बाँध रहा है।
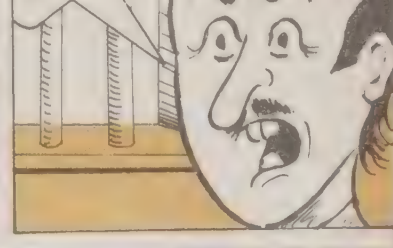
इसी बीच में बाबा रघुबीर जी का चेला रगड़ू बोल पड़ता है और नासपीटा को कहता है......
अबे ओ रावण की दसवीं खोपड़ी की औलाद, गधे, यह लड़की सेक्रेटरी के लिये हमारे साथ जा रही है न कि 18 बच्चों की माँ बनने के लिए, जो इसे हड्डी कह रहे हो।
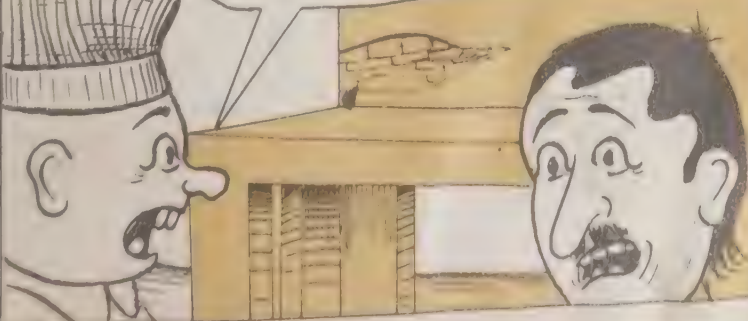
अब आप कुछ खा-पी लें, आप मेरे मेहमान हैं। बताईये क्या खायेंगें?
अबे हाथी की दुम, खिला सकते हो तो हमें मोती महल के मुर्गे खिलाओ।

इसी बीच उनकी सेक्रेटरी,जो,अभी-अभी बनी है बोल पड़ती है-
मेरे प्यारे माचू गोल-गप्पू बॉस, मैं वैष्णव भोजन खाती हूँ।
मिस कटर जी, आप मुझे कहें मैं जादूगर को कहकर लोधी होटल का वैष्णव भोजन मँगवा देता हूँ। आगे से आप मर्दों से बात किया करें यानी कि केवल मुझसे।
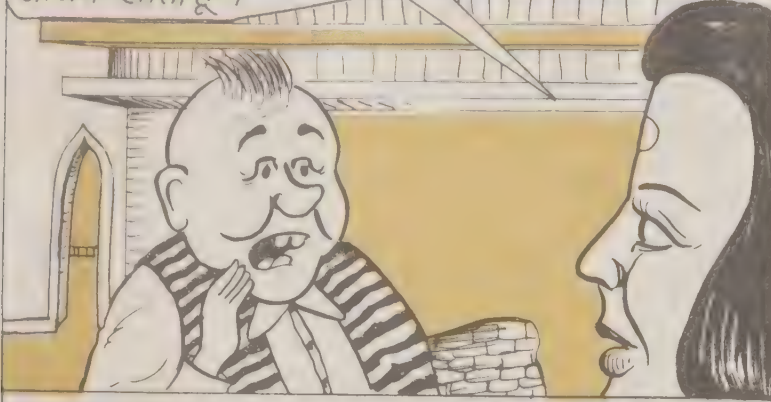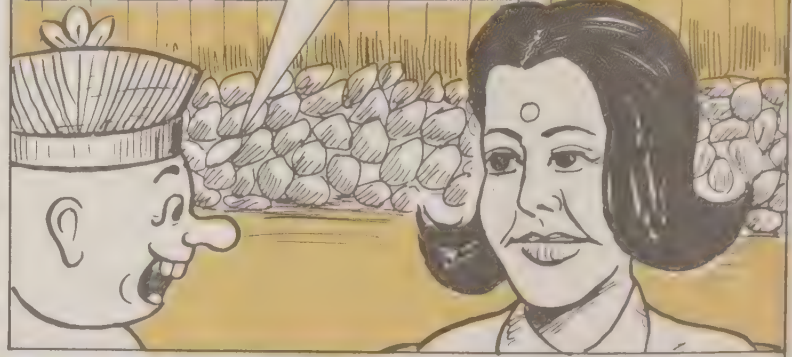
अबे ओ जानता नहीं मैं डा० बोलोरामहूँ।तेरा बोलोराम कर दूँगा। तुझे हम भिन्डी-तोरी नजर आते हैं बड़ा आया किंग कांग की औलाद।
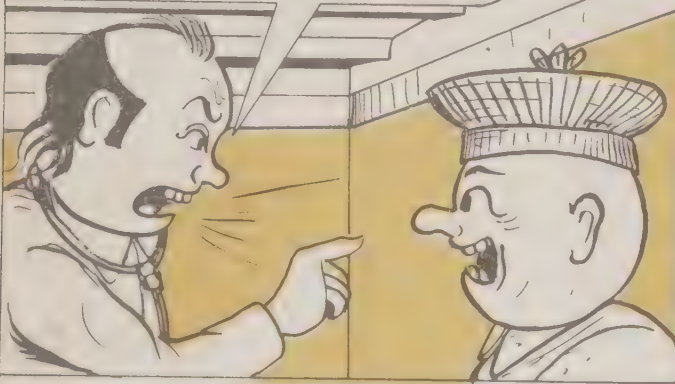
खाना खाने के बाद रात को जादूगर उन-से कहता है-
अब आप अपनी आँखे बंद करे। जब आप आँखे खोलोगें तो अपने-आप को अपने देश में अपने ही घर में पाओगे।

सुबह आँखे खुलने पर वह अपने-आपको अपने घर में पाते है और उठते ही माचू कहता है-
बोलोराम पीचू, बोलोराम सेक्रेटरी।
बोलो राम आप क्यों कहते हो?
हम गुडमार्निंग को बोलो राम कहते हैं।वैसे भी इसका मतलब है राम का नाम बोलो।
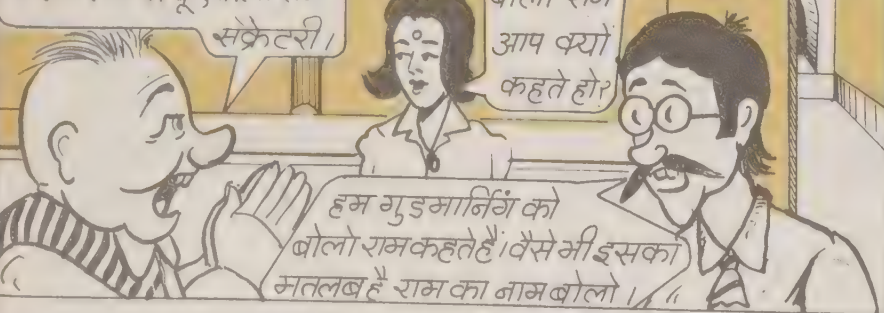
एक दिन सेक्रेटरी उनसे कहती है-
बॉसो, कुछ काम धन्धा करो।
चलो सेठ लखपत राय से कुछ रुपये उधार लेकर धंधा करते हैं।

सभी जब सेठ लखपत राय के पास जाते हैं तो क्या देखते हैं एक आदमी सेठ को अपनी मूँछ का बाल देते हुए कहता है-
सेठ साहब,आप मेरी मूँछ का बाल रख ले और मुझे एक लाख रुपये दे दे

पीचू बॉस हमारी तो मूँछ हैं नहीं। तुम्हरी ही मूँछ है

ये लो एक लाख रूपये, जब तुम मुझे एक लाख रूपये वापिस कर दोगे तो मैं तुम्हारी मूँछ का बाल वापिस कर दूँगा।
अबे ओ पीचू अपनी मूँछ का एक बाल उतार कर सेठ साहब को दे दे।
पीचू अपनी मूँछ का बाल उतार कर सेठ साहब को देते हुये कहता है......।
यह लीजिए मेरी मूँछ का बाल और मुझे भी एक लाख रूपये दे दीजिए
मैं इसका एक लाख रूपया नहीं दे सकता।
तो पचास हजार ही दे दीजिए।
माफ कीजिए। मैं इस बाल का पचास हजार नहीं दे सकता।
चलो फिर पच्चीस हजार ही दे दो।
माफ कीजिए। मैं इस का पच्चीस हजार भी नहीं दे सकता।
इस बाल में क्या खराबी है?
यह बाल कुछ टेढा और छोटा है।
अबे डा० बोलोराम, हमें पीचू की मूँछ का बोलोराम कर देना चाहिये।

डा० बोलोराम पीचू की मूँछ पकड़ कर खींचता है।
कमबख्त उखड़ ही नहीं रही। जरा मेरा औज़ार पकड़ाना
सब इसे लिटाकर इसके मुँह पर पाँव रखो और फिर औज़ार से इसकी मूँछ उखाड़ो।
अबे उल्लू के लट्टू मेरी मूँछ छोड़!
डा० भईया मत छोड़ना, गरीबी दूर करने का राज़ इसी मूँछ में है।
भईया मूँछ का बाल जड़ समेत बाहर आना चाहिये नहीं तो हमें रूपये नहीं मिलेंगे।
सभी पीचू को लिटाते हैं फिर डा० बोलोराम अपने औज़ार से मूँछ खींचता है।
उखाड़ दी! उखाड़ दी!
तुम्हारा बाप मरे, तुम्हारा बेड़ा गर्क हो, तुम कंगले हो कंगले ही रहो ये मेरा बाप है। मूँछ मेरी है पैसे मैं लूँगा।
मूँछ तेरी है तो क्या हुआ मूँछ के बाल तो सेठ साहब को हम दे रहे हैं तो पैसे भी सेठ साहब से हम ही लेंगे।
सेठ साहब इन गधों की बातों पर ध्यान मत दें ये लीजिए मूँछ और इनमें से जो बाल आपको पसंद आये रख लीजिए और मुझे एक लाख रूपये दे दीजिए।
माफ कीजिए मैंने आपको पहले ही कहा था कि मैं इस मूँछ के पैसे नही दे सकता मैं खानदानी मर्द की मूँछ के बाल के रूपये देता हूँ।
सेठ साहब आप तो खानदानी मर्द लगते हैं।
बॉसों इधर आओ, एक प्लान सूझा है।
क्यूँ ना हम सेठ साहब की मूँछ उखाड़ कर इन्हें दे दें, ताकि ये हमें एक लाख रूपया दे दें ये तो खानदानी मर्द हैं।
डा० बोलोराम सेठ की मूँछ को पकड़ कर जोर से खींचता है तो सेठ चिल्लाता हैं।
ये तो पीचू से भी सख्त हैं। चलो इसको लिटा कर इसके उपर भी पैर रखो।
हाये मर गया
अरे मुझे छोड़ दो भुखमरों, कंगालो, मैं भिखमंगों को उधार नहीं देता।
Raghubir Singh

हम उधार थोड़े ही ले रहे हैं। हम तो मूँछ का बाल देकर पैसे लेंगे।
डा० बोलोराम जैसे ही अपने औज़ार से सेठ की मूँछ को पकड़ कर खींचने लगता है तो सेठ चिल्लाने लगता है।
डा॰ बोलोराम, कर इसकी मूँछ का बोलोराम नहीं तो बाद में ये फिर अड़ँगा डालेगा कहेगा, पहले मूँछ का बाल लाओ। खींच दे- खींच दे।
मेरे बापो मुझे छोड़ दो मैं बिना बाल के ही तुम्हे एक लाख रूपये दे दूँगा।
हम सेठ, तेरी बातों में नहीं आने वाले, हम तुझे तेरी मूँछ देकर ही जायेंगे।
हाय
और डा० बोलोराम एक ही झटके से सेठ की मूँछ उखाड़ देता है।
हाय मर गया, तुम्हारा बेड़ा गर्क हो, हे हनुमान तू कहाँ है ?
अबे हनुमान को बाद में याद करना।
शायद अब इसे हनुमान की पूँछ का बाल चाहिए।
अबे सेठ इसमें से एक अच्छा-सा बाल छाँट कर हमें एक लाख रूपया दे दो।
मैं एक लाख रूपये नहीं दूँगा।
माचू उसकी दूसरी मूँछ को पकड़ कर कहता है।
अबे भुखमरे, कंगले, लीचड़, ये खानदानी मर्द की मूँछ के बाल नहीं हैं निकाल एक लाख, नहीं तो दूसरी मूँछ भी निकाल देंगे।
अबे इसने अब पैसे न दिये तो इसे हम शरीर से निकाल देंगे।
अच्छा मैं तुम्हें पच्चीस हज़ार रूपये दे देता हूँ।
लाओ पच्चीस हज़ार ही लाओ, 75 हज़ार हमने तुम्हें माफ किये।
सेठ रोता हुआ पच्चीस हज़ार रूपये दे देता है।
आपकी बड़ी मेहरबानी जो आपने 75 हज़ार माफ कर दिये।
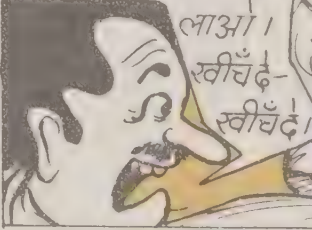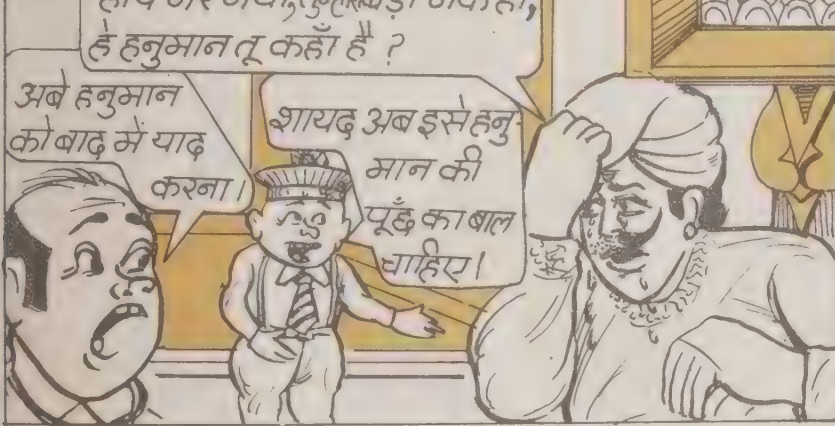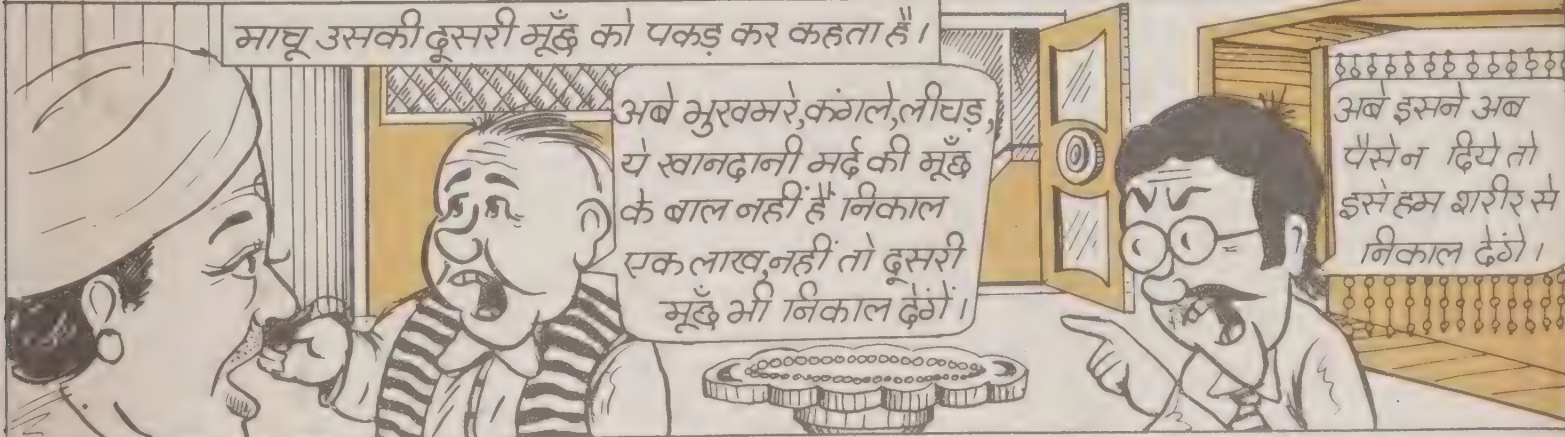
रूपये लेकर वे सब घर वापिस आजाते हैं।
अमाँ यार, हम सेठ की मूँछ भी ले आये हैं।
अब जब भी पैसों की जरूरत पड़ेगी एक बाल देकर पैसे ले आयेंगे।
ये तुमने बहुत अच्छा किया। मूँछों को भी नोटों के साथ सम्भाल कर रखदो।
तो भईया कुछ पैसे लेकर किसी ढाबे से रोटियाँ ले आयें।
तुम्हें पता नहीं ढाबे की औलाद, हम स्टैंडर्ड के होटलों का खाना खाते हैं। ढाबों का नहीं।
तो फिर अब कौन-से होटल में चलना है ?
जाओ. पहले DLZ की गाड़ी लेकर आओ।
एक मूछँ वाले पीचू सेठ साहब, अब आगे का क्या प्रोग्राम है ?
अमाँ यार, ज्यादा बक-बक मत किया करो। हमें ज्यादा बोलने की आदत नहीं है हमें अकबर होटल तक जाना है वहाँ डिनर करके वापिस आजाएंगे। इतनी-सी बात के लिये चिल्ला रहे हो
सभी डिनर खाकर घर में आकर सो जाते हैं। सुबह उठते ही माचू अखबार पढ़कर चिल्लाता है -
हाय मारे गये। हम सब का बोलोराम हो गया।
क्या बक रहा है ?
अरे रात को इसने जानीवाकर पी थी। जो अभी तक बोल रही है।
अबे जानीवाकर के चमचे बक नहीं रहा हूँ फरमा रहा हूँ कि सेठ लखपत राय का कल खून हो गया है। ये देख, अखबार पढ़कर पता चल जाएगा।
माचू बॉस और क्या लिखा है?
किसी से हाथापाई में सेठ लखपत राय की एक मूँछ गायब है। एक मूँछ कातिल की वहीं पर रह गई है। पुलिस कातिल की तलाश में है।
अभी वो ये सोच ही रहे होते हैं कि क्या किया जाये। तभी बाहर से आवाज़ आती है -
खबरदार जो कोई बाहर निकला या भागने की कोशिश की तो गोलियों से भून दिया जाएगा पुलिस इस मकान को पाँचों ओर से घेर चुकी है।
अरे भईया ये तो पुलिस की आवाज है लेकिन ये पाँचवी ओर कौन-सी हुई ?
अबे अक्ल बंद छत को पाँचवी तरफ कहते हैं।

इंसपेक्टर अंदर आकर जल्दी से इनके मकान की तलाशी लेने को कहता है। तलाशी के बाद इंसपेक्टर के पास एक सिपाही आकर कहता है -
साहब, कुछ रुपये और एक मूंछ मिली है।
अबे ये मूंछ किसकी है?
ये मूंछ सेठ लखपत राय की है।
हाँ माई-बाप, हम कल ही तो उसकी मूंछ उखाड़कर लाये हैं।
ले चलो इन सभी को थाने में और हवालात में डाल दो। सेठ लखपत राय के कातिल यही हैं।
इंसपेक्टर उन सब को थाने ले जाने के लिये जैसे ही बाहर आता है। तो बहुत से लोग उन्हें जूते व पत्थर मारने लगते हैं।
मारो-मारो, यही सेठ साहब के कातिल हैं।
ठहरो इन्हें सजा देना कानून का काम है।
जूतों से न मारो लोगों मेरे दिवानों को! इंसपेक्टर, मेरे बॉसों को बचाइये।
पुलिस स्टेशन
तभी इंसपेक्टर को वायरलैस से सूचना मिलती है।
उन्हें छोड़ दिया जाये। वे सब बेगुनाह हैं। असली कातिल भूपेंद्र बब्बू झिलमिल वाला पकड़ा गया है। उसने अपने जुर्म का इकबाल कर लिया है।
तुम सब बेगुनाह हो। असली अपराधी पकड़ा जा चुका है। आप आजाद हो।
अरे माल तो इंसपेक्टर ले गया। खायेंगे क्या?
इतने जूते खाये हैं और क्या खाओगे।
थैंक्यू मिस कटर, आफ्टर ऑल तुमने जवाँ मर्दों को बचा ही लिया।
और इंसपेक्टर का पर्स भी उड़ा लिया।
पर्स मैंने उड़ाया है मगर इस पर्स के नोट मेरे पास हैं।
मिस कटर ने लोगों के हमें पड़ने वाले 10 जूते भी इक्टठे कर लिये हैं।
हम जूते चोर बाज़ार में बेचेंगे।
समाप्त

स्पिन चौकड़ी और उसके बाद

नवीन चन्द

भारतीय क्रिकेट को टैस्ट-दर्जा प्राप्त हुए पचास से अधिक वर्ष बीत चुके हैं । इस अर्ध-शताब्दी के दौरान केवल सातवां दशक अथवा 67 से 77 तक का दशक ही ऐसी अवधि रही है जबकि भारतीय क्रिकेट का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दबदबा रहा और इसके पीछे मूल कारण था भारतीय स्पिन चौकड़ी की फिरकी गेंदों का जादू ।

स्पिन चौकड़ी का प्रथम पाया---इरापल्ली प्रसन्ना ने 10 जनवरी 1962 को इंग्लैंड के विरुद्ध मद्रास टैस्ट में—प्रवेश किया । प्रथम टैस्ट से उसका प्रदर्शन कोई अच्छा नहीं रहा ।

प्रथम पारी में उसे कोई विकेट नहीं मिला जबकि दूसरी पारी में केवल एक—वह भी था विकेट कीपर मिलमैन का । इसके बावजूद उसे वेस्ट इंडीज के आगामी दौरे के लिए चुन लिया गया जहां उसे केवल एक टैस्ट (किंग्सटन) में खेलने का मौका मिला और उसने पचास ओवरों में 122 रन देकर सर्वाधिक तीन विकेट लिए ।

पोलियो पीड़ित भगवत चन्द्र शेखर ने 21 जनवरी 1964 को इंग्लैंड के विरुद्ध बम्बई में टैस्ट मैचों में प्रवेश किया ।उसने प्रथम पारी में चार व दूसरी पारी में एक विकेट लिया । इसके बाद शृंखला की अन्य चार पारियों में वह केवल पांच विकेट उखाड़ने में सफल हुआ पर उसकी

भ्रमरी गेंदबाजी पर चयनकर्ताओं को विश्वास था अत: आस्ट्रेलिया के विरुद्ध आगामी शृंखला के दौरान उसे दूसरे व तीसरे टैस्ट में खिलाया गया । दूसरे टैस्ट की दोनों पारियों में उसने चार-चार विकेट लिए ।

आफ स्पिनर वेंकटाराघवन ने मद्रास में न्यूजीलैंड के विरुद्ध 27 फरवरी 1965 को टैस्ट कैप प्राप्त की । उस शृंखला में उसने 21 विकेट उखाड़े । प्रथम शृंखला में इतनी विकेट लेने का उसका भारतीय रिकार्ड अभी तक अमिट है ।

इसी शृंखला के चौथे टैस्ट में वेंकट ने 72 रन देकर आठ विकेट उखाड़े जो टैस्ट क्रिकेट में उसका सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन है ।

वाम हस्त स्पिनर बिशन बेदी 1966 में यकायक प्रकाशमान हुआ और उसी वर्ष के अन्तिम दिन कलकत्ता टैस्ट में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध उसे चांस भी मिल गया । उसने

वेस्ट इंडीज की एकमात्र पारी में दो महत्व विकेट बूचर एवं लायड को आऊट किय अगले मैच में बेदी ने एक व चार वि (बायने, कन्हाई, लायड व नर्स) उखाड़ टैस्ट क्रिकेट में अपने पांव जमा लिए ।

स्पिन चौकड़ी के पूरा होने पर इनमें सामान्यता तीन खिलाड़ी लगभग प्रत्येक टै में खेलते रहे । कम से कम दो तो प्रत्येक टै में खेले और बरमिंघम 1967 में इंग्लैंड के विरु चारों एक साथ प्रथम एवं अंतिम बार खेले

इन चारों का भारतीय आक्रमण में कित एकाधिकार रहा है यह साथ के चार्ट से प चल जाएगा । चार शृंखलाओं में 90% अधिक विकेट इनकी झोली में गिरे ।

जिस प्रकार चारों का उदय एक स हुआ था उसी प्रकार चारों लगभग एक स टैस्ट मैदान से विदा हो गए । इनके स्थ पर कपिल, दोषी तथा एक-दो शृंखलाओं शिवलाल यादव ने भारतीय आक्रमण पैनापन प्रदान किया पर अब सब कुछ चूक ग लगता है । वेंकटराघवन की वापसी भारती स्पिन को कितना आधार प्रदान कर पाएगी य तो वेस्ट इंडीज का दौरा ही बताएगा ।

स्पिन चौकड़ी का प्रदर्शन

वर्ष	विरुद्ध	स्थान	टैस्ट	कुल विकेट गिरे	चौकड़ी का भाग	प्रतिशत
1966-67	वे. इंडीज	भारत	3	39	32	82.05
1967	इंग्लैंड	इंग्लैंड	3	36	33	91.66
1967-68	आस्ट्रेलिया	आस्ट्रे.	4	62	30	48.38
1968	न्यूजीलैंड	न्यू जी.	4	69	40	57.97
1969	न्यूजीलैंड	भारत	3	55	46	83.63
1969	आस्ट्रेलिया	भारत	5	69	59	85.50
1971	वेस्ट इंडीज	वे. इं.	5	68	48	70.58
1971	इंग्लैंड	इंग्लैंड	3	48	37	77.08
1972-73	इंग्लैंड	भारत	5	75	71	94.66
1674	इंग्लैंड	इंग्लैंड	3	24	15	62-50
1974-75	वे. इंडीज	भारत	5	68	51	75.00
1976	न्यूजीलैंड	न्यूजी.	3	40	27	67.50
1976	वे. इंडीज	वे. इं,	4	50	46	92.00
1976	न्यूजीलैंड	भारत	3	55	50	90.90
1976-77	इंग्लैंड	भारत	5	73	64	87.67
1977-78	आस्ट्रेलिया	आस्ट्रे	5	64	67	71.28
			63	925	716	77.40

विभिन्न देशों के विरुद्ध लायड का प्रदर्शन-एक नजर में

देश का नाम	टैस्ट	पारी	नाबाद	सर्वाधिक	कुल रन	औसत	शतक	अर्धशतक
इंग्लैंड	29	45	3	132	1865	44.40	5	11
आस्ट्रेलिय	20	36	3	178	1685	51.06	5	9
न्यूजीलैंड	8	14	0	44	234	16.71	—	—
भारत	19	33	2	242	1611	51.96	4	8
पाकिस्तान	11	18	2	157	606	36.86	1	2
कुल :—	87	116	10	242	6001	44.12	15	30

नोट :— आंकड़े दूसरे टैस्ट की समाप्ति तक पूर्ण हैं।

लायड कितना आक्रामक है ?

धुंआधार बल्लेबाजी करने में वेस्ट इंडीज के तीन बल्लेबाजों का कोई सानी नहीं। यह हैं—उद्घाटक बल्लेबाज ग्रीनिज, विवियन रिचर्ड्स तथा कप्तान क्लाइव लायड—यदि जम जाए तो चौके-छक्के, पेस-स्पिन सब-बेमानी— बेमतलब हो जाते हैं। विशेष तौर से संकट की नाजुक घड़ी में तो लायड हावी हो रहे गेंदबाज को भी ऐसे धुन देता है जैसे फैस्टिवल मैच खेल रहा हो।

लायड के साथ सबसे बड़ी समस्या है जमने की। वह सामान्यता जमने के पूर्व ही किसी साधारण सी गेंद पर आउट हो जाता है। आंकड़े गवाह हैं कि वह 146 पारियों में केवल तीस बार पचास की संख्या को छू सका है और इन तीस पारियों में से पंद्रह बार शतक बना पाया है।

पोर्ट आफ स्पेन में भारत के विरुद्ध दूसरे टैस्ट की प्रथम पारी में वह बल्लेबाजी करने उस नाजुक मौके पर उतरा था जब मात्र एक रन पर तीन मुख्य बल्लेबाज पेवेलियन लौट चुके थे। लायड बिल्कुल नहीं घबराया। उसे अपने बल्ले पर पूर्ण-विश्वास था। उसने 'आक्रमण का जवाब आक्रमण' की नीति अपना कर भारतीय गेंदबाजी की धार को समाप्त कर दिया। 15 चौके व दो छक्के उसके करामाती बल्ले की ताकत के परिचायक हैं।

आउट होने के पूर्व लायड ने दो कीर्तिमान और स्थापित कर दिए उसने न केवल निजी छह हजार रन पूरे किये बल्कि भारत के खिलाफ कप्तान के तौर पर एक हजार रन पूरे करने वाला विश्व का पहला बल्लेबाज बनने का सौभाग्य प्राप्त किया।

टैस्ट क्रिकेट में केवल 13 बल्लेबाज छह हजार से अधिक रन बना पाये हैं जिसकी तालिका संलग्न है। जहां तक कप्तानी का प्रश्न है, उसने 51 टैस्टों में 3719 रन बनाए हैं। कप्तान के रूप में उससे अधिक रन केवल आस्ट्रेलियाई कप्तान ग्रेग चैपल ने (4123 रन) बनाए हैं। सम्भवतः इस श्रृंखला में ही यह रिकार्ड भी टूट जाए।

टैस्ट क्रिकेट में छह हजार रन

खिलाड़ी का नाम	देश	टैस्ट	रन
बायकाट	इंग्लैंड	108	8114
सोबर्स	वे. इंडीज	93	8032
काउड्रे	इंग्लैंड	114	7624
गावस्कर	भारत	87	7438
हैमंड	इंग्लैंड	85	7249
ब्रैडमैन	आस्ट्रेलिया	52	6996
लेन हटन	इंग्लैंड	79	6971
बैरिंग्टन	इंग्लैंड	82	6806
चैपल	आस्ट्रेलिया	81	6680
कन्हाई	वे. इंडीज	79	6227
हार्वे	आस्ट्रेलिया	79	6149

एक लघु कथा

व्यवस्था

—आजाद रामपुरी.

पुलिस दरोगा ने पहले तो चार- छै थप्पड़ रसीद किये फिर वह भीड़ में धक्का-मुक्का खाते हुये साइकिल चोर की कमीज के कालर को पीछे से पकड़ उसे घसीटते हुये थाने के अन्दर ले गया। पब्लिक के क्रोध को शांत करने की गरज से अपनी ड्यूटी की मुस्तैदी दिखाते हुये ''साले की चमड़ी में भुस भरवा दूंगा'' कह कर दो-चार जमकर धोलें जमा दीं और पब्लिक को वहां से चले जाने का निवेदन किया। जनता दो-चार मिनट में तितर-बितर हो गई।

चोर के साथ ही दरोगा जी ने सहानुभूति दिखाते हुये साइकिल मालिक को भी अन्दर बुलाया। औपचारिकतायें पूरी कीं। साइकिल थाने में जमा की और उसे दूसरे दिन अदालत में आने को कहा।

जनता ने जब तीसरे दिन उस साइकिल चोर को पहले के स्थान पर मूछें ऐंठते हुये देखा तो आंखें फटी की फटी रह गईं। उधर साइकिल वाले की साइकिल अभी भी थाने में जमा है। चार सौ रुपये वकील हड़प चुका है और अब दरोगा जी को पटा कर साइकिल छुड़ाने के लिये थाने के चक्कर लगा रहा है।

प्र० : क्या शराब पीने का प्रभाव मनुष्य के मस्तिष्क पर भी होता है ?

उ० : अक्सर शराब पीना और ज्यादा मात्रा में शराब पीने का प्रभाव दिमाग पर पड़ता है, इससे कुछ समय बाद दिमाग की डंडी सिकुड़ जाती है, यह डंडी ही है जिसका दिमाग और स्पाईनल कोर्ड के बीच का वह जरूरी सम्बन्ध है। शरीर का सन्तुलन, हृदय गति, ब्लड प्रेशर तथा साँस लेने पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

तीन दिशाओं के एक्सरे करने की आधुनिक तकनीक 'कैट' की सहायता से केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को शराबियों के दिमाग के बारीकी से अध्ययन का अवसर दिया है, जिससे इस सुकड़न के विषय में जानकारी प्राप्त हुई है।

न्यूरोलोजिस्ट नाई-शिन चू और उनके सहयोगी कैनेथ स्कायर और आरनल्ड स्टार ब्रेनस्टेम या दिमाग की डंडी का 23-70 वर्ष तक के 66 शराबियों में अध्ययन किया। इन शराबियों ने अपने जीवन में 8-35 वर्ष तक प्रतिदिन एक पाइंट से एक क्वाटर तक शराब पी थी। जब खोजकर्ताओं में इन लोगों के कानों की ध्वनि प्रतिक्रिया मालूम करने के लिये टन-टन की सी ध्वनि की, तो पता चला कि 40 प्रतिशत को साधारण व्यक्ति से कम सुनाई दिया।

खोजकर्ताओं ने फिर दिमाग की डंडी में बदलाव का पता लगाने के लिए 'कैटस्कैन' किये उन्हें 40 लोगों के दिमाग की अच्छी तस्वीर प्राप्त हुई जिससे मालूम हुआ कि इनमें से आधे लोगों के दिमाग की डंडी या 'ब्रेनस्टेम' के चारों ओर तरल पदार्थ भरा स्थान बहुत अधिक बढ़ा हुआ था। इस स्थान से खोज करने वालों ने अनुमान लगाया कि ब्रेनस्टेम सिकुड़ गई थी। इन लोगों को दो भागों में बांट दिया गया। वे लोग जिनके दिमाग की डंडी के चारों ओर का स्थान बहुत अधिक बढ़ गया था, और जिनका काफी तौर से बढ़ गया था।

यह बात तो बहुत पहले से ज्ञात है कि शराब पीने के प्रभाव से न्यूरोलोजी की बहुत सी समस्याओं में ब्रेनस्टेम की खराबी दिखाई देती रही है। और यह भी पता चला है कि जब ऐसी खराबी उत्पन्न होती है तो दिमाग और स्पाईनल कोर्ड के नरव सम्बन्ध कुछ टूट से जाते हैं जिसके कारण दिमाग तक संदेश पहुंचने में समय अधिक लगने लगता है। परन्तु इसकी खोज अभी पूरी तौर से नहीं हो पाई है। फिर भी यह निश्चित है कि शराब का ब्रेनस्टेम पर अत्यन्त बुरा प्रभाव पड़ता है।

प्र० : क्या मनुष्य दो काम साथ-साथ आसानी से कर सकता है।

उ० : बेशक अगर हम ऐसे दो कार्य साथ करें जो दिमाग की विपरीत दिशाओं से संचालित हों। दक्षिणी केलिफोर्निया के एक मनोवैज्ञानिक ने दिमाग के हिस्से के कन्ट्रोल के संदर्भ
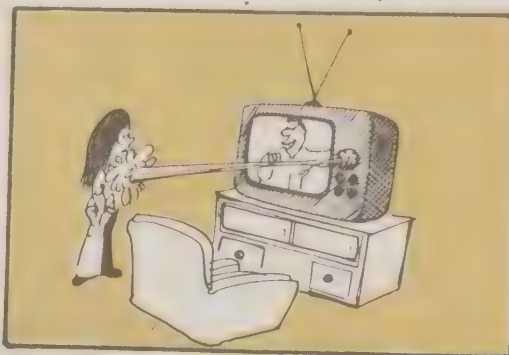
में इस बात का अध्ययन किया है। उदाहरण के लिए, दायें हाथ से काम करने वाले व्यक्ति, जोर से पढ़ने और बायें उंगली से मेज पर टैप करने में ज्यादा चुस्त होते हैं बनिस्वत जोर से पढ़ने और दायें हाथ की उंगली से मेज पर टैप करने में क्योंकि दायें हाथ का हिलना डुलना दिमाग के बायें भाग द्वारा कन्ट्रोल किया जाता है और दायें हाथ का प्रयोग करने वालों में वही भाग बोलने पर भी कन्ट्रोल करता है। इसी प्रकार बायें हाथ का कार्य दिमाग के दायें भाग द्वारा कन्ट्रोल किया जाता है। इस कारण वह बोलने में बाधा नहीं डालता। चुईंग गम खाने और चलने के विषय में क्या ख्याल है ? बेशक इसमें कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होती क्योंकि दोनों काम दिमाग के दोनों अलग-अलग भागों द्वारा बड़ी होशियारी से संपन्न किए जाते हैं।

प्र० : क्या पक्षियों के झुंड विशेष आकार में आकाश में उड़ने पर अधिक फासला तय करते हैं ?

उ० : पक्षी विशेष आकार बनाकर क्यों उड़ते हैं क्योंकि वायुगति के अनुसार यह अधिक कार्यक्षम है। पच्चीस का एक झुंड एक निर्धारित शक्ति देने पर 70% प्रतिशत से अधिक दूरी कर सकता है बनिस्वत एक अकेले पक्षी के जब पक्षी अपने परों को नीचे की ओर फड़फड़ाता है तो ऊपर उठाने वाली एक वायु उसके के सिरों के निकट उत्पन्न होती है। के खोजकर्ताओं के अनुसार विशेष आक उड़ता हर पक्षी अपने पड़ोसी द्वारा उत्प ऊपर उठाने वाली वायु का प्रयोग करत यही कारण है कि वह स्वयं उड़ने में कम का प्रयोग करता है। उनके इस प्रकार की पक्षियों के भीतर कोई विशेष बुद्धि होती, सिर्फ उड़ते समय वे इस प्रकार उड़ आराम महसूस करते हैं और आकार में स्थान चुनते हैं।

'पड़ोसी की उठन' पक्षियों को पड़ी में उड़ने से ही प्राप्त हो जाती है परन्तु आकार में उड़ने से किनारों पर उड़ते पक्षि अधिक सहायता बीच वाले पक्षियों को होती है। परन्तु जब ये पक्षी वी के आ में उड़ते हैं तो उठन की यह सहायता ल हर पक्षी को बराबर सी ही प्राप्त होती अगुआ पक्षी को पीछे वाले पक्षियों से अधिक रगड़ का सामना करना पड़ता है इसके बदले में उसे दोनों ओर के पक्षियों उत्पन्न उठन वायु का लाभ मिलता है और के किनारों के पक्षियों को केवल एक ओर ही ऊपर उठने वाली वायु मिलती है पर वायु आगे उड़ने वाले सारे पक्षियों के काफी शक्तिशाली होती है।

लाभदायक होने के लिए यह जरूरी है कि वी सिमट्री में ही हो, वी के एक दूसरी ओर से अधिक पक्षी भी हो सकते परन्तु यदि दोनों ओर कम से कम छः हों और उन्होंने अपने फासले ठीक कर रखे तो उठन वायु काफी मात्रा में सबको जाती है।

वायुयान फोरमेशन में उड़कर उत फायदा नहीं उठा सकते जितना पक्षी सकते हैं क्योंकि उनके पर मुड़ते नहीं पक्षी निरंतर अपने परों की शक्ल बदलते र हैं ताकि झुंड में हुई जगह की तबदीली का ल उठा सकें। वायुयान ऐसा नहीं कर स इसके अतिरिक्त पक्षियों के समान यह ल प्राप्त करने के लिए वायुयानों को खतरे करीबी पर उड़ना भी पड़ेगा।

क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल पिलपिल और
आम्हीं फूलन देवी
चूहे देख यह हखबार वाला सच कह रिया है ? लिख्या है कि डाकू फ़ूलन देवी ने पुलिस और चोफ मिनिस्टर के सामने आत्म-समर्पण कर दिया । फोटो भी छपी है ।
यह अखबार वाले झूठी खबरें छापते हैं । हंग्रेजी हखबार वाले हैं भाई इनको क्या पता कि फूलन देवी चण्डी का साक्षात अवतार है, उसको गौरमींट का बाप भी नहीं पकड़ सकता । पुलिस वाले तो उसके लिये ऐसे ही हैं जैसे बिल्ली के लिए चूहे ।
अगर उसका नाम "फूलन बेबी" होता तो अखबार वाले ऐसा न करते । उसका कसूर यह है कि वह देहाती है ।
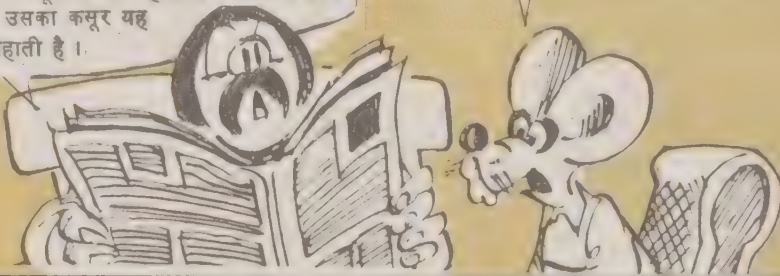
ह फूलन देवी के खिलाफ साजिश है । हंग्रेजी पढ़े लिखे ोग चण्डी में विश्वास नहीं रखते और यह बात तो उनको भी सहन नहीं हो सकती कि हमारे देहात की कोई बहन ह कर दिखाये जो शहरों की पढ़ी-लिखी लड़कियां नहीं कर सकीं ।
अब मुझे उजाला नज़र आ रहा है ।
ऐसे घोर संकट के समय हम चुपचाप नहीं बैठ सकते । हंग्रेजी हखबार वालों के फैलाये सफेद झूठ के अंधेरे में हिन्दुस्तान की भोली भाली जनता को गुमराह नहीं होने देंगे ।
फूलन के आत्म समर्पण के समय की जो फोटो छपी है वह कैसे छापी गयी होगी ? क्या फूलन ने गेस्ट कलाकार का रोल किया ?

यह तो बहुत आसान ट्रिक है । फ़ूलन देवी से मिलती-जुलती शक्ल की कोई लड़की ली होगी और उसे फूलन जैसे कपड़े पहना कर रिहर्सल करवाया गया होगा और फिर आत्म-समर्पण का ड्रामा करके पब्लिक को बेवकूफ बना लिया गया । हिन्दुस्तान की भोली जनता जिनका दिमाग बनस्पति घी खाकर पहले ही कमजोर हो गया है बहकावे में आ गयी । असली फूलन देवी चण्डी मां का अवतार है । उसे गिरफ्तार करने के लिए शिवजी जी को अपना तीसरा नेत्र खोलना पड़ेगा ।
यह गहरे भेद की बातें ट्विंकल-ट्विंकल लिटल स्टार गाने वालों की समझ में नहीं आयेंगी ।
इसे समझने के लिए गायत्री मंत्र जबानी याद होना चाहिए ।
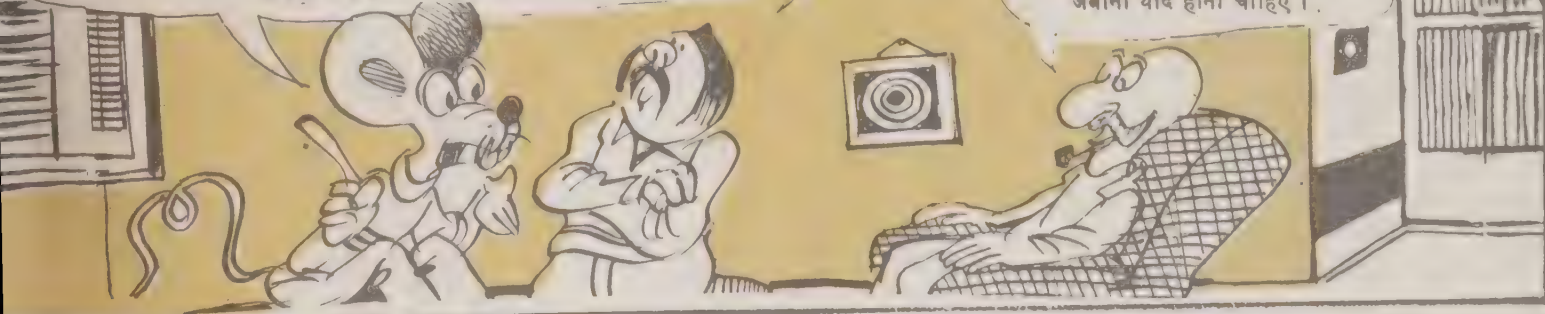
पुलिस थमारे जैसों को बेवकूफ बना सकती है, हमें नहीं । हमने गाम का देसी घी खा रखा है । यह दीवाना पढ़ने वाला भाई भी यह समझा होगा अब तक कि फूलन ने सरेंडर कर दिया है ।

अब यह बात तो हमारे सामने दिन के उजाले की तरह साफ हो गयी है कि जिसे पुलिस ने पकड़ा है वह असली फूलन देवी नहीं है । वह नकली है ।
असली फूलन देवी कहां है ? हमें असली फूलन की मदद करनी होगी । शहर वालों के षडयन्त्र के जाल को ऐसे ही तोड़ना होगा जैसे जासूस जेम्ज बांड दुश्मनों के चक्रव्यूह को तोड़ता है । शहर के अंग्रजी स्कूलों में पढ़े-लिखे लोगों का घमंड तोड़कर ग्राइडर बनाना है ।

असली फूलन देवी से सम्पर्क स्थापित करना तो आसान नहीं है। क्योंकि हमें उसके ऐडरेस का पता नहीं है। पिन कोड नम्बर का भी पता नहीं है। हम एक ही काम कर सकते हैं कि फूलन देवी की ओर से यहां पब्लिक रिलेशन आफिस खोल कर फूलन के सरेंडर के झूठे प्रचार का मुंह तोड़ जवाब दें।
हम लाखों पोस्टर छपवाकर रात ही रात में शहर दिल्ली की दीवारों पर चिपका देंगे और लोगों को बता देंगे कि असली फूलन आजाद है। सरकारी प्रचार के बहकावे में न आयें। यह महज प्रोपेगंडा है।
जब थम ऐसे करोगे तो जरूर फूलन को पता लग जाएगा कि उसके अनाम से शहर में किस तरह अपनी जान पर खेल उसकी सेवा कर रहे हैं और हो सकता है एक दिन आधी रात को ··

ठक ठक ठक ठक
हमारे दरवाजे पर दस्तक हो और हम सब हड़बड़ा कर उठ खड़े हों और धड़कते दिल से दरवाजा – खोलने पर···

डरो मत मैं फूलन देवी हूं। तुमने मेरी तरफ से जो काम किया उससे मैं बहुत खुश हूं। अब वह दिन दूर नहीं जब भारत में क्रांति आयेगी। वर्तमान पूंजीवादी सरकार का तख्ता ऐसे ही पलट जाएगा जैसे फाइनल में हमारी हाकी टीम का तख्ता पलटता है। फिर हमारा राज होगा। गरीब देहाती जनता का सच्चा राम राज।

भाई लोगों इब तो थमारी पांचों अंगुलियां घी में हैं, सिर कढ़ाई में और पैर चूल्हे में। फूलन देवी का भारत में एक छत्र राज हो जायेगा तो क्या होगा?

फिर आगे हमारी तरक्की के रास्ते खुल जायेंगे। फूलन देवी खुद प्रधान मंत्री बन जायेगी देख लेना अगर हम अपना प्रचार ठीक तरह से करेंगे तो जनता में विद्रोह की बारूद की बोरी भर सकते हैं। बस फिर एक दिन फूलन का नाम लेकर जलती बीड़ी का टोटा उसमें फैंकने भर की देर है, क्रांति की आग भड़क उठेगी। फूलन देवी फियेट कार में बैठ कर नम्बर वन सफदर जंग रोड की कोठी पर कब्जा कर लेगी। दूसरे दिन फूलन को प्रधान मंत्री पद की शपथ दिलाई जायेगी और फिर वह मंत्रिमंडल का गठन करेगी।
फूलन शायद मुझे गृहमंत्री पद सम्भालने के लिए कहे।

भाई जी थम यह कैसे कह रहे हो कि फूलन थम से ही गृहमंत्री पद सभालने के लिए कहेगी। वह मुझसे भी तो कह सकती है। मुझमें क्या कमी है?
फिर डिफेन्स मनीस्टर तो मुझे बनना ही पड़ेगा।
थम दोनों बड़े खुद गर्ज हो। गृहमन्त्री पद के लिए लड़ रहे हो मेरी बात तक किसी ने नहीं सोची। बोलो मेरा क्या होगा? मैं भी तो थमारे गैंग का मेम्बर हूं।
तुझे गृहमंत्री बना कर उसे भारत का भट्ठा बिठाना है? डंडा लेकर भैंस चराने में और गृहमंत्री पद सम्हालने में बोत फर्क है। गृहमंत्री वही बन सकता है जिसकी खोपड़ी में चिकनाई हो। चिकनाई की वजह से बालों की जड़ें फिसल जाती हैं और वह आदमी गंजा हो जाता है जैसे मैं हो गया हूं।

...हो सकता है कि फूलन देवी गृहमंत्री का पद मुझे देने के लिए तैयार हो जाये । थम दोनों को छोटी-मोटी मिनियस्टरियां देकर टरका दे।

भाई जी देखो यह चूहा हमारा ही माल खाता है और हमारे ही पेट पर लात मारने की योजना बना रहा है । हम दोनों भाइयों के जिन्दा होते हुए भी यह गृहमंत्री बनने के सपने देख रहा है ।

इससे पहले कि यह हमारी पीठ में नमक हरामी का छुरा घोंपे हम इसको अपने पैरों तले कुचल कर चिकन चू मीन बना देंगे ।
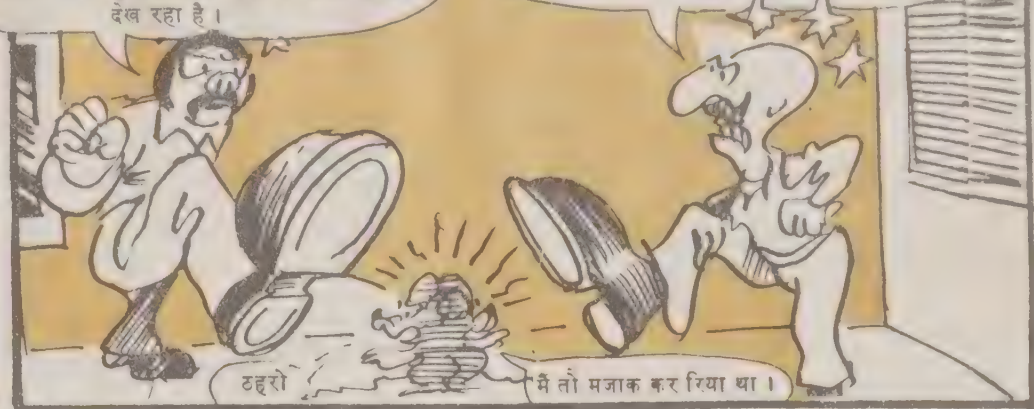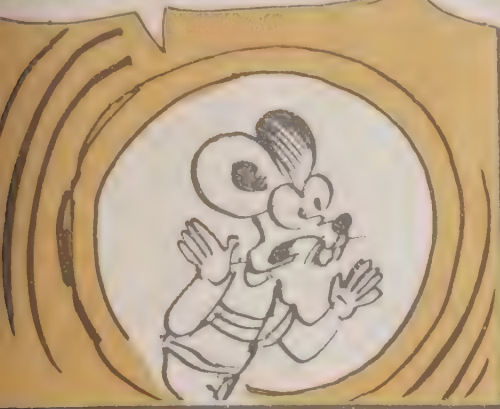
ठहरो

मैं तो मजाक कर रिया था ।

...मेरे लिए फूलन देवी खाद्य और आपूर्ति मंत्रालय दे दे तो भी वही काफी है । मुझे इससे जादा का लालच नहीं है । थम दोनों का दिमाग जादा गर्म हो रिया है । शार्ट सर्कट हो गया तो थमारे दिमाग के भूसे में आग लग सकती है । यह लो ठंडा-ठंडा एक-एक गिलास थूह हाफजा पियो ।

भाइयो जरा यह तो सोचो कि न फूलन देवी का पता है और न कोई प्रचार शुरू हुआ है । अभी क्रांति आने में बहुत देर है । कुर्सियों के लिए एक-दूसरे का सिर फाड़ने की बारी तब आएगी जब क्रांति सफल होगी । पहले हमें असली फूलन की मदद करने की योजना बनानी है ।

पोस्टर पढ़ते ही लोगों में तहलका मचना चाहिए ।

ठीक है हम आज ही पोस्टर का मसौदा तैयार करते हैं ।
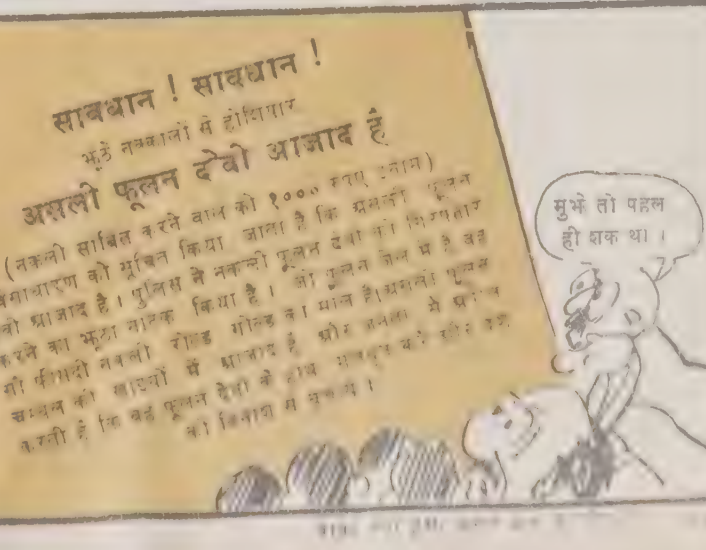
मनोहर नमनानी, अकोला : औरत मर्द के लिए हमेशा ही परेशानी का कारण क्यों बनती है ?

उ० : इसमें औरत का कसूर नहीं है। मर्द खुद ही इस परेशानी को मोल लेने के लिए लार टपकाता रहता है।

शाम गगनानी, अकोला : गरीब चन्द, आप हमेशा गरीबचन्द जी ही रहेंगे या कभी अमीर चन्द भी बनेंगे ?

उ० : जिस दिन आप श्याम से गोरे लाल बन जायेंगे।

प्र० : वक्त की ठोकर इन्सान को कब मिलती है ?'

उ० : जब इन्सान की नजर आसमान की ओर हो और वक्त रास्ते में पत्थर बनकर पड़ा हो।

शैलेश कुमार गगनानी, अकोला : आज कल एशियाई खेलों की चर्चा है। आपके ख्याल से एशियाई खेलों के आयोजन क्या जरूरी हैं। आर्थिक दृष्टि से।

उ० : अब तो ओलम्पिक खेलों की चर्चा करें। आर्थिक दृष्टि से कुछ भी हो इन खेलों के बहाने कुछ न कुछ निर्माण कार्य तो होता ही है। भागते चोर की लंगोटी ही सही।

मधुकर निलकंठ रुणाव चुटे, धुलिया, महाराष्ट्र : आजकल हर आदमी सच्चाई से दूर क्यों भागता है ?

उ० : नजदीक रह कर बीवी बच्चों को भूखों मरवाना है ?

मोहम्मद हुसैन भिश्ती, बीकानेर : गरीब चन्द जी अपनी इच्छाओं को कोई कैसे पूरा कर सकता है।

उ० : यह काम हमारे दिमाग का है। वह नींद में सपने दिखाकर यह इच्छायें पूरी करता है।

अशोक जोहर 'सांवरिया' देहरादून : गरीबचन्द जी, महबूबा की परेशानी कब नहीं देखी जाती ?

उ० : जब वह अपनी परेशानी में डूब कर आपको दाना डालना भूल जाती है।

प्र० : गरीब चन्द जी पीना किस उम्र से शुरू करना चाहिए ?

उ० : जिस उम्र में खून ठंडा होना शुरू हो जाये। उसे गर्म करने का कुछ उपाय तो चाहिए।

कृष्णा बरनवाल, भागा बाजार : मनुष्य जीवन में प्यार का क्या स्थान है ?

उ० : वही स्थान है जो खिचड़ी में अचार का है।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया, मन्डला : गरीब चन्द जी नेता परेशान नजर कब आता है ?

उ० : जब जनता बीच भाषण में से उठकर जाने लगती है।

अशोक जौहर 'गगन' देहरादून : गरीबचन्द जी यदि सब व्यक्ति शराफत की जिन्दगी जीना चाहें तो।
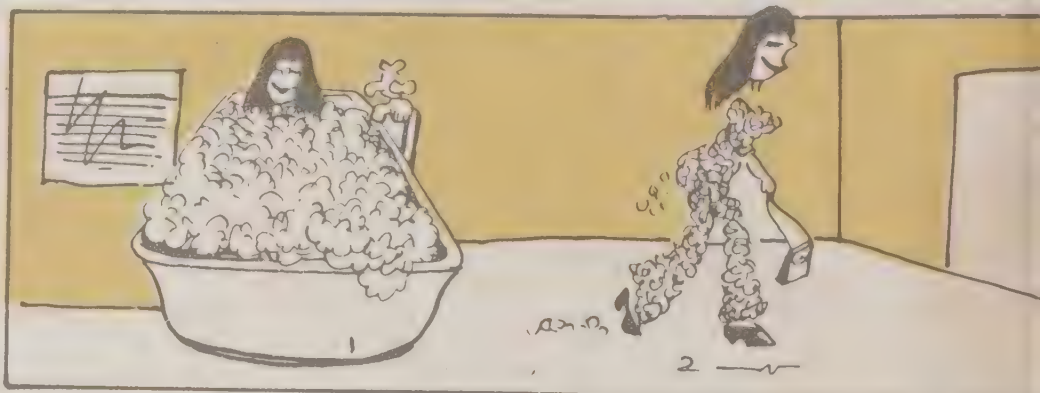
उ० : फिर शराफत की कोई कद्र नहीं होगी।

गुलशन पामर प्रदीप, मुक्तसर : धैर्य का बांध कब टूटता है ?

उ० : जब धैर्य ठेके पर बना हो और नकली सीमेंट लगा हो।

तजेन्द्र भाटिया, पोलो रोड : गरीब चन्द जी, इंसान के ठोकर लगकर गिरने और किसी की नजरों में गिरने में क्या फर्क है ?

उ० : ठोकर लगकर गिरने पर सिर पर चोट लगती है जिसकी पट्टी की जा सकती है—किसी की नजरों से गिरने पर दिल में चोट लगती है जहां मरहम पट्टी काम नहीं करती।

तजेन्द्र भाटिया, विजय नगर : गरीब चन्द जी, प्रेमी प्रायः सितारों को तोड़ लाने की बात क्यों कहते हैं ?

उ० : क्योंकि सितारों पर प्राइस टैग नहीं लगा है। सीधी अर्थशास्त्र की बात है।

गुरमीत सिंह मीता, नई दिल्ली : गरीब चन्द जी, मैं शराबी नहीं हूं। कोई पिला दे तो मैं क्या करूं ?

उ० : पीलो और लीडर फिल्म का गाना, गाना शुरू करो।

अजिन्द्र सिंह बुघ, शाहवरा : डियर गरीब जी, आदमी बेवफाई कब करता है ?

उ० : जब बेवफाई करने पर टोटा पड़ने बजाय नया टोटा मिलता है।

अशोक खुराना 'स्वीटी' कलानौर : दीवाना पहला अंक कब छपा था ?

अमावस की रात के बारह बजे छपना शु हुआ था। साल और महीना खुद दीवा कार्यालय वालों को मालूम नहीं है।

राहुल गोदीका, जयपुर : गरीबचन्द जी, कह हैं गंजा आदमी भाग्यशाली होता है, लेकि पिलपिल महाशय के साथ तो हमें कुछ अ ही नजर आता है इसका क्या कारण है ?

उ० : भाग्यशाली वह होता है जिसका सि कुदरती तौर पर गंजा हुआ हो। चप्पलें खाक

सिर गंजा करवाने वालों पर यह फार्मूला ला नहीं होता।

शिवकुमार गुप्ता, तलवाड़ा झील : आपने मे नाम के आगे तलवाड़ा झील के बजाय न दिल्ली दे दिया सो उसके लिए आप मांप मांगें या फिर सजा के लिए तैयारी करें।

उ० : आपको तो हमारा शुक्र गुजार हो चाहिये कि हमने आपको बगैर पार्लियामेंट क चुनाव जीते तलवाड़ा झील से नई दिल्ल पहुंचा दिया।

पाठकों से निवेदन

1. इस स्तंभ को मनोरंजक बनाने के लि पाठकों से प्रर्थना है कि वे घिसे-पिटे प्रश्न जै गरीब चंद जी आप गरीब क्यों हैं, अमीर क बनोगे। 'आपका नाम गरीब क्यों पड़ा आ न पूछें। विविधतापूर्ण मजेदार प्रश्न पूछें।
2. हर सप्ताह सर्वश्रेष्ठ प्रश्न का चयन किया जायेगा और सर्वश्रेष्ठ प्रश्न भेजने वाले क दीवाना के चार आने वाले अंक मुफ्त भेजे जायेंगे।
3. प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें, दीवाना में छपा कूपन चिपकाना जरूरी है।
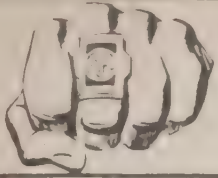
फैण्टम-जंगल शहर
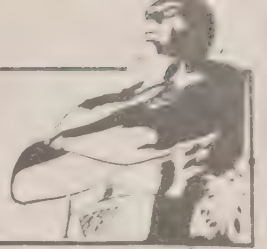
मैं एक जंगल के व्यक्ति ललोनी को ढूंढ़ रहा हूं। पर पहले जहर वाले दूध के बारे में—
उह—जहर नहीं—बेहोश करने वाली ड्रिंक —उह

जो वह कहता है सच है, मौके-फीन—सब गड़बड़ करने वाले ग्राहकों के लिए एक सी
तुम इसे बेहोश करने वाली कहती हो। मैं इसे मार डालने वाली कहता हूं। इसका फैसला हम बाद में करेंगे।

ललोनी कहां है ?
वह 'गुरू' नाम के आदमी के पास काम करता है—
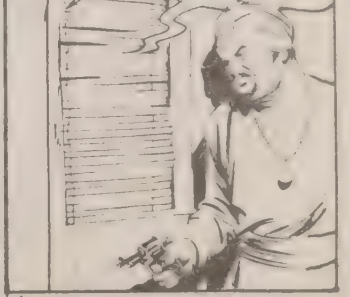
मि० वौंग मुझे यह जंगल के ठगों का राजा 'गुरु' कहां मिलेगा ?
मुझे पक्का नहीं मालूम—पर···
© 1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.

एक तेज चेतावनी की गुर्राहट
GRRRR
FALK & BARRY 1/24

ठाँय—
ठाँय—
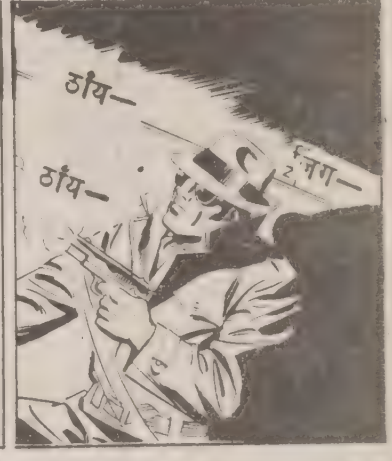
ब्लू ड्रेगन सैलून में।
ठाँय ठाँय···
FALK & BARRY 1/26

!!

मेरे हाथ से बन्दूक उड़ा दी, हो ही नहीं सकता।

मि० वौंग! वह तुम्हारा दोस्त 'गुरु' था न ?
जाओ डेविल! मैं समझा वह मेरा पीछा कर रहा है। 'गुरु' जंगल के ठगों का लीडर है तुम उसके पार्टनर हो ?
दोस्त ? उसने मुझे गोली मारने की कोशिश की थी।
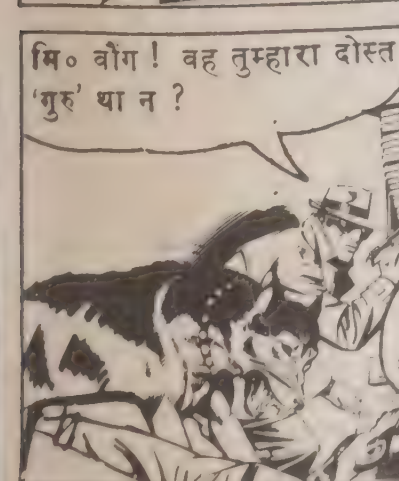
पार्टनर ? नहीं,वह तो गुन्डा है। मुझसे स्वयं को छुपवाता है। बुरा आदमी है .
और तुम अच्छे आदमी हो, जो पता लगाने वाले ग्राहकों को जहर देते हो !
जहर नहीं, मौके फोन।

मि० वौंग 'गुरु' मुझे कहां मिलेगा ?
'पुलिस को नहीं मिलता,पर उसके आदमी यहां आते रहते हैं।

वह जगह बदलता रहता है इसलिए
अभी भी सोने की चेन पहने हुए एक है, नाम है जाकाल।

एक जंगलवासी, हो सकता है यही ललोनी के साथ हो ?
हाँ। उन्होंने एक सोने के व्यापारी को ठगा था, हो सकता है वह भी लूट का ही माल हो।
FALK & BARRY 1/28
!

'ताला' जाकाल से जाकर कह दो उसके बास गुरु ने उसे बुलाया है
वौंग अगर तुमने झूठ बोला है और तुम 'गुरु' के पार्टनर हो तो मैं फिर वापिस आऊंगा।

यह बहुत ही तेजी से चलता है। वह कहां गया ? वह कौन था ?
FALK & BARRY 1/29

देखो···वह चिन्ह जो उसने दरवाजे पर बनाया है···
फैन···टम···'

बॉस क्या बात है ?
वह जंगल का बदमाश ललोनी कहां है ? उह-उह···
FALK & BARRY 1/30

वह सुरक्षित है, स्वप्नों की दुनिया में।
ZZZZZ

वह बहुत ही खतरनाक बड़ा सा व्यक्ति, ब्लू ड्रेगन में (उंह-उह) तूफान की तरह गोली चलाता है···मुझे पकड़ने आ रहा है···तैयार हो जाओ।
हम तैयार हैं, 'गुरु'।

वह व्यक्ति फैन्टम था ? पर वह है कौन ?
इसकी चिन्ता न करो ताला, वही करो जो उसने कहा है, जाओ।

'जाकाल' तुम्हारा बॉस 'गुरु' तुम्हें बुला रहा है।
श···वो नाम इतनी जोर से न लो।

अब उसे क्या काम है, मैं इस नेकलेस को छपा लूं, उसे नहीं मालूम मैंने इसे रख लिया था।
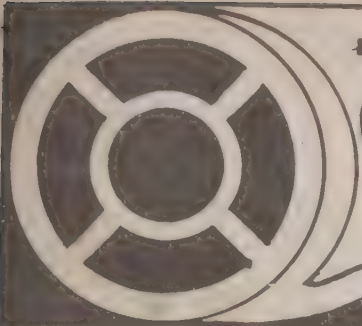
रति और रेखा का मेरे जीवन और फिल्मों से कोई वास्ता नहीं—कमलाहसन

कमलाहसन से इन्टरव्यू ले पाना एक बहुत ही कठिन काम है क्योंकि वह दिन रात काम में व्यस्त रहता है इस कारण मुश्किल से ही कोई उनसे एक दो मिनट बात कर पाता है।उस दिन कमलाहसन मुझे रोमूसिप्पी द्वारा दी गई पार्टी में दिखाई दिये। उस समय कमलाहसन बात करने के मूड में थे।

बस मैंने बातचीत शुरू कर दी। मैंने पूछा, क्या 'एक दूजे के लिये' फिल्म के बाद वे उसी प्रकार के रोल में 'टाइप' नहीं हुए जा रहे हैं। जो अपनी फिल्मों में कलाबाजियां लगाने के साथ गाते और नाचते ही अधिक हैं। जैसा कि उन्होंने अपनी फिल्मों 'सनम तेरी कसम' में भी रोल किया है।

'मैं केवल नाचने और गाने वाला अभिनेता नहीं हूं', मेरो नई फिल्म 'जरा सी जिन्दगी' और 'एक नई पहेली' इस बात को प्रमाणित करती हैं, एक बार मेरे चाहने वाले इन फिल्मों को देख लेंगे, तो मुझे पूरा विश्वास है वे भूल ही जायेंगे कि मैं नाचता गाता भी हूं। टाइप हो जाना किसी भी अभिनेता के लिये माफ न कर देने वाला जुर्म है। मैंने सदा ही दर्शकों के साथ पता लगाने का खेल खेला है। दो फिल्मों में गाने नाचने के रोल करने के बाद में तीसरी फिल्म में इमोशनल रोल करता हूं। दक्षिण भारत में भी मैंने कुछ फिल्मों में रोमांटिक हीरो का रोल अदा करने के बाद '16 व्याथिनाइल' में एक अपंग, बेवकूफ का रोल किया था। बाद में यही फिल्म 'सोलवां सावन' के नाम से हिन्दी में बनी जिसमें यह रोल अमोल पालेकर ने अदा किया। इसके बाद 'सिगाधू रोजाम्कल' में मैंने एक मेनियेक या सनकी का रोल किया जो सुन्दर से प्रेम करने के बाद उनकी हत्या कर देता है यह फिल्म हिन्दी फिल्म 'रेड रोज' की नकल थी जिसमें राजेश खन्ना ने यह रोल किया था।

कमल को जरूरत से अधिक काम मिल रहा है वैसे उसका कहना है कि अब वह बहुत ही चुनकर फिल्म लेता है। पता नहीं वह प्रोड्यूसर से इस तरह पेश क्यों आता है? उसका कहना है कि जो भी प्रोड्यूसर मुझे काम देने आता है, सबसे पहले अपनी डेट्स मांगता है। उन्हें इस बात का ध्यान नहीं रहता कि मेरी बहुत सी फिल्मों की शूटिंग जारी है।

'वे सोचते हैं, कौन है यह कल का छोकरा जो हमसे ऐसा व्यवहार कर रहा है। कहता है डेट एक साल बाद की दे सकता हूं।'

'रति और मेरा एक दूसरे को पसन्द न करना अपनी बात है। मुझे परवाह न होती यदि वह मुझे बुरा भला कहती या गाली देती, परन्तु उसने कहा है कि हमें बनाने वाला, बाला चन्दर उत्तर के खिलाफ है। वह ऐसा कैसे कह सकी जबकि वह जो भी है बालाचन्दर के ही कारण है।

रेखा के साथ काम करना मुझे पसन्द नहीं है क्योंकि वह प्रोफेशनल नहीं है। उसका क्या भरोसा मेरे हां करने के बाद कब आधा काम होने पर काम छोड़ कर चल पड़े।

चपाती फट हो गई —

देवेन वर्मा को अपनी ही प्रोडक्शन 'चपाती' के लिए कोई खरीददार नहीं मिले— डिस्ट्रीब्यूटर्स को कई बार फिल्म ट्रायल तौर पर दिखाने के बाद भी कुछ नतीजा नहीं निकला -क्योंकि डिस्ट्रीब्यूटर्स को 'चपाती' बिलकुल फीकी लगी, कोई मजाक नहीं साथ ही स्मिता पाटिल का बेकार अभिनय भी। बहुत सा धन व्यय कर चुकने के कारण देवेन वर्मा के पास फिल्म को स्वयं बम्बई में रिलीज करने के अलावा कोई चारा नहीं बचा। इसलिए देवेन ने डी. वी. एफ. नाम से एक डिस्ट्रीब्यूशन कम्पनी खोल डाली। फिल्म पहले ही दिन फट हो गई। अब देवेन वर्मा को अपनी फिल्म सारे देश में स्वयं ही दिखलानी पड़ेगी क्योंकि अब तो कोई उसे दूर से छूने तक को तैयार नहीं। इस प्रकार देवेन का दोहरा नुकसान होने जा रहा है प्रोड्यूसर और डिस्ट्रीब्यूटर दोनों की हैसियत से।

आधी रात को कौन कम्बख्त गा रहा है ?
चांद फिर निकला ••
मगर तुम न आएऽऽऽजला दिल मेरा ।
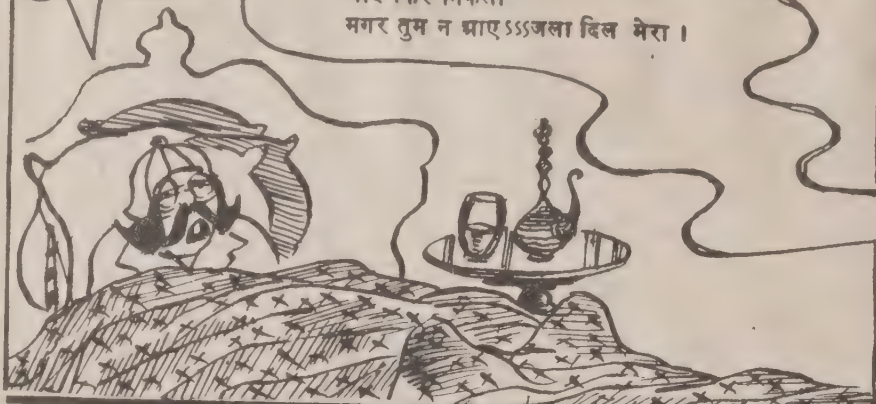
शाही नींद में खलल डालने की गुस्ताखी कौन कर रहा है ? फौरन पकड़ के लाओ।
जो आज्ञा महाराज।

सुन बे सिपइया राजा तुझे बुला रहा है ।
बज गया बाजा ।

तुमने रात को गला फाड़ कर गाना गा कर हमारी नींद खराब कर दी । इस गुस्ताखी की सजा'''

महाराज मुझे सफाई देने का मौका दीजिए ।

महाराज गांव में मेरी महबूबा रहती है, उसका नाम चांद है । महाराज चांदनी रातों में चांद को देखता हूं तो उसकी याद आती है और गले से बरबस गाना फूट निकलता है•••
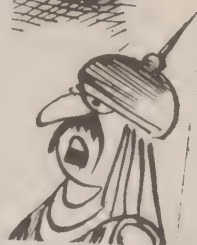
क्या मुझे किसी राजकुमारी से प्यार हो जाए तो मैं भी रातों को गीदड़ की तरह गाने गाया करूंगा ?
यह तो प्यार होने पर ही पता लगेगा महाराज ।
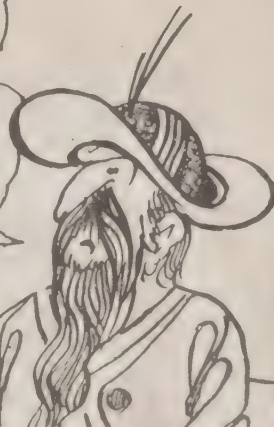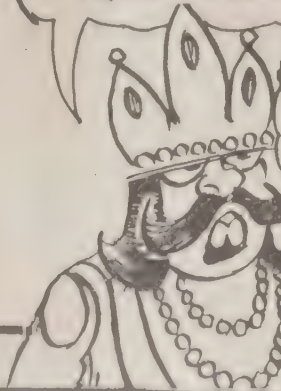
राजा का दिमाग खराब होगया लगता है । कहता हो मुनादी करवा दो हमारे राज्य में कोई अपनी लड़की का नाम चांद नहीं रखेगा ।
राजा का दिमाग पहले ही कौन सा ठीक था ।
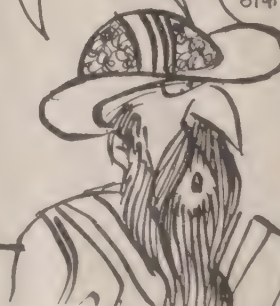
ताएक्वोन्डो

ताएक्वोन्डो के विशेषज्ञ जिमि जगतियानी द्वारा ताएक्वोन्डो पाठ का एक और रोचक भाग। जिमि जगतियानी को स्वयं ब्रूसली से शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त है। इन्होंने देश में मार्शल आर्ट के कई स्कूल चला रखे हैं।

पाठ 7

कीमा ओ० सिआगी सोनाल जिरुगी

मुद्रा हाथ के चाकू का प्रहार

चौंग-वाई-सियोगी मुद्रा में खड़े हो (हा2 1-ए) अपना बायां पैर दायें पैर के पास लाओ—शरीर को साईड को घुमाओ, घुटने मोड़ बायें हाथ को दायें कँधे पर ले जाओ, हथेली भीतर की ओर कर उंगलियों को कस कर मोड़ अंगूठा भी मोड लो। दायें हाथ को सीधा 90 अंश पर रखो, बायीं टांग को कीमा सिओगी मुद्रा में लाओ (पाठ 2) बायें हाथ को आगे बढ़ा, हथेली को नीचे घुमाकर शत्रु की गर्दन पर हाथ के चाकू से प्रहार करो। (हथेली) हाथ सीधा होना चाहिए। दायां हाथ कमर पर होना चाहिए। पचास बार अभ्यास करने के बाद टांग और हाथ को बदल लेना चाहिए।
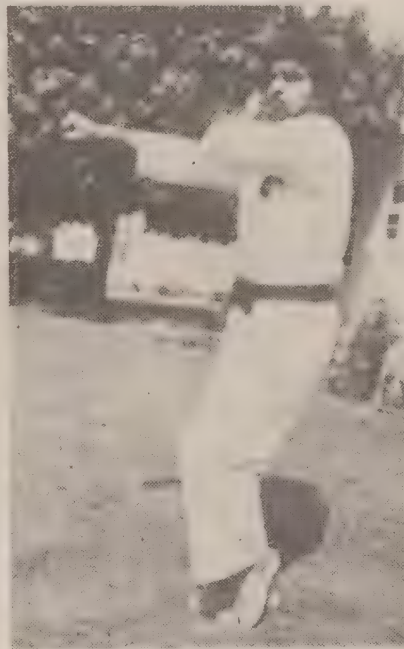
पी० इओप-चा-ओलिगो (सामने की १८० डिग्री की लात)

दायीं टांग को गुरुगी में बढ़ाओ (पाठ 5) दोनों हाथ शरीर के सामने की ओर रखो जैसे तस्वीर में हैं, दायीं टाँग को बिना घुटना मोड़े आगे

शेष पृष्ठ ४८ पर

फैशन है जरूरी

लोग आलोचना करते हैं कि लड़कियां फैशन ज्यादा करती हैं। उन्हें यह पता नहीं है कि लड़कियों के लिए फैशन करना देश के लिए सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है। लड़कियों को चाहिए कि खूब फैशन करें और बीस सूत्री ड्रैसों को बढ़ावा देकर देश की उन्नति में अपने हाथ, बाल, कमर और टांगें सब बढ़ायें—

दो लड़कियां मिलती हैं तो बातचीत के लिए कोई विषय तो चाहिए। सरसों का साग और मम्मी की बनाई कढ़ी के विषय तो आऊट ऑफ डेट हो चुके हैं। फैशन होगा तो बात करने के लिए रेशम सा मुलायम और स्ट्रेचलॉन सा लम्बा खिंचने वाला विषय रेडीमेड मौजूद है।

फैशन सामग्री प्रायः इम्पोर्टेड होती है। स्मगलिंग के पैसों से ही हिन्दी फिल्में बनती हैं जो भारत के साधारण नागरिक की एकमात्र पौष्टिक खुराक है। अगर आप फैशन नहीं करेंगी तो फिल्में कैसे बनेंगी?

फैशन से छोटे-मोटे काम करने वाले वर्करों को प्रोत्साहन मिलता है। पोनी टेल को देख देखिए झाड़न वाला कितना खुश हो रहा है। काम भी उसी उत्साह से करेगा।

फैशन करेंगी तो लड़कियां अपना अधिकतर समय शीशे के सामने बितायेंगी। विभिन्न पोजों में स्वयं को जज करेंगी। बाकी घर वाले शांति से अपना काम कर सकेंगे। वर्ना यह जरूर किसी न किसी का सिर खाने बैठ जातीं।

फैशनों की कृपा से ही फैशन शो होते हैं। विज्ञापन दिए जाते हैं। इससे मॉडलिंग का धंधा चमकता है। हो सकता है स्वयं आपको मॉडल बनने का चांस मिल जाये और उससे अगली सीढ़ी फिल्मों के दरवाजे भी खुल सकते हैं।

लड़कियां फैशन करेंगी तो आती-जाती लड़कियों के फैशनों से अपनी आंखों को ठंडक पहुंचाने वाले मजनू भाई लोगों का जीवन सफल हो जायेगा। टाइम ऐसे कटेगा जैसे चारा काटने की मशीन में चारा कटता है।

नये फैशनों का शौक होगा तो दिमाग नया फैशन पकड़ने के लिये फैशनों के बारे में सोचने से दिमाग चालू हालत में रहेगा उसे जंग लगने का खतरा नहीं होगा।

फैशन करोगे तो घर में घुस कर तो बैठे नहीं रहोगे। दुनिया वालों को अपना नया फैशन दिखाने जरूर बाहर घूमने जायेंगी लड़कियां। इसी बहाने ताजी हवा व धूप खाने को मिलेगी जो स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है।
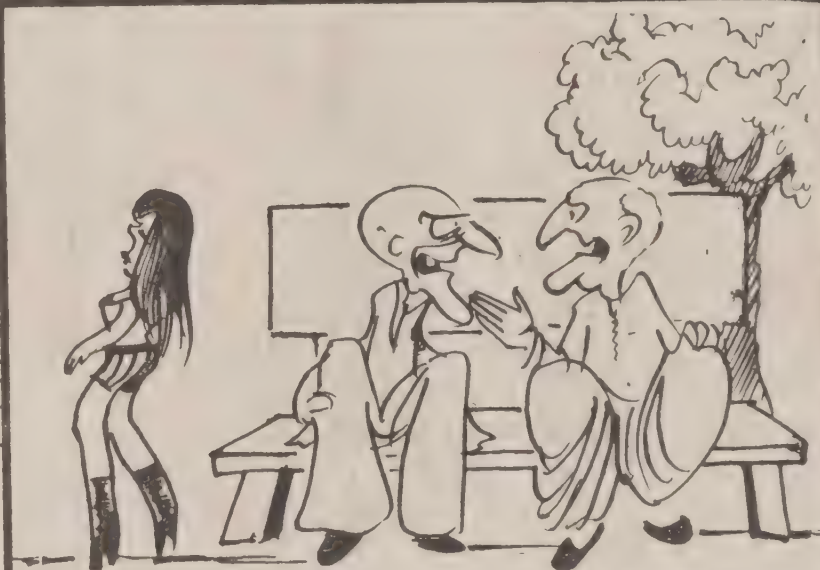
लड़कियां नये-नये फैशन करेंगी तो पार्क में बैठे बूढ़ों को उनकी आलोचना करने का अवसर मिलेगा। उन बेचारों का टाइम इसी तरह कट जायेगा।
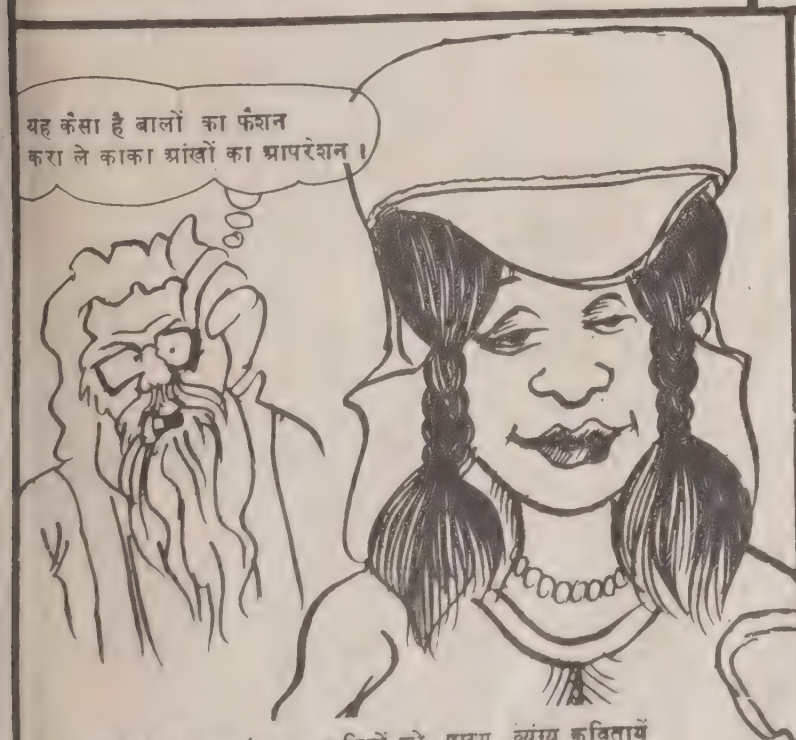
नये फैशनों पर हास्य कवियों को हास्य व्यंग्य कवितायें लिखने का सब्जेक्ट मिल जाता है—लोगों को हंसने का सुअवसर मिलता है।
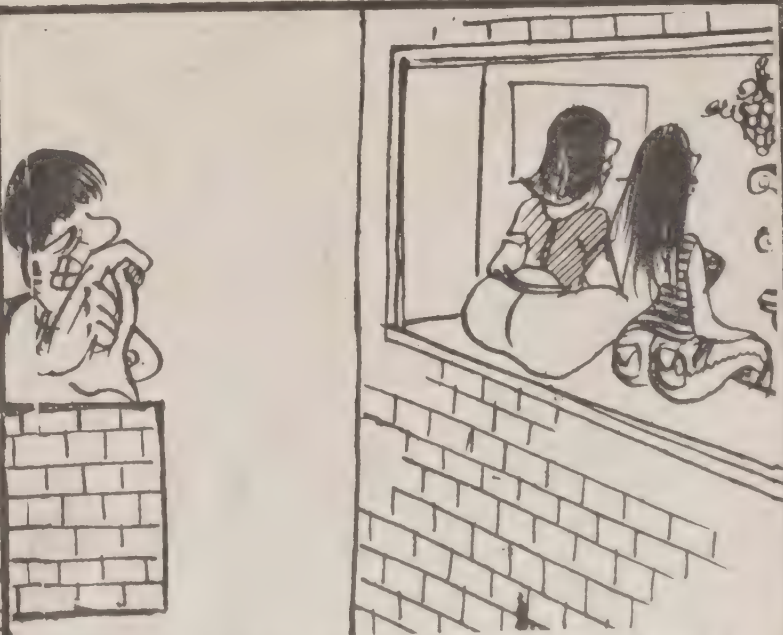
लड़कियां फैशन करेंगी तो दूर से मम्मी और लड़की में फर्क जानना आसान हो जाता है। लड़की भी साड़ी मार्का हो तो गलती से आशिक भाई लड़की के धोखे में दूर से मम्मी को ही इशारा मार बैठते हैं तो बड़ा घपला हो जाता है।

मीना मेरे साथ पिक्चर चलो।
मैं तुम्हारे साथ पिक्चर नहीं जाऊंगी, तुम्हारी नाक छोटी है और तुम्हारी शक्ल देख हंसी आती है।

सम्पादक का पत्र है। लिखा है कि आपके चुटकुले लंबे हैं और उन्हें पढ हंसी भी नहीं आती—खेद सहित।

तुमने अपने बाल कितने लंबे बढ़ा लिए हैं। काट कर छोटे कर लो—हिप्पी जैसे बाल देख हंसी आती है।

देखो लल्लू, बड़ों से जुबान मत चलाया करो, छोटा मुंह बड़ी बात अच्छी नहीं लगती—सुनकर हंसी आती है।
लंबे छोटे और हंसी इन शब्दों को सुनकर तंग आ गया।

अरे लल्लू तू अभी तक लंबी तान कर सोया है? यह देख मैं आज के शो की दो टिकटें ले आया हूं। बिनवी पर इंगइिश पिक्चर लगी है। पिक्चर लम्बी नहीं—छोटी है और कॉमेडी, कहते हैं कि बड़ी हंसी आती है—
हे भगवान, मुझे गुस्से पर काबू रखने की शक्ति दे—

हंसी—बड़े—छोटे इन शब्दों ने जीना हराम कर दिया—माली से बात करता हूं कम से कम वह तो इन शब्दों का प्रयोग नहीं करेगा।
हो हो हो—छोटे बाबू—तुम्हारा पैर केले के छिलके पर फिसल गया—छोटे बाबू मुझसे हंसे बिना रहा नहीं जा रहा है।

क्रिकेटिया युग

—हुकम चन्द 'पक्षी'

आज आफिस नहीं जाना है क्या ? साढ़े दस बजने पर पत्नी ने अपने बाबू पति का ध्यान घड़ी की तरफ आर्काषित कराया। मगर बाबू जी के हाथ टाई की नोक पर जड़वत बहुत देर से अटके हुए हैं। गावस्कर और अरुण लाल ने पारी को जमाने की शुरूआत की है। बाबू जी उसी में खोए हैं। फिलम रील की स्पीड यकायक मंद पड़ जाने पर जिस प्रकार चित्रपट स्थिर हो जाते हैं, उसी प्रकार बाबू जी के हाथ टाई की नोक पर स्थिर हैं। पत्नी फिर से चिल्लाती है—'सुनते हो, चिन्टू आज स्कूल जाने से मना कर रहा है।'

'क्या करूं जाकर स्कूल में', चिन्टू पैर पटक कर कहता है—'पीरियड सब खाली जाते हैं। सारे टीचर धूप में बैठे कमेंट्री सुनते रहते हैं। स्कूल आफिस में तो मजे से टी. वी. चलता रहता है।

'आग लगे मुए इस खेल में। सारी दुनिया ही बावली हो रही है।' पत्नी बाबू जी को लगे हाथों लेती है—'इस कमेंट्री में आग दे दो और आफिस की राह पकड़ो। पौने ग्यारह बज रहे हैं।' पत्नी क्रोध से रेडियो का स्विच आफ कर देती है। बाबू जी घूरते हैं, जैसे फिल्म में विलेन हीरोईन को घूरता है। मगर यहां हीरोईन नहीं घर की स्वामिनी कह रही है; अतः लाचार बाबू जी स्कूटर दौड़ाते हैं। मगर बीच में ही पान वाले की दुकान पर एक तीव्र शोर सुन कर बाबू जी स्कूटर मन्दा करके पूछते हैं—'क्या हुआ ! कोई आऊट हो गया ?'

भीड़ वाले बाबू जी को ऐसे घूरते हैं, जैसे शुभ कार्य में उन्होंने छींक मार दी हो। दोबारा ताली बजने पर बाबू जी आप ही समझ जाते हैं कि गावस्कर चौका लगा रहा है। सवा ग्यारह बजे आफिस पहुंचने पर बाबू जी डर रहे हैं कि कहीं बड़े साहब लेट एन्ट्री के लिए टोक न दें। मगर बड़े साहब के कान से स्वयं ट्रांजिस्टर लगा देखते हैं, तो चुपके से साढ़े नौ बजे की हाजिरी रगड़ देते हैं। सबसे पहले बाबू जी साथी से यही पूछते हैं—'मेरे घर से आफिस आने तक कोई आऊट तो नहीं हुआ।'

'अरुण लाल गया।'

'सारा मजा किरकिरा हो गया। न जाने कहां-कहां से कार्टून टीम में शामिल कर लिए हैं।'

'मैं पूछता हूं भला चेतन चौहान को टीम से निकालने की क्या तुक थी।' दूसरे बाबु ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।—'इससे तो श्रीकांत ही अच्छा था।'

'सब राजनीति का चक्कर है। साले बहनोई और चाचा भतीजे सब टीम में भरे पड़े हैं; वरना क्या सत्तर करोड़ भारत में ग्यारह आदमी मुकाबले पर नहीं आ सकते ?'

'अरे ! सुन यार। गावस्कर कैच होते-होते बचा है।'

'देख लेना गावस्कर क्रीज में खड़ा खड़ा ही जायेगा।

'जी, वो खन्ना साहब का केबिन किधर है ?' एक कोमल नारी स्वर ने पूछा। कोई और दिन होता, तो बाबू कम से कम उस सुरुचि पूर्ण लावण्य चेहरे को दो बार नख-शिख घूरता; मगर वहां तो गावस्कर जमा हुआ था।

'ये मारा शॉट। देख लेना गेंद रुकेगी नहीं।'

'जी, वो खन्ना साहब···।'

'कुछ भी हो, विद आऊट खेलना गावस्कर का भी रिकार्ड है।'

'दा ग्रेट गावस्कर···।'

'सरफराज हमसे दूर भागते हुए; ओवर दा विकेट वेंगसरकर एल. बी. डब्ल्यू।'

'बस अब तो ये मैच गया।' दूसरे बाबू ने सिगरेट के कश के साथ कहा।

'वेंगसरकर एक अच्छा बैट्समैन है; मगर इस बार यह फार्म में नहीं है।' दूसरे बाबू ने मुंह बनाया और कहा—'एक वेंगसरकर ही क्या, पूरी टीम ही फार्म में नहीं है।'

'विश्वनाथ आया है। देखें पहली बाल पर ही जाता है या कुछ देर तक रुकता है।'

'ज्यादा से ज्यादा एक ओवर तक टिक पाएगा।'

'क्या बात करते हो? इसके जैसे स्क्वायर कट वर्ल्ड में कोई भी खिलाड़ी नहीं लगा सकता।'

'देख लेना···।' और इमरान हमसे दूर भागते हुए। और ये विश्वनाथ बोल्ड।

'मरा कि नहीं पहली ही बाल पर। इन्हें तो टीम से बाहर ही कर देना चाहिए।' दूसरे बाबु को जरा कुछ ज्यादा ही क्रोध था। बोला-'बाहर-वाहर कुछ नहीं। इस बच्चा टीम को तो वापस ही बुला लेना चाहिए।'

'भाई साहब लान के फार्म कहां मिलेंगे।' एक अनजान व्यक्ति ने काऊंटर क्लर्क से पूछ लिया।

'लान के फार्म, जहां कर्ज मिलता है, वहीं मिलेंगे।' तभी ट्रांजिस्टर पर शोर हुआ। बाबू ने जल्दी से ट्रांजिस्टर कान पर चढ़ाया।

'क्या हुआ?'

'मोहिन्दर ने चौका लगाया है।'

'अजी ये राजनीति तो थी ही, जो आज तक मोहिन्दर को नहीं पूछा वरना कोई छोटा-मोटा खिलाड़ी नहीं।

'साहब वो लान के फार्म—।'

'अरे! कह तो दिया लान सैक्शन में मिलेंगे। कान खाए जाता है।' वह व्यक्ति भी कुछ मसखरा सा था। बोला-'मेरा नम्बर कहां आएगा साहेब, कान तो आजकल ट्रांजिस्टर खा रहे हैं।'

'और ये मोहिन्दर का हुक करने का प्रयास। पूरी तरह चूके और ये एल. बी.डब्ल्यू.। क्लर्क ने उस व्यक्ति को इस कदर घूरा, जैसे अमरनाथ उसी ने आऊट कराया हो। चारों तरफ अवसाद सा छा गया।

'ये तो दूसरा मैच भी पारी से हार गए।'

देखता नहीं अम्पायरिंग ही बिलकुल गलत है। लाला अमरनाथ ने भी कामेंट्स दिये हैं कि मेरा लड़का है, इस लिए मैं कुछ नहीं कहना चाहता; वरना ये एल. बी. डब्ल्यु बिलकुल गलत दिया गया है।

'हम तो ये पूछते हैं कि पाकिस्तानी खिलाड़ियों को एल. बी. डब्ल्यू. क्यूं नहीं दिया गया, जबकि कई क्लियर आऊट थे।'

'यही तो वजह है, कि हमारी टीम का इस तरह जनाजा निकल रहा है।'

'मैं नहीं मानता।' एक अन्य बाबू ने गुस्से से कहा—'ये इमरान के सामने टिक ही नहीं सकते। इमरान इनके लिए हौआ है।

'हमारे बैटर फास्ट बालिंग को झेल ही नहीं सकते। सच कहता हूं मैच सुनने को मन ही नहीं करता।'

'क्या करूं मैं तो और भी मारा गया। मोहिन्दर के शतक पर शर्त लगा बैठा था। अब सौ रुपये से डंड गया।'

तुम तो सौ रुपए से ही डंडे मैंने तो पूरे मैच पर ही शर्त लगा रखी है। अब तो कपिल और पाटिल जम जाएं, तो मैच बच सकता है। श्रृंखला तो हर हाल से हारेंगे। कम से कम मैच ड्रा करके इतनी छीं छलेदारी तो होने से बच जाएगी।

'अरे पाकिस्तान वाला सिस्टम हो जाए, तो भला कैसे नहीं जीतें ये लोग, इन्हें क्या डर है? हारो या जीतो दस-दस हजार मिल जायेंगे, देश की नाक चाहे सौ-सौ बार कटे।

'यार क्या मूर्खता की बात कहते हो। ये तो खेल है। हार जीत तो होती ही है।'

'होती तो है मगर ऐसी हार सिर्फ यहीं होती है। पाकिस्तान की हार यदि इस तरह हो जाए, तो जनाब कोड़ाई जवाब तलब हो जाए। और यहां क्या है। टीम चाहे गीदड़की तरह हारे, मगर टीम में फिर भी वही लल्लू लाल रहेंगे।'

'हुर्रे! वो मारा कपिल ने छक्का, शाबास हरियाणा के शेर।'

और कपिल देव आऊट! बाहर जाती दुई शार्ट पिच गेंद पर क्रीज में खड़े-खड़े ही बल्ला अड़ाने की कोशिश।

'यार ये कपिल को क्या होता जा रहा है?'

'जल्दी बाजी करता है।'

'सारे ही जल्दबाजी करते हैं। ऐसी हार तो बेदी के जमाने में भी नहीं हुई।'

'गावस्कर को अब कप्तानी छोड़ देनी चाहिए।'

और इसी बीच क्रिकेट का लंच हो गया और साथ ही हुआ आफिस का लंच भी। चारों तरफ गर्मागरम बहस। क्रिकेट ए. बी. सी. डी. न जानने वालों की क्रिकेट पर टिप्पणियां। किसी भी कर्मचारी का काम मे मन नहीं था। उन्हें इस देश के दीमक लगे और निकम्मे आफिसों का कोई दुख नहीं था। दुःख था तो सिर्फ पारी उखड़ने का। एक घंटे से भी ज्यादा कर्मचारी गण गप्पिया लंच मनाते रहे। लंच के बाद कमेन्ट्री शुरू होते ही फिर पाकेट ट्रांजिस्टर सबके कान पर सवार हो गये।

'साहब मेरी फाईल का क्या हुआ?'

'जो हमारी टीम का हुआ, वही तेरी फाईल का हुआ।'

'देख भाई, चाहे शर्त लगा ले अबकी बार पाटिल जमेगा ?'

'चल हो गई।'

'हो गई। ये देख, वो मारा पाटिल ने चौका। खूब भागले सिकन्दर बख्त। गेंद तू तो क्या तेरा फरिश्ता भी नहीं पकड़ पाएगा। ये पाटिल का चौका है।'

'हजूर हमरे पैसा कहां जमा हुईवे।' एक ग्रामीण वृद्ध बीच में ही टपक पड़ा।'

'अरे सुन ! बाबू जी ने उसे बुरी तरह झिड़क दिया।

'यार मेहता ! बड़े साहब इधर ही आ रहे हैं।'

'आने दे ! ये दिन ही कुछ ऐसे हैं।'

इतने समय में ही बड़े साहब उधर आ निकले और बोले—'भाई लंच के बाद तो कुछ काम करो।'

'साहब काम वाम तो सब हो जायेगा। इधर पाटिल ने कमाल कर दिया।'

जब तक पाटिल जमा रहा। बड़े साहब भी वहीं जमे रहे। ये छक्का।' ये मारा।

'साहब मेरी फाईल कहां गयी ?'

फाईल का यहां कोई पता नहीं साहब। ये क्रिकेटिया आफिस है। यहां का प्रत्येक अणु-परमाणु कमेन्ट्री में मुब्तिला है। आवेग-संवेग कह कहे, खुशी और गम सारा वातावरण यहां आपको मिलेगा, मगर फाईल नहीं मिलेगी।

'और पाटिल बोल्ड।'

'अरे यार ये टीम क्या कोई बालकों की टीम है। पता नहीं कैसे आऊट हो जाते हैं। हमारे देश के नेताओं को क्रिकेट क्यों नहीं खिलाते ये लोग। पूरे अस्सी साल की उम्र तक भी आऊट नहीं हो सकते।'

'अचानक एक उजबक सा व्यक्ति आफिस में घुसा और जोर से बोला—'ये क्या घपला मचा रखा है तुम लोगों ने। मेरी फाईल पूरे छः महीने से आगे नहीं सरक रही है।'

'क्या उजबक से पाला पड़ा है।' संबंधित बाबू ने कान की तरफ ध्यान रखते हुए कहा—'यहां सारी टीम तो मिनटों में सरक गयी। तेरी फाईल क्या जहीर अब्बास या मियांदाद हो गई है जो क्रीज से सरकती ही नहीं है।'

'वैसे साहब कभी-कभी किरमानी भी जम जाता है।'

'हां शायद जम भी जाए।'

'साहब मेरे केस का कोड नम्बर क्या है ?'

'चुप, किरमानी ने गलत शाट लगा दिया है।

सहसा ट्रांजिस्टर पर शोर उभरा। लोगों ने अपने ट्रांजिस्टर कान में घुसड़ने तक के इरादे कर लिए। सूने कानों वाले दूसरे से पूछने लगे।

'क्या कोई और गया ?'

'हाँ किरमानी गया।'

'यार आते ही चला गया।' एक ने अवसाद मिश्रित आश्चर्य से कहा।

'तुम नहीं समझोगे इस ऊंची चीज को मियाँ। किरमानी जानबूझ कर आऊट हुआ है।' दूसरा बाबू बोला।

'अरे ! कुछ शरमाओ कहते हुए। एक महान् विकेट कीपर पर इतना घटिया इल्जाम।' बड़े बाबू ने अचानक अपनी सीट से उठकर कहा।

'बड़े बाबू कुछ शर्त हो जाए। किरमानी जान बूझ कर गलत शाट्स लगाता है।'

नहीं ये तुम्हारा विचार है। कोई भी खिलाड़ी जान बूझ कर कभी गलत शाट नहीं लगाता।'

'साहब मेरा हिसाब आपने गलत लगा दिया है।' एक व्यक्ति ने बड़े बाबू का ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा।

बड़े बाबू को इतना क्रोध आया, जैसे अम्पायर ने बगैर सोचे समझे ही स्ट्रोंग अपील पर उन्हें हीं एल. बी. डब्ल्यू दे दिया हो।

ट्रांजिस्टर पर शोर होने लगा। इमरान की दौड़ के साथ ही पब्लिक का जंगली हुल्लड़; मगर वाह रे दिल्ली के शेर मदन लाल, इमरान की गेंद का जमकर मुकाबला। पारी की हार से बचने की कुछ आशाएं बंधी, लोगों में उत्साह का कुछ संचार हुआ, मगर अकेला चना कब तक भाड़ फोड़े। आखिर मदन लाल भी वही एल. बी. डब्ल्यू।

'और अब भारत पर संकटों के बादल मंडरा रहे हैं। पारी की हार सुनिश्चित।' कमेन्ट्टेटर का स्वर सुनाई दिया।

'अरे फोड़ दे यार इस ट्रांजिस्टर को, बिलकुल ही नाक कट गई। हम तो दस साल से कमेन्ट्री सुनते आ रहे हैं, बस हमेशा संकट के बादल रहते हैं। छः महीने में एक बार तो ये बादल दक्षिणी ध्रुव से भी हट जाते हैं; मगर हमारी खेलीय टीमें सदियों से संकट के बादलों से ढकी हुई हैं। हमारी टीम से संकट के बादलों को बहुत प्यार है, तभी तो हमेशा इन पर मंडराते रहते हैं, कभी हटते ही नहीं।'

'कुछ भी सही मदन ने अपनी वापिसी सार्थक कर दी है।'

'हाँ, मदन भले ही आऊट हो गया सही, मगर कर दिया कमाल।

'और कादिर की ये गेंद मोहिन्दर

को और मोनिन्दर बोल्ड...।'
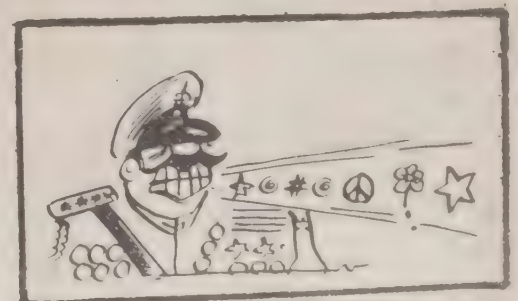
'सरे बाजार लुटिया डूब गई, साहब ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे सबके वर्ल्ड रिकार्ड बनवा डाले।'

'क्या कहा लुटिया डूब गई, ये कहो लोटा ही डूब गया। इस टीम के मुकाबले यदि हमारे मौहल्ले के लल्लु लाला को खिलाते, तो वो भी चार-पांच रने अपनी तोंद से स्टामक बाई के ही ले जाता।

'यार मजाक मत कर! मुझे वैसे गुस्सा आ रहा है।'

'साहब मेरी फाईल का पता नहीं चल रहा है। मैं काफी देर से परेशान हूं। बताओ तो सही साहब क्या हुआ?'

'फाईल, फाईल, हमें पता नहीं तुम्हारी इस फाईल का। क्या पता विरोधी नेताओं की तरह अंडर ग्राऊंड हो गई हो।'

अरे भैया जाकर बड़े बाबू से पूछो।' दूसरे ने व्यक्ति को समझाया।'

तभी बड़े बाबू स्वयं ही उधर आ गए। बोले—'यार आठ चले गए। दूसरा मैच भी भारत बुरी तरह हार गया।'

'साहब मेरी फाईल—?'

'साहब से पूछो।'

तभी साहब का चपरासी उधर चला आया। सुना तो बोला—'साहब तो मारे गुस्से के तभी चले गये थे, जब मदन लाल आऊट हुआ था। इन खिलाड़ियों ने तो बिल्कुल ही मिट्टी पिलीद कर दी। मदन की विकेट डाऊन के बाद तो साहब से आफिस में बैठा ही नहीं गया।

'अकेले साहब को ही क्या कहिये; स्वयं हमारा ही कोई काम करने को मन नहीं करता, ऐसा मन करता है कि कहीं डूब मरें; क्यों क्रिकेट बोर्ड वाले तो डूबेंगे नहीं, हमें ही डूबना पड़ेगा।'

वह व्यक्ति निराश आफिस से निकलता हुआ सोचने लगा कि इन क्रिकेटिया दिनों में, किसी भी आफिस में कोई काम नहीं होता है। सारे इन दिनों के पैन्डिग काम बाद में ओवर टाईम पर किये जाते हैं। क्रिकेट पर लाखों रुपये स्वाहा; मगर परिणाम फिर भी हार हार पर पारी की हार। राष्ट्र का अपमान। खाहम खाह की कुढ़न। खेलों की राजनीति खेल भावना को एक दिन कुचल कर रख देगी। टीम के चयन में ये इज्म हमें बर्बाद कर देगा। शेर गीदड़ों से डर कर भागेंगे। वह व्यक्ति यह सब सोचता हुआ जा ही रहा था कि उसने देखा, एक नौजवान साईकिल पर सवार, कान पर ट्रांजिस्टर चढ़ाए दौड़े जा रहा है। 'शाबाश गावस्कर अंत तक नाट आऊट। वो मारा चौका। पट्ठे का सोलहवां चौका है।' मगर तभी नौजवान का ध्यान बटा बैलेन्स बिगड़ा और वो धड़ाम से ट्रक के नीचे। शरीर चिथड़ा हो गया। खोपड़ी दूर खरबूजे की तरह बिखर गई। भीड़ लगे लोग उस नौजवान की लाश के टुकड़े देख रहे थे। मगर फिर भी कई लोग कान पर ट्रांजिस्टर चढ़ाए हुए थे। सच आज के इस क्रिकेटिया युग में इन्सान की मौत से ज्यादा गावस्कर के आऊट होने का मातम है। ●

संकेत

बायें से दायें

1. इसके होने पर बेशर्मी को प्रवेश नहीं मिलेगा। (2,13)
5. यह लड़की गले पड़ने वाली है। (2)
6. इस भवन निर्माण सामग्री को पीछे से देखोगे तो आसमान में चमकते नजर आयेंगे। (2)
7. भावनगर में पायी जाने वाली प्राकृतिक संपदा। (2)
9. बारह दरवाजों के अन्दर रहने की सीमा? (2)
11. इसके होने के बाद एक जगह मौजूद नहीं मिलेंगे। (3-3)
13. अधूरे मुस्लिम साहब। (2)
14. बिना सिर के जानवर द्वारा लड़ी लड़ाई? (2)
15. एक गहरे रंग के बीच में रास्ता हो तो वह एक नहीं है। (3)

ऊपर से नीचे

1. एक धार्मिक जानवर। (2)
2. आग में झुलसने के बाद बिना छड़ी के बांटा जाये तो पानी में उतारा जा सकता है। (6)
3. यदि चिन्ता मग्न बगैर शान के हों तो दूर हो सकता है। (2)
4. नीचे से ऊपर जाते समय बीच में डंडे के साथ दो बार तला छूने की कोशिश में हुआ जख्मी। (4)
8. इसकी क्रिया में केवल डंडे का काम है छड़ी का नहीं। (2)
10. यह शख्स राजा के सामने रहता है। (4)
11. श्रीमती मिरजा साहेबा के दिल में अंधेरा है। (3)
12. बगैर आधे काम के दांतों की सफाई (3)

नाम ————————————————

पता ————————————————

————————————————

बोलते अक्षर
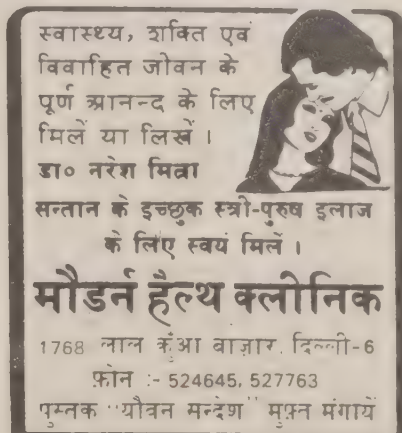
पीक

लघु विज्ञापन

दीवाना

के वार्षिक सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये

चन्दे की दरें

वार्षिक	अर्द्धवार्षिक	एक प्रति
५० रुपये	२६ रुपये	२ रुपये ५० पैसें

साधारण रुप से दीवाना की सदस्यता शुल्क ६० रु. एवं डाक खर्च अलग से होती है। लेकिन आप अभी सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये एवं अपनी कापी अपने घर या दफ्तर में प्राप्त कीजिये।

नीचे दिये कूपन को भरिये और चन्दे की रकम के साथ हमें डाक द्वारा भेजिये चन्दे की रकम केवल दीवाना के नाम से ही भेजें।

अपना सदस्यता शुल्क निम्न पते पर शीघ्र भेजिये
सरकुलेशन मैनेजर, दीवाना ८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

- -

कृपया मुझे दीवाना के वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक ग्राहकों की सूची में सम्मिलित कर लीजिये। मैं चन्दे की रकम———— रुपये भारतीय पोस्टल आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/मनीआर्डर नं.————————से भेज रहा हूं।

नाम————————————————————

पता————————————————————

————————————शहर/जिला————————————

राज्य ————————————पिन कोड ————————————

विशेष उपहार दीवाना के उन पाठकों को जो दीवाना के 6 वार्षिक सदस्य बनाकर हमें भेजेंगे एक दीवाना टी शर्ट या छः माह के लिए दीवाना मुफ्त दी जायेगी।

पृष्ठ १८ से आगे

थे। सुनीता बड़े सन्तोष से चलती हुई बिलकुल उसके पास आकर रुक गई—जैसे सृष्टि थम गई हो। गतिमान समय की नाड़ी रुक गई हो—वह हरीश की ओर देखकर बड़े प्यारे ढंग से मुस्कराई और धीरे से बोली—

'मैं आ गई हूं।''

'म . . म . . मुझे विश्वास था। तुम जरूर आओगी।'' हरीश थूक निगलकर बोला।

'और मुझे पूरा विश्वास था . . कि मुझे यहां जो भी मिलेगा वह तुम्हारे सिवा कोई नहीं होगा।'' सुनीता ने एक शोखीभरी मुस्कराहट के साथ कहा।

'अर्थात् तुम मुझे पहचान गई थीं . . .''

''जिस दिन तुम्हारा पहला पत्र अपनी पुस्तक में रखा मिला था . . उसी दिन।''

''ओ हो . . .।''

'हरीश बाबू, आंखों की जुबान स्त्री से बढ़कर संसार का कोई प्राणी नहीं समझ सकता—मैंने तो पहले ही दिन तुम्हारी आंखों में वह सब कुछ पढ़ लिया था जिसको तुमने एक से लेकर तीस पत्रों में व्यक्त करने का प्रयत्न किया और अब भी ठीक तरह व्यक्त नहीं कर पाए।''

'तुम . . तुम जितनी सुन्दर हो उतनी ही समझदार भी हो। जब मैंने पहले ही दिन देखा था तो मुझे ऐसा लगा था जैसे तुम बिलकुल वही लड़की हो जिसे मैंने आज तक केवल सपने में ही देखा था और जो पुरुष के जीवन में केवल एक बार आती है . . . पहली और आखिरी बार।''

'मैंने भी तुम्हें पहली बार देखा था तो मुझे लगा था . . .''

बोलते-बोलते चंचल मुस्कान के साथ वह चुप हो गई।

'कैसा लगा था?'' हरीश ने बेचैनी से पूछा।

''कि तुम मुझे पत्र जरूर लिखोगे?'' सुनीता हंस पड़ी।

''फिर तुमने पहला पत्र फाड़कर क्यों फैंक दिया था?''

'इसलिए कि कालिज में मेरे साथ ऐसी घटनाएं घट चुकी हैं—और जिस लड़के का भी पत्र मैंने एक बार फाड़कर फैंका फिर उसने कभी दूसरी बार साहस ही नहीं किया।''

'क्योंकि वह तुमसे सच्चा प्यार नहीं करते।''

'हां . . अगर सच्चा प्यार करते होते तो तुम्हारी तरह साहस नहीं छोड़ते।''

''निस्सन्देह . . . मैं तो जीवन भर तुम्हें पत्र लिखता रहता।

'लेकिन तुमने तो लिखा था कि आज मैं तुमसे न मिलने आई तो कल सुबह तुम आत्महत्या कर लोगे?''

'तुम न आकर देखतीं।''

''अब तो आ ही गई हूं . . . अब कैसे परखूंगी?''

''जिस तरह तुम चाहो—।''

'खैर . . छोड़ो . . . तुमने यह नहीं पूछा कि तुम्हारे बाकी ढेर सारे पत्रों ने मेरे मनो-मस्तिष्क पर कैसा प्रभाव डाला . . . जिनके फलस्वरूप मैं आज साक्ष तुम्हारे सामने खड़ी हूं।''

'हां . . . बताओ।''

'तो सुनो . . . दूसरा पत्र भी मैं ने फाड़ दिया पर यह जरूर सोचा कि मेरी पुस्तक में यह पत्र पहुं कैसे? फिर तुम्हारा तीसरा पत्र पुस्तक में पहुंचा तो मै कल्लू को एकांत में पकड़ लिया।''

'क . . क . . कल्लू . . . कौन?'' हरीश मस्तिष्क को झटका सा लगा।

'हां कल्लू को . . . क्योंकि घर में कल्लू अतिरिक्त और कौन था जिस पर मैं सन्देह करती कल्लू डैडी की मार से डर गया और उसने सब कु बता दिया . . . उसने मुझसे कहा कि तुम बहुत गम्भी हो और हर हालत में मेरे साथ घर बसाना चाहते हो मैंने कल्लू से कहा, बिना परख के मैं भला कै विश्वास करूं? मैं ने उसे परामर्श दिया कि वह अपन इस नई आमदनी का साधन बनाए रखे और तुम पर य बात उजागर न होने दे।

'दूसरी ओर मैंने पास-पड़ोस की लड़कियों तुम्हारे बारे में पूछताछ छानबीन आरम्भ कर दी और स योग से पहली ही लड़की 'निम्मो' के पास से तुम्हारे प्रेम पत्र मिल गए . . निम्मो ने तुम्हारे यह पत्र तुम्हे अकेले में रोककर गाली दी थी और धमकी दी थी कि अगर बाद में तुमने उसे कभी पत्र लिखा तो वह तुम्हे मुहल्ले से निकलवा देगी—।''

(क्रमश

पृष्ठ ३९ से आगे

बढ़ाओ और टांग को शरीर के चारों ओर 180 अंश डिग्री के गोल में घुमाओ। लात मारने के बाद टांग को पूर्वावस्था में ले आओ। यह लात बिना रुके प्रहार किये जाती है जो पैर के चारों ओर घूमने से होता है इस प्रकार की लात का चेहरे पर तमाचे जैसा ही प्रहार होता है। यदि प्रहार लात से शरीर के नाजुक स्थानों पर ठीक से हो जाये, तो यह आदमी को धरती पर गिरा देने के लिये प्रर्याप्त होता है। टांग को घुटने से पंजे तक घुमाकर प्रहार किया जाता है। इसमें कूल्हे को बहुत कम या बिलकुल ही काम में नहीं लाया जाता।

नवम्बर 27, 1940 को फिल्म स्टार और उत्कृष्ट मार्शल आर्ट विशेषज्ञ ब्रूसली का जन्म सेन फ्रांसिसको कैलिफौर्निया में हुआ। तैंतीसवां जन्म दिन आने से पहले ही मृत्यु हो गई, लेकिन हमारे समय में यह एक पौराणिक कथा है और ब्रूसली न भूलने वाला स्टार है दि ड्रैगन पुनः आरम्भ...

नजरन्दाज ताकत—

एक दिन एक छोटा लड़का एक भारी पत्थर को उटाने की कोशिश कर रहा था, पर उसे हिला नहीं पाया उसका पिता उसे देखता रहा, अन्त में बोला, 'क्या तुम्हें विश्वास है तुम अपनी पूरी ताकत इस्तेमाल कर रहे हो ?

'हां, मैं पूरी ताकत लगा रहा हूं' लड़का बोला।

'नहीं, तुम नहीं लगा रहे', पिता ने कहा, 'तुमने मुझसे मदद करने को नहीं कहा'।

बोलना सबसे सस्ता—

विशेषकर शरीर की शक्ति खर्च होने के ख्याल से। एक साल तक निरन्तर सामान्य तौर पर बात-चीत करने में केवल उतनी ऊर्जा या शक्ति व्यय होती है जितनी सिर्फ एक प्याला पानी उबालने में खर्च हो जाती है।

आगामी अंक में पढ़िये

- दीवाना के नए दीवाने—माचू-पीचू
- सामाजिक उपन्यास "घर" की दूसरी किस्त
- दीवाने बैनिफिट मैच

और हास्य व्यंग्य का विशेष आकर्षण

- मोटी पोथी पढ़िए, लाइफ बनाइए
- साथ में सभी स्थाई स्तम्भ

पृष्ठ ६ से आगे

समझते थे । होली के मौके पर वह लोगों को रंग की अपेक्षा पेन्ट लगाते थे ।

एक बार कीर्ति ने उन्हें सबक सिखाने का निश्चय किया । होली खेलने के लिए उन्हें अपने घर निमंत्रित किया और एक बाल्टी गोबर की भरकर छत पर जा बैठे ।

अपने पेन्ट व अन्य हथियारों से लैस होकर 'जीजा' ने घर में जैसे प्रवेश किया, कीर्ति ने उन पर गोबर की बाल्टी उंडेल दी । गोबर से सरोबोर 'जीजाजी' छत की तरफ लपकने को हुए पर वहां सीढ़ी कहां थी ? वह बाथरूम की तरफ़ लपके तो कीर्ति ने ऊपर से उसकी टूटी बंद कर दी ।

कोई चारा न देख जीजाजी ने हथियार डाल दिए । कीर्ति ने उनसे सारे पेन्ट फिंकवाए और आइन्दा ऐसी गन्दी होली न खेलने का वचन लिया तब जा कर बाथरूम की टूटी में पानी आया ।

संदीप पाटिल की होली :

क्रिकेट के मैदान में गेंदबाज के छक्के छुड़ा देने वाले टैस्ट-प्लेयर संदीप पाटिल को सामान्यत: फास्ट चीजें पसन्द हैं बल्लेबाजी करेंगे तो फास्ट, गेंदबाजी भी फास्ट, म्यूजिक सुनेंगे तो वेस्टर्न यानि फास्ट और ड्राइविंग भी फास्ट । फिल्म 'कभी अजनबी थे' में हीरोईन से प्यार करेंगे तो······

लेकिन जब मौका होली क सिक्का हैड से टेल हो जाता वह पवेलियन में बैठकर शांति का खेल पसन्द करते हैं ! उ शब्दों में······

होली के हुल्लड़ से दूर, सामने की गली एक विशाल भवन में चला ज मोहल्ले के अन्य सभ्य व्यक्ति होते हैं । गुलाल लगाने मुझे परहेज तो नहीं, बट अ माइसेल्फ मोर वाचिंग अ होली ! (पर मुझे ज्यादा पस कि दूसरे खेलते रहें और मैं दे

सत्य प्रकाश शर्मा, मकान नं० 1/435, शास्त्री नगर, अलीगढ़, 19 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।
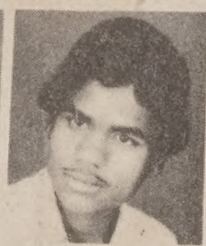
विजय कुमार कोकश, क्यू-96, उत्तम नगर, नई दिल्ली, 20 वर्ष, फिल्म देखना ।

शक्तिपाल खुराना, मेन बाजार बहादुरगढ़, हरियाणा, 22 वर्ष, फरमाईश भेजना ।

कमलेश कुमार गुप्त, मोहन बाजार, महाराजगंज (सीवान), 16 वर्ष, दोस्ती करना ।

शिवलाल 'शिव' सुन्दर नगर, गली नं० 2, मकान नं० 54, ब्यावर, 20 वर्ष, पढ़ना ।

पवन कुमार, चेतना स्टूडियो, भारत चौक, उल्हासनगर, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

बलवी बड़सी 19 व

अशोक कुमार नेपाली, सिगरौली कोलियरी सिधी (म. प्र.) 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

कमल कुमार कश्यप, नयापारा रायपुर, म. प्र. 20 वर्ष, दोस्ती, दीवाना पढ़ना ।
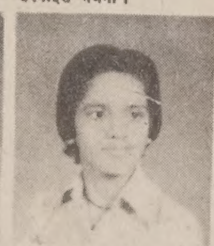
अशोक लावलानी 171, विद्या-नगर, कालोनी, इन्दौर, म. प्र. 16 वर्ष, पत्र-व्यवहार करना ।
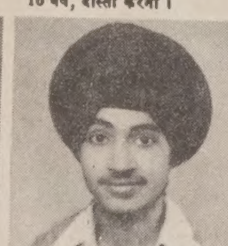
सुखविन्द्र सिंह जौड़ा, डब्ल्यू जैड 36 सी/2, कृष्णा पार्क, तिलक नगर, नई दिल्ली, 20 वर्ष ।
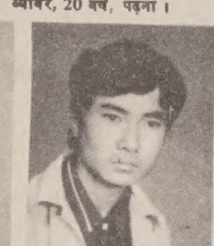
सेरब दोर्जे लामा, सामाखुशी ठमेल, काठमांडो, नेपाल, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना, दोस्ती ।

मुख्तीयार अली, कुम्हार वाडा, पिपलपत्ता मन्दसौर, 18 वर्ष, गाने सुनना, दोस्ती करना ।

रंजीत जायसा क्रिकेट
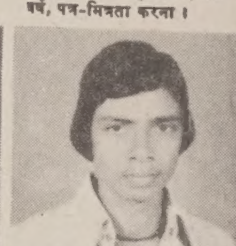
संजय सक्सेना, 5166/9, बसंत रोड, पहाड़गंज, नई दिल्ली, 21 वर्ष, फोटोग्राफी करना ।

अजय भानखेड़े, न्यू रेलवे कालोनी, क्वा. नं. आर बी आई 78/एफ, 15 वर्ष, पत्र-मित्रता ।

कुमार गणेश, वावरगंज, वागेश्वरी रोड, गया, (बिहार), 12 वर्ष, चित्रकला बनाना ।

पारस निहालानी 'आनी' आशीर्वाद भवन ए-1, बलभ नगर, कोटा, 18 वर्ष, बैड मिन्टन ।
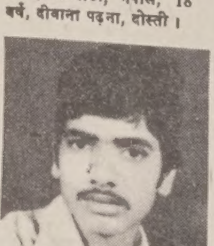
विजय कुमार अग्रवाल, महावीर प्रसाद अग्रवाल, अग्रवाल ब्रदर्स एण्ड को. दुमदुमा (असम) ।

राजीव रोहीत कुदुदंड, बिलासपुर, 20 वर्ष, पत्र-मित्रता करना दीवाना पढ़ना ।

डी. के फरीदा पत्र-मि

शैलेश कुमार भाटिया, प्रिति-विला पोस्टल कालोनी जलगांव, 19 वर्ष, डाक टिकट संग्रह ।
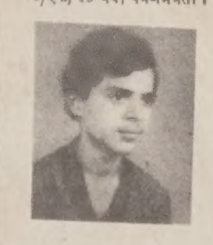
राजेश सेठी, सेठी सुपर स्टोर, भगतसिंह चौक, सिरसा, 14 वर्ष, डिस्को डांस करना ।
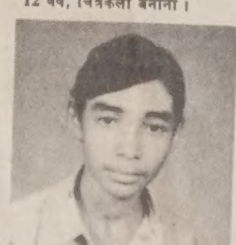
जफर खान 'जफर' सरदार पटेल मार्ग, बड़वानी, (प. निमाड़), 18 वर्ष, पत्र-मैत्री ।
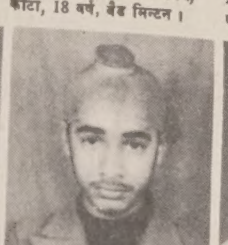
गुरमीत सिंह, खालसा मोटर स्टोर, जी. टी. रोड भटिण्डा, 16 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।
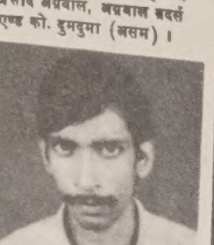
आलोक कुमार शर्मा, केवल गेट, बच्छौसी, मुरादाबाद, 22 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये । मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा । फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें.

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें ।
नाम ———————
पता ———————

नई दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता

हम सब बाधाएं पार कर सकते हैं
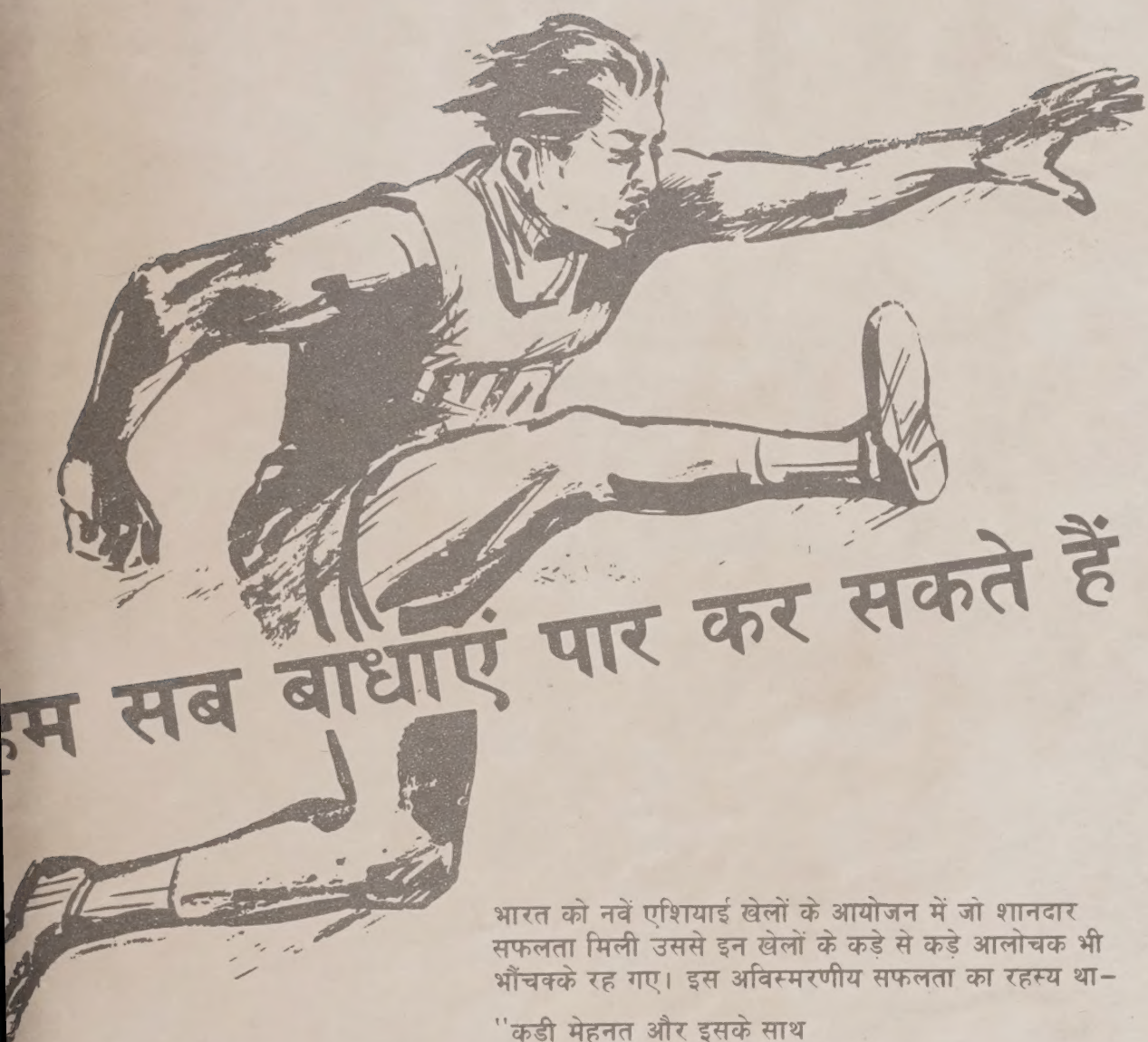
भारत को नवें एशियाई खेलों के आयोजन में जो शानदार सफलता मिली उससे इन खेलों के कड़े से कड़े आलोचक भी भौंचक्के रह गए। इस अविस्मरणीय सफलता का रहस्य था–

''कड़ी मेहनत और इसके साथ अनुशासन तथा अपने उद्देश्य की सही और साफ जानकारी'' जैसा कि प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने नये बीस सूत्री कार्यक्रम के श्रीगणेश के समय राष्ट्र का आवाहन करते हुए कहा था।

इसी भावना से काम करते हुए हमने देखते ही देखते भव्य स्टेडियम तैयार कर लिए और एशियाई खेलों का आयोजन अत्यन्त सुचारु ढंग से और कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया। जिस तरह हमने एशियाई खेलों को सफल बनाया, उसी तरह हम अपनी पंचवर्षीय योजना और नये बीस सूत्री कार्यक्रम को भी सफल बना सकते हैं।

आइए हम सब मिल कर एक सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण में जुट जाएं

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82